युगधर्म-पर्यावरण संरक्षण

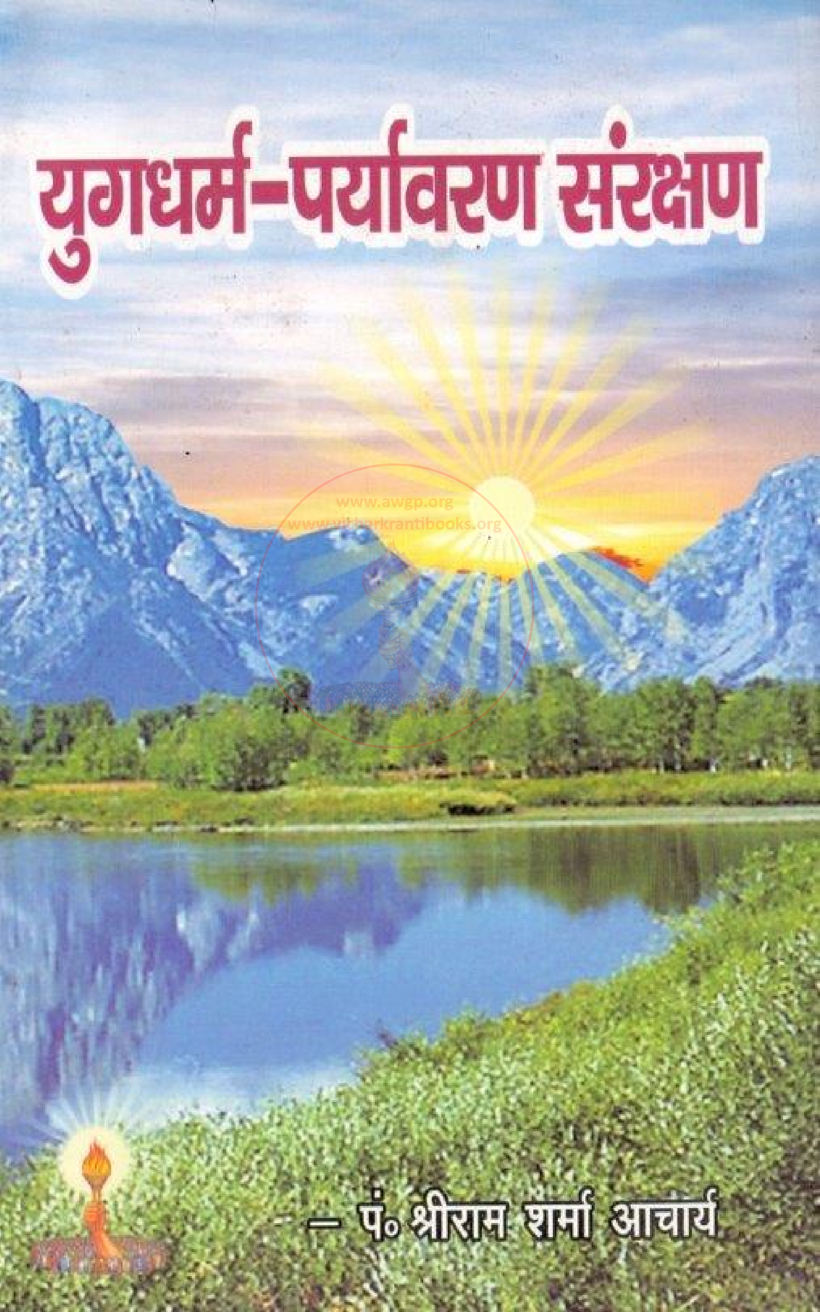

— पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

युगधर्म—पर्यावरण संरक्षण

लेखक :

वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

फैक्स नं०- २५३०२००

२००९

मूल्य : ३६-00 रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राक्कथन

पर्यावरण का संरक्षण मनुष्यजाति के लिए एक युगधर्म के समान है। जैसे जैसे—इस विधा पर गहन अनुसंधान होता चला जा रहा है, सभी इस निष्कर्ष पर पहुँच रहे हैं कि पर्यावरण मात्र स्थूल प्रकृति तक सीमित नहीं है। "डीप इकॉलाजी" के प्रवर्त्तकों ने अब ऐसी धारणाएँ व्यक्त की हैं व सटीक वैज्ञानिक प्रतिपादन प्रस्तुत किए हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि यह प्रकृति समग्र इकोसिस्टम के रूप में एक विराट् हृदय के समान धड़कती भी है—श्वास भी लेती है। समष्टि में व्यष्टि रूपी घटक की तरह हम भी उसके अंग हैं। यदि चैतन्यता के स्तर पर यह गहरा चिंतन किया जाए तो प्रकृति को पहुँचाई गई थोड़ी भी क्षति हमें—हमारे भविष्य की पीढ़ी के अंग-प्रत्यंगों को पहुँचाई गई क्षति है। सुप्रसिद्ध पुस्तक "वेब ऑफ लाइफ" में फिट्जॉफ काप्रा जैसे नोबुल पुरस्कार प्राप्त भौतिकविद् ने बड़ा विस्तृत वर्णन कर, मानवीय हृदय को—भाव संवेदनाओं को प्रकृति-पर्यावरण के साथ जोड़ उनका अविच्छिन्न संबंध स्थापित किया है।

परमपूज्य गुरुदेव **"माताभूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"** के वेदसूक्त को परिभाषित करते हुए हर मानव के लिए पर्यावरण संरक्षण—वृक्षारोपण को एक परमपुनीत पुण्य बताते थे। आज की विभीषिका का कारण ही पूज्यवर ने वृक्षों की कटाई से लेकर—भू, जल, वायु, ध्वनि तथा हर क्षेत्र में हुए प्रदूषण को बताया है, जो कि आज के वैज्ञानिक प्रगति वाले युग द्वारा मानवजाति को विरासत में मिला अभिशाप है। इस पुस्तिका में परमपूज्य गुरुदेव के पर्यावरण के विषय में समय-समय पर व्यक्त विचारों को क्रमबद्ध कर जनचेतना को जगाने का एक तुच्छ प्रयास किया गया है। यदि इससे हर व्यक्ति की जड़ता, चेतनता में बदल सके एवं एक उपासना-आराधना कृत्य के रूप में हरीतिमा का कवच पुनः धरती पर स्थापित होने का पौरुष जाग पड़े—एक आंदोलन गतिशील हो सके, तो यह प्रयास सफल माना जाएगा। पर्यावरण संबंधी पुस्तकमाला का युगसंधि के अंतिम वर्षों की वेला में प्रकाशित यह प्रथम पुष्प जन-जन को समर्पित है। **—ब्रह्मवर्चस**

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विषय-सूची

अध्याय **पृष्ठ संख्या**

१. प्रदूषण का युग एवं पर्यावरण संवर्द्धन की अनिवार्यता ५
(क) प्रकृति का उपभोग नहीं उपासना करें १६
(ख) प्राकृतिक प्रकोपों का कारण और निवारण २३
(ग) हम बिच्छू की तरह अपनी मातृसत्ता को समाप्त न करें ३०
(घ) पर्यावरण संरक्षण—हम सबका कर्तव्य ३३
२. औद्योगीकरण की समस्या का समाधान ३६
(क) जहरीले साँप रूपी औद्योगीकरण को हटाना ही होगा ४०
(ख) ऐसी धरती की कल्पना तो कीजिए ! ४३
३. मृदा प्रदूषण ! कैसे हो समाधान ? ४६
(क) प्रकृति के साथ विवेकसम्मत व्यवहार करें ४७
(ख) हिमालय से छेड़छाड़ बंद हो ५१
४. पर्यावरण अनुकूलन और गाय ५६
५. कचरा और पर्यावरण ५६
(क) कचरे की समस्या और उसका समाधान ६०
(ख) कचरा बन सकता है—वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत ६२
६. ऊर्जा और पर्यावरण ६५
(क) भूगर्भीय प्राकृतिक ऊर्जा स्रोत ६६
(ख) हवा से ऊर्जा ६७
(ग) ऊर्जा का एक स्रोत—जल ६७
(घ) सौर ऊर्जा ६८
(ङ) पशुधन से ऊर्जा की प्राप्ति ६६
(च) सौर ऊर्जा—कुछ तथ्य ७१
(छ) ऊर्जा संरक्षण—समय की माँग ७२
(ज) ऊर्जा खपत कैसे घटाएँ ७२

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

७. जनसंख्या वृद्धि और पर्यावरण ७५
(क) प्राकृतिक अनुशासन और प्रजनन की क्षमता ७६
(ख) प्रकृति की क्रूर कठोरता से सावधान ८०
(ग) जनसंख्या निरोध की निर्दय किंतु प्राकृतिक प्राविधि ८२
८. वृक्ष—वनस्पति और पर्यावरण ८५
(क) वृक्ष—वनस्पति के प्रति श्रद्धा अक्षुण्ण रहे ८७
९. हमारे जीवन में वनों का महत्त्व ९१
(क) फूल लगाइए, फल उगाइए ९७
(ख) प्रदूषण निवारण और तुलसी आरोपण १०३
१०. जल प्रदूषण—कारण और निवारण १०६
११. जीवन का पर्याय—जल ११०
(क) शुद्ध जल की महत्ता—प्राप्ति के साधन ११२
१२. स्वास्थ्य समस्या और पर्यावरण ११५
(क) अपने जीवन में प्रकृति को प्रवेश होने दीजिए ११६
(ख) सूर्य किरणों में जीवन तत्त्व १२०
(ग) असंतुलित पर्यावरण में वातानुकूलित जीवन १२२
(घ) यज्ञीय वातावरण का स्वास्थ्य पर प्रभाव १२७
१३. यज्ञ और पर्यावरण १३३
(क) प्रदूषण निवारण का विशुद्ध वैज्ञानिक प्रयोग १३३
(ख) यज्ञ ऊर्जा के बहुआयामी लाभ १३७
(ग) धुआँ—एक मारता है, एक जिंदगी देता है १४५
(घ) अग्निहोत्र थेरेपी—अमेरिका में १५१
१४. ध्वनि प्रदूषण और उसका समाधान १५३
(क) कोलाहल से दूर—शांत एकांत की ओर १५४
(ख) शब्द शक्ति में निहित अपरिमित संभावनाएँ १५८
१५. अध्यात्म उपचार द्वारा पर्यावरण परिशोधन १६५
(क) पर्यावरण संरक्षण में आस्तिकता का योगदान १६६
(ख) पर्यावरण के सूक्ष्म जगत को साधक बदलेंगे १७५
(ग) कठिन समस्याओं के सरल समाधान १८१
१६. पर्यावरण संतुलन एवं शांतिकुंज की भूमिका १८५

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रदूषण का युग एवं पर्यावरण संवर्द्धन की अनिवार्यता

पर्यावरण प्रदूषण के जलते सवाल की आँच से आज हर कोई बुरी तरह झुलस रहा है। जब इस सर्वनाशी समस्या ने इनसानी अस्तित्व पर ही सवालिया निशान लगा दिया हो, तब भला कौन इससे स्वयं को अलग रख सकता है ? साँस लेने की हवा, पीने का पानी, स्वयं का आवास, आस-पास का वातावरण पूरी तरह प्रदूषित हो चुका है। कभी का सुखी, शांत व समृद्ध समाज इसके दुष्प्रभावों से, रोग-शोक से जर्जरित है। सब ओर प्रदूषण रूपी भयावह पिशाचिनी तांडव नर्तन करती नजर आ रही है। ध्वनि प्रदूषण ने तो हर किसी की रातों की नींद हराम कर दी है। प्रदूषित परिस्थितियों के भयावह घटाटोप में भविष्य का उजाला कहीं से नजर नहीं आ रहा। दुनिया को वर्तमान तबाही से बचाना तभी संभव है, जब प्रदूषण के विरोध में जबरदस्त मुहिम छेड़ी जाए और यह मात्र नारों, स्टीकरों, एवं सम्मेलनों तक सीमित न रहे बल्कि यह पुकार हर जन के अंतःकरण से निकले और नैष्ठिक कर्मठता बनकर दिखाई पड़े।

आज हर आदमी साफ हवा में साँस लेने के लिए तरस रहा है। वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा लगातार बढ़ती जा रही है। एक बिजलीघर से ५० टन सल्फर डाइऑक्साइड और उससे भी अधिक कालिख वातावरण में फैल जाती है। अपने पूरे देश में ऐसे ७५ से भी ज्यादा ताप बिजलीघर हैं। इसी तरह रासायनिक खाद के बड़े-बड़े कारखानों से अत्यधिक प्रदूषित तत्त्व उत्सर्जित होते हैं, जिनमें अमोनिया, हाइड्रोकार्बन आदि प्रमुख हैं। वाहनों से निकलने वाले धुएँ में कार्बन मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन व लेड के ऑक्साइड, हाइड्रोकार्बन, अल्डीहाइड आदि होते हैं, जो वायुमंडल को प्रदूषित करते हैं। दुनिया भर में इन दिनों ५० करोड़ वाहनों का उपयोग किया जाता है। एक सर्वेक्षण के मुताबिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर्यावरण नियंत्रण के सभी नियमों के बावजूद विकसित देशों में १५० लाख टन कार्बन मोनोऑक्साइड, १५ लाख टन हाईड्रोकार्बन, १० लाख टन नाइट्रोजन ऑक्साइड प्रतिवर्ष वायुमंडल में पहुँचते हैं। इसके अलावा ईंधन के जलने से कार्बन मोनोऑक्साइड की जो मात्रा वायुमंडल में आती है, वह अरबों टन प्रतिवर्ष है। इस क्रम में संसार में ७० फीसदी प्रदूषण विकसित देशों में हो रहा है।

प्रदूषण के इस दौर में अपना देश भी कुछ पीछे नहीं है। एक अध्ययन के अनुसार विश्व के ४१ प्रदूषित शहरों में दिल्ली का स्थान चौथा है। केंद्रीय सड़क—अनुसंधान संस्थान की रिपोर्ट के मुताबिक दिल्ली में वाहनों की संख्या गत बीस वर्षों में दस गुने से भी ज्यादा बढ़ गई है। वर्तमान समय में यहाँ २५ लाख वाहन हैं। दिल्ली में मोटर वाहनों, कारखानों और अन्य स्रोतों से रोजाना लगभग २५०० टन प्रदूषित पदार्थ निकलते हैं। यहाँ पर कार्बन मोनोऑक्साइड का गाढ़ापन ३५ पी० पी० एम० है, जबकि विषाक्तता के लिए २५ पी० पी० एम० ही काफी है और स्वीकृत सीमा तो सिर्फ ६ पी० पी० एम० की ही है। यहाँ रहने वाला एक व्यक्ति हर दिन साँस लेने के दौरान लगभग एक पैकेट सिगरेट पीने के बराबर प्रदूषित वायु का सेवन कर चुका होता है। मुंबई, अहमदाबाद, नागपुर जैसे शहरों में वार्षिक प्रदूषण की दर तीन गुना ज्यादा है, जबकि दिल्ली, कलकत्ता और कानपुर में प्रदूषण की वार्षिक औसत दर अंतर्राष्ट्रीय मानक की तुलना में पाँच गुना अधिक है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार वायु प्रदूषण इसी प्रकार जारी रहा, तो इक्कीसवीं सदी के आने तक विश्व में कम—से—कम ९,७५,००० व्यक्तियों के लिए आपातकालीन कक्ष की जरूरत पड़ सकती है। ८.५ करोड़ लोगों की दैनिक गतिविधियाँ पूरी तरह ध्वस्त हो जाएँगी। ७.२ करोड़ लोगों में श्वसन संबंधी बीमारियों के लक्षण प्रकट होंगे, लगभग ३० लाख बच्चे श्वसन रोग से पीड़ित नजर आएँगे, ९० लाख लोग अस्वस्थ और २.४ करोड़ लोग फेफड़े

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संबंधी रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। अभी ही यह स्थिति है कि दिल्ली में प्रदूषण के कारण हर तीसरे परिवार के एक सदस्य के सामने कैंसर का आसन्न संकट मँडरा रहा है। यहाँ का हर छठा आदमी टी० बी० अथवा दमे का रोगी होने की स्थिति में है।

नाइट्रोजन ऑक्साइड और सल्फर डाइऑक्साइड गैसों के कारण संसार के अनेक भागों में तेजाब वर्षा हो रही है। ये आपस में मिलकर हाइड्रोकार्बनों के साथ धूप में ओजोन पर्त को हानि पहुँचाते हैं। यह ओजोन मंडल पृथ्वी के धरातल से तकरीबन १६ से ४० किलोमीटर ऊँचे आकाश में मौजूद है और इसका काम सूर्य से आने वाली खतरनाक पराबैंगनी विकिरणों को पृथ्वी की सतह तक आने से रोकना है। इस ओजोन मंडल को सबसे अधिक नुकसान औद्योगिक क्षेत्र से उत्पन्न होने वाली क्लोरीन गैस के कारण होता है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि यदि प्रदूषण की दर इसी प्रकार बनी रही, तो अगले दो सालों में अपनी धरती में सूर्य की पराबैंगनी विकिरण का दुष्प्रभाव ८ से १५ प्रतिशत तक बढ़ सकता है। ह्रास की यह दर उत्तरी और दक्षिणी मध्य अक्षांश में लगभग पाँच प्रतिशत है। इससे पृथ्वी के तापमान में बढ़ोत्तरी होती है।

इन्हीं दुष्प्रभावों की वजह से वर्ष १९९६ में पृथ्वी शीतयुग के बाद सबसे अधिक गर्म रही। पिछले दस हजार साल में पृथ्वी का ताप ५० डिग्री से लेकर ६० डिग्री सेल्शियस तक बढ़ चुका है। इसी वजह से इस दौरान समुद्र का जल १०० मीटर ऊँचा हो गया है। इन परिस्थितियों का विश्लेषण करते हुए वैज्ञानिकों ने नीदरलैंड और बंगलादेश के एक बड़े हिस्से के निकट भविष्य में समुद्र में समा जाने की भविष्यवाणी की है। नासा के गोडार्ड इन्स्टीट्यूट ऑफ स्पेस स्टडीज तथा ब्रिटेन के हैडले सेंटर फार क्लाइमेटिक रिसर्च के आँकड़ों के अनुसार पिछले साल औसतन ताप १५.३३ डिग्री सेल्शियस था। अनुमान है कि इसमें अगले सौ सालों में ३० डिग्री से ५० डिग्री सेल्शियस तक की बढ़ोत्तरी हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकती है। भारतीय भू-भाग का तापमान .४० डिग्री सेल्शियस तक बढ़ चुका है। वैज्ञानिकों की राय में .२० डिग्री सेल्शियस की ताप वृद्धि भी अनेक महत्वपूर्ण पारिस्थितिक प्रणालियों को तबाह कर देने के लिए पर्याप्त है। इससे सारे जीव बैक्टीरिया से लेकर इनसान तक प्रभावित होते हैं। वर्ल्ड वाच संस्थान के अध्यक्ष लेस्टर ब्राउन के अनुसार धरती के तापमान में हो रही बढ़ोत्तरी के कारण यूरोप, अमेरिका, रूस और उक्रेन में फसलों को नुकसान पहुँचाने वाली ताप लहर चलने लगी है, जिसके कारण खाद्यान्न उपज में काफी गिरावट आई है।

पहाड़ों पर बिगड़ते पर्यावरण संतुलन ने वायुमंडल पर और भी बुरा असर डाला है। हाल ही में पहाड़ी वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा में वृद्धि हुई है। पेड़ कट जाने से वर्षा कम होने लगी है तथा जलवायु भी अनिश्चित व अनियंत्रित हो गई है। प्राचीनकाल से ओषधीय जड़ी-बूटियों की खान रहे हिमालय के गढ़वाल क्षेत्र में २०० से ज्यादा महत्त्वपूर्ण पादप प्रजातियाँ लुप्त होने के कगार पर हैं। इनमें से अधिकांश प्रजातियाँ ऐसी हैं, जो दुनिया भर में केवल यहीं पाई जाती हैं। भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण विभाग कलकत्ता की रेड डाटा बुक के अनुसार हिमालयी क्षेत्र में २१४ महत्त्वपूर्ण प्रजातियाँ संकटग्रस्त हैं। इन संकटग्रस्त प्रजातियों के रूप में चिह्नित पादप प्रजातियों की संख्या में लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है। पंचमढ़ी वन-क्षेत्र में करीब ८०० दुर्लभ पौधों की प्रजाति विलुप्ति के कगार पर हैं। इसी तरह पौधों की ४६ प्रजातियाँ मध्यप्रदेश के बस्तर जिले के वनों से समाप्त हो गई हैं।

वनों की कटाई के कारण जमीन के अंदर का जलस्तर तेजी से घट रहा है। इसके परिणामस्वरूप उत्तर-पश्चिम भारत में लगभग २,५०,००० हेक्टेयर भूमि में जल की समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं और अगले ३० से ५० वर्षों में ३ लाख हेक्टेयर भूमि पानी के अभाव में ऊसर हो जाने की समस्या है। एक अध्ययन के अनुसार अपने देश में वर्ष भर में वर्षा से लगभग ४० करोड़

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हेक्टेयर मीटर जल प्राप्त होता है। इसकी भूमिगत जलसंपदा अनुमानतः ३०० मीटर की गहराई में ३७० करोड़ हेक्टेयर है, जो यहाँ की सालाना बारिश से लगभग १० गुना अधिक है। भूगर्भवेत्ता जी० सी० चौधरी के सर्वेक्षण के मुताबिक पता चला है कि प्रदूषण की वजह से उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर, बलिया, जौनपुर, गाजीपुर, बिहार के भोजपुर आदि क्षेत्र में भूमिगत जल में नाइट्रोजन, फॉस्फेट, पोटैशियम के अलावा सीसा, मैंगनीज, जस्ता, निकिल जैसे रेडियोधर्मी पदार्थ व जहरीले तत्त्व निर्धारित मान्य स्तर से काफी ज्यादा मौजूद हैं। यह स्थिति अत्यंत विस्फोटक एवं खतरनाक है।

पुरातनकाल में पर्यावरण की दृष्टि से अपने देश में ही नहीं, विदेशों में भी बड़े-बड़े नगरों को नदियों के किनारे बसाया गया था। आधुनिक समय में औद्योगिक संस्थाओं, कारखानों, मिलों द्वारा बाहए जाने वाले रसायनों, कूड़ा तथा प्रदूषण निकासी वाले पानी से नदियों का पानी इस कदर प्रदूषित हो चुका है कि नदियाँ पर्यावरण को स्वच्छ करने के बजाय भयंकर बीमारियों को जन्म दे रही हैं। यही नहीं कूड़े की अधिकता की वजह से ये नालों में बदलती जा रही है। देश के लगभग ३११६ शहर और कस्बों में से आठ में पूरे और २०१ में आंशिक मल-जल उपचार संयंत्र हैं। इन सभी शहरों में अनुपचारित मल-जल जिसकी मात्रा प्रतिदिन तकरीबन १२०० करोड़ लीटर से भी ज्यादा होती है, नदियों के जल को प्रदूषित कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश में लगभग १६० औद्योगिक इकाइयाँ अपना करोड़ों टन कचरा हर रोज नदियों में गिरा रही हैं। पूरे देश की स्थिति तो और भी चिंताजनक है। गंगा सहित देश की प्रमुख १७ जीवनदायिनी नदियों का जल औद्योगिक कचरे एवं गंदे जल के विसर्जन से इस कदर प्रदूषित हो चुका है कि इनका पानी नहाने के काबिल भी नहीं रह गया है।

देवनदी गंगा गंगोत्री से समुद्र तक की अपनी २५०० कि० मी० की यात्रा में कुल अस्सी छोटे-बड़े शहरों को अपने आँचल में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समेटे हुए है तथा लगभग २५ करोड़ व्यक्तियों के जीवन और स्वास्थ्य को यह प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। इस पवित्र नदी में हर साल दस हजार मृत मनुष्यों के शव, साठ हजार मृत जानवरों के शरीर प्रवाहित कर दिए जाते हैं। अस्सी शहरों का करीब ५०० करोड़ लीटर प्रदूषित मल-जल प्रतिदिन पवित्र गंगा में प्रवाहित कर दिया जाता है। गंगा की सहायक नदी गोमती का हाल तो और भी खराब है। इस नदी में सिर्फ लखनऊ से हर रोज १८०० टन घरेलू कचरा तथा ३३ करोड़ लीटर प्रदूषित जल प्रवाहित हो रहा है। इसी तरह यमुना नदी में दिल्ली से १९० करोड़ लीटर प्रदूषित जल हर रोज प्रवाहित किया जाता है। यही हाल बिहार की दामोदर नदी का है, जो अब तक प्रदूषण के खतरनाक स्तर को पार कर चुकी है। गुजरात की प्रसिद्ध नदी साबरमती अहमदाबाद के ७४ करोड़ लीटर प्रदूषित जल का भार ढोए जा रही है।

जल प्रदूषण की विषाक्तता की वजह से अपने देश को दो सौ अरब रुपए का नुकसान हर साल झेलना पड़ता है। इसी की वजह से पेचिश, यकृत संबंधी रोग एवं हैजा आदि के कारण अगणित आदमी अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं। सन् १९८७ में जितनी भी मौतें हुई हैं, उनमें से ६० प्रतिशत का कारण जल प्रदूषण रहा है। प्रदूषण के कारण भूमिगत जल में मौजूद नाइट्रेट के एन-नाइट्रोसो कंपाउंड के रूप में बदलने की आशंका उत्पन्न हो गई है। इससे पेट का कैंसर होने की संभावना रहती है।

प्रदूषण की महामारी को बढ़ाने में कीटनाशकों का भारी योगदान है। वर्तमान समय में हमारे देश में ६४ कारखाने कृषि रसायनों का उत्पादन करते हैं। ६वीं पंचवर्षीय योजना में ८५ हजार टन कृषि रसायनों की खपत का अनुमान है। हाल ही में किए गए अनुसंधान से ज्ञात हुआ है कि प्रतिवर्ष विश्वभर में कीटनाशकों के दुष्प्रभाव के कारण कम से कम २०,००० व्यक्ति असमय ही मौत का ग्रास बनते हैं तथा २० लाख व्यक्ति हर साल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जानलेवा रोगों का शिकार होते हैं। कीटनाशकों के चिरकालीन विषाक्तीकरण के कारण असमय गर्भपात होना, बच्चों में शारीरिक अपंगता, असमय जन्म, मानसिक विकार, स्मरणशक्ति का ह्रास, प्रतिरोधक क्षमता में कमी, गुर्दे तथा यकृत की बीमारियाँ, चर्म रोग तथा कैंसर जैसी बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं। इसकी वजह से खेतिहर मजदूरों में आँखों का विकार, थकावट तथा नपुंसकता आदि रोग बढ़ रहे हैं।

मौजूदा औद्योगिक क्रांति और आबादी की बढ़ोत्तरी ने अगणित बीमारियों के जनक 'शोर' को उपजाया है। ७५ डेसीबल से अधिक का शोर हानिकारक माना जाता है। वैज्ञानिकों का दावा है कि ८५ डेसीबल से अधिक की ध्वनि लगातार सुनने से बहरापन भी आ सकता है। वहीं ६० डेसीबल शोर के कारण एकाग्रता व मानसिक कुशलता में कमी आ जाती है। १२० डेसीबल से ऊपर का शोर गर्भवती स्त्रियों और पशुओं के भ्रूण को नुकसान पहुँचा सकता है। १५५ डेसीबल से अधिक शोर से मानव त्वचा जलने लगती है और १८० पर मृत्यु तक हो सकती है। शोर से रक्त में कोलेस्ट्राल और कार्टिजोन का स्तर बढ़ जाता है, जिससे हाइपरटेंशन होता है। यह आगे चलकर हृदय रोग व मस्तिष्क रोग सरीखी घातक बीमारियों को जन्म देता है। आस्ट्रिया के डॉ० ग्रिफिथ का दावा है कि शोर से दिमाग के तंतु कमजोर हो जाते हैं और आदमी असमय ही बूढ़ा हो जाता है।

शोर के कारण श्वसन गति, रक्तचाप, नाड़ी गति में उतार-चढ़ाव, पाचनतंत्र की गतिशीलता में कमी आदि दुष्प्रभाव भी देखे गए हैं। एक अनुसंधान के अनुसार ध्वनि प्रदूषण के कारण मुर्गियों ने अंडे देना बंद कर दिया और मवेशियों के दूध में कमी आ गई। अनिद्रा और कुंठा जैसे विकारों का कारण भी शोर ही है। इससे पाचन विकार, सिर दर्द, झुँझलाहट आदि होना सामान्य बात है। इसी कारण विज्ञानवेत्ताओं ने ध्वनि प्रदूषण को मानवता के लिए स्लो पॉइजन (धीमा जहर) की संज्ञा दी है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक अध्ययन के अनुसार भारी ट्रेफिक में ६० डी० बी०, रेलगाड़ी से १०० कार के हार्न से १०० से ११०, हवाई जहाज से १४० से १७० तथा मोटर साइकिल से ६० डी० बी० ध्वनि तरंगें पैदा होती हैं। सुपर सोनिक जेट और कंकार्ड विमानों से उत्पन्न १५० डी० बी० से अधिक शोर के कारण ओजोन पट्टी को सर्वाधिक क्षति पहुँचती है। कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ० हरेला जॉन्सन का दावा है कि इन विमानों के कारण कुछ ही सालों तक यदि यही क्रम रहा, तो आधे से अधिक ओजोन पट्टी नष्ट हो जाएगी। इसे मानव शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली के बुरी तरह प्रभावित होने की संभावना है।

पर्यावरण का हमारे स्वास्थ्य से सीधा संबंध है। यहाँ तक कि प्रदूषण से अजन्मा बच्चा तक प्रभावित होता है। गर्भस्थ शिशु बाह्य पर्यावरण के प्रति संवेदनशील होता है। कीटनाशकों, घातक रसायनों व अन्य विषैले पदार्थों के मिश्रणों में गर्भस्थ शिशुओं के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को तहस-नहस करने की पूर्ण क्षमता है। संयुक्त राष्ट्र के एक सर्वेक्षणानुसार वर्तमान में कोई गर्भ सुरक्षित नहीं है। आधुनिक जीवनशैली व औद्योगिक क्रियाकलापों के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाले दूषित तत्त्व माँ के गर्भ में पल रहे भ्रूण पर कहर बरसा रहे हैं। माँ के गर्भ में साँसे ले रहा गर्भस्थ शिशु प्रदूषित पर्यावरण के कारण खतरों के बीच पल रहा है।

नई दिल्ली के अपोलो अस्पताल की एक स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ० मधु राय के अनुसार कुछ प्रदूषित तत्त्वों का भार व रासायनिक संरचना गर्भस्थ शिशुओं के आहार से मिलती-जुलती है। परिणामस्वरूप ये तत्त्व प्लेसेंटा के द्वारा गर्भ में पहुँच जाते हैं। इनमें टेराटोजेन्स नामक रसायन भ्रूण की संरचना ही चौपट कर सकता है। जिसके प्रभाव से बच्चा मरा हुआ पैदा हो सकता है या जन्म के पश्चात् तुरंत मर जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अध्ययन के अनुसार स्पांटेनियस एबार्शन की दर १४ से ३० प्रतिशत तक है। सन् १९७५-७७ में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किए गए अध्ययनों के मुताबिक यह स्थिति प्रमुख रूप से पर्यावरणीय कारणों से उत्पन्न जीन संबंधी गड़बड़ी से होता है। नई दिल्ली के गुरु तेगबहादुर अस्पताल के बालरोग विशेषज्ञ डॉ० एम० ए० फरीदी के मतानुसार तीव्र औद्योगीकरण, असुरक्षित वातावरण, इलेक्ट्रो- मैग्नेटिक तरंगों के कारण पर्यावरणीय प्रदूषण बढ़ा है तथा घर की चहारदीवारी के अंदर वायु की गुणवत्ता घटी है। इन सबसे गर्भस्थ शिशु बुरी तरह प्रभावित होता है। विकासशील एवं अविकसित राष्ट्रों की इस संबंध में स्थिति कुछ ज्यादा ही खराब है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट बताती है कि प्रदूषित वातावरण में उपस्थित रहने वाले तत्त्व लेड व कैडमियम क्रमशः पुरुषों की प्रजनन क्षमता एवं प्लेसेंटा पर बुरा असर डालते हैं। १९५६ में जापान में मिथाइल मरकरी प्रदूषण ने महामारी का रूप धारण कर लिया था, जिसकी वजह से १० वर्षों तक इस क्षेत्र में ६ प्रतिशत बच्चे सेरीब्रल पाल्सी के शिकार होते रहे। इसी तरह की घटना १९५६ व ६० के बीच ईराक में हुई। आर्गेनोक्लोरीन पेस्टीसाइड छठवें दशक में पश्चिम में प्रतिबंधित कर दिए गए थे, लेकिन दक्षिण राष्ट्रों में इनका प्रचलन अभी भी है। डी० डी० टी०, डी० बी० सी० पी०, लिंडेन, डाइएल्ड्रिन व हेक्साक्लोरो प्रभावित टेरानोजोन्स हैं। पी० सी० बी० (पाली क्लोरीनेटेड बाइफेनिल) एक ऐसा रसायन है जो भ्रूण के विकास को अत्यंत प्रभावित करता है। गर्भस्थ महिलाओं पर कार्बन मोनोऑक्साइड एवं बेंजोपायरिन का प्रभाव अधिक देखा गया है। जो महिलाएँ ऐसे वातावरण में रहती हैं, वे १०० से अधिक सिगरेट से उत्पन्न धुएँ की मात्रा प्रतिदिन साँस के द्वारा अंदर लेती हैं।

कार्बन मोनोऑक्साइड भ्रूण को प्राणदायी ऑक्सीजन से वंचित करने का कार्य करता है। शुद्ध वायु में इसकी मात्रा ०.१ से ०.५ पी० पी० एम० होती है, लेकिन शहरों एवं औद्योगिक क्षेत्रों में यह मात्रा ५० पी० पी० एम० तक हो सकती है। यह कार्बन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मोनोऑक्साइड प्लेसेंटा में फैलकर भ्रूण के रक्तसंचार से जुड़ जाता है। रक्त में उपस्थित हीमोग्लोबिन में इसके बेधने की दर ऑक्सीजन से २०० गुना अधिक होती है। अगर भ्रूण में कार्बोक्सी हीमोग्लोबिन की मात्रा बढ़ती है, तो मस्तिष्क व हृदय बुरी तरह प्रभावित होते हैं। ऐसी स्थिति में भ्रूण गर्भ में हीं समाप्त हो सकता है। इसे मीकोनियम कहते हैं। मीकोनियम भ्रूण के मुँह या फेफड़ों में पहुँचकर बच्चे को मौत के मुँह में सुला देता है। सीसा एवं मैंगेनीज धातु भी कम हानि नहीं पहुँचाते।

थियोकोलबोर्न द्वारा रचित ग्रंथ 'अवर स्टोलेन फ्यूचर' में प्रदूषण से उत्पन्न होने वाली समस्याओं की विशद् विवेचना की है। उनका कहना है कि प्रदूषण की वजह से शुक्राणुओं की संख्या २.१ प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से कम हो रही है तथा इसकी गुणवत्ता का ह्रास हो रहा है। टेस्टीक्यूलर कैंसर की दर अप्रत्याशित रूप से बढ़ रही है। इंडोक्राइन व्यतिक्रम के कारण पुरुषों का स्त्रीकरण एवं स्त्रियों का पुरुषीकरण हो रहा है। इन्हें जेंडर वेंडर्स के नाम से जाना जाता है। ये रसायन मानव सेक्स हार्मोन की नकल करते तथा इन्हें प्रभावित करते हैं। नार्थ कैरोलिना विश्वविद्यालय के प्रोफेसर मार्सिया के मतानुसार लड़कियाँ समय से पूर्व यौवनावस्था को प्राप्त कर रही हैं। इसके लिए ओस्ट्रेजन नामक हार्मोन ज़िम्मेदार माना जाता है। चिकित्सा वैज्ञानिकों के अनुसार आज का ज्वलंत विषय पर्यावरण प्रदूषण से होने वाले ओस्ट्रेजन हार्मोन के व्यतिक्रम को रोकना है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् जो सैकड़ों रसायनों की खोज और इस्तेमाल हुआ है, उन्होंने जीवन को ही बुरी तरह से प्रदूषित कर दिया है। इनमें से सैकड़ों रसायन ओस्ट्रेजन की तरह हैं। पी० सी० बी० जैसे रसायनों की संरचना इससे काफी हद तक मिलती है। ये रसायन वर्तमान में हमारी जीवनशैली के अभिन्न अंग बन चुके हैं। साबुन, सौंदर्य प्रसाधन सामग्री, रंग-रोगन, प्लास्टिक, कीटनाशक व अन्य प्रयोग में आने वाले रसायनों में यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विद्यमान रहता है। दुनिया में डी० डी० टी० की सर्वाधिक मात्रा दिल्ली निवासियों की वसा में पाई जाती है। यही नहीं, माँ के दूध में पेस्टीसाइड्स की मात्रा भी सर्वाधिक भारत में ही पाई जाती है। ये प्रदूषणकारी तत्त्व जेनेटिक संरचना को भी परिवर्तित करने में समर्थ हैं।

प्रदूषण की इस विनाशकारी समस्या से जूझने एवं बचने के लिए विश्वभर में पर्यावरण संरक्षण व संवर्द्धन के अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यू० एन० ई० पी०) ने ५ जून १९९७ के दिन को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया। इसे 'पृथ्वी सम्मेलन धन पाँच' के रूप में जाना जाता है। सन् १९९२ में आयोजित रियो डी जेनेरो के पृथ्वी सम्मेलन की यह पाँचवीं वर्षगाँठ थी। इस पृथ्वी सम्मेलन में १९० से भी अधिक देशों के राष्ट्राध्यक्षों व शासनाध्यक्षों के साथ महान् पर्यावरणविद् उपस्थित हुए थे। सभी ने वर्तमान प्रदूषण पर चिंता व्यक्त करते हुए इसके विकास और संवर्द्धन को अपने युग के महत्त्वपूर्ण कार्य की संज्ञा दी। सम्मेलन में मनुष्य के विनाशकारी व्यवहार को ठीक करने तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए सैकड़ों अरब डालर आवंटित करने की एक कार्ययोजना पारित की। यू० एन० ई० पी० के निदेशक एलीजाबेथ डाइसबेल ने अपने संदेश में विश्वसमुदाय का आह्वान करते हुए कहा—"पर्यावरण की सुरक्षा विश्व की सुरक्षा है। अतः विश्व के हर नागरिक का कर्तव्य है कि वह इस ओर कटिबद्ध हो। विकासशील दुनिया के प्रमुख राजनीतिज्ञ एवं राष्ट्रकुल के पूर्वमहासचिव श्री दत्त रामफल ने वर्तमान पर्यावरण संकट को अति गंभीर बताते हुए स्पष्ट किया है कि पर्यावरण संरक्षण ही आज का युगधर्म है।"

पृथ्वी सम्मेलन धन पाँच में १९९७ में अमेरिकी उपराष्ट्रपति अलगोरे ने संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में कहा है कि जलवायु में परिवर्तन की चुनौती से निपटने के लिए अपने संकल्प में एकजुट रहना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ब्रिटिश प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर तथा नीदरलैंड के प्रधानमंत्री विमकाफ ने पर्यावरण संरक्षण को प्रथम मानवीय कर्तव्य का नाम दिया और अनेक योजनाएँ सुझाईं। अमेरिका में कौलोराडो की एक संस्था 'ग्लोबल रिस्पान्स' के अलग आहोशी ने कहा है कि पृथ्वी को बचाने के लिए हमें तीव्र तथा अनुरूप बदलाव करना चाहिए। 'ग्लोबल रिस्पान्स' ने विकसित औद्योगिक देशों के संगठन 'ग्रुप सात' और रूस•के शिखर बैठक के समय डेनवर में ही बहुराष्ट्रीय कंपनियों के क्रियाकलापों पर सुनवाई के लिए एक अंतरराष्ट्रीय पंचायत का आयोजन किया था। इसमें एशिया, अफ्रीका, दक्षिण और उत्तरी अमेरिका के संगठनों ने यूरोप, अमेरिका और जापान की बहुराष्ट्रीय कंपनियों को कड़ी चेतावनी दी, साथ ही पर्यावरण संरक्षण हेतु अनेक कार्य योजनाएँ बनाई, जिन पर क्रियान्वन भी हो रहा है।

यूरोपीय संघ के देश विश्व भर में ऐसे उपाय करने के पक्ष में हैं, जिससे कार्बन डाइऑक्साइड जैसी ग्रीन हाउस प्रभाव पैदा करने वाली गैसों के उत्सर्जन में २०१० तक १६६० के स्तर के मुकाबले १५ प्रतिशत की कमी आ जाए। ये गैसें वायुमंडल के तापमान को बढ़ाती हैं। रियो सम्मेलन में रियो कार्ययोजना 'यानि 'एजेंडा २१' को लागू करने पर सहमति जताई गई। इसके लिए ६०० अरब डालर का प्रस्ताव था। दुनिया में पर्यावरण सुरक्षा के लिए धन का मूल स्रोत वैश्वीय पर्यावरण व्यवस्था (G. E. F.) है। इस व्यवस्था में करीब २.८ अरब डालर की धनराशि ६ साल के लिए जमा की गई थी, जो जलवायु के परिवर्तन, जैवविविधता और जल के संरक्षण जैसे वैश्वीय मुद्दों संबंधी योजनाओं पर खर्च किया जाता है। २५ करोड़ डालर का एक दूसरा फंड ओजोन परत पर हुए मांट्रियल समझौते के लिए रखा गया है। पर्यावरण संरक्षण की समीक्षा और आकलन के लिए २३ से २६ जून तक न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा का विशेष अधिवेशन आयोजित किया गया था। वायुमंडल में गर्मी बढ़ने से रोकने के उपायों के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बारे में संधि हेतु क्योटो (जापान) सम्मेलन भी निकट भविष्य में तय हैं। इसके पूर्व स्वीडन में संयुक्त राष्ट्र के तत्त्वावधान में मानव और पर्यावरण रक्षा पर जून १९७२ में एक सम्मेलन हुआ था, जिसमें स्पष्ट चेतावनी दी गई कि पर्यावरण के विनाश से मानवजाति का विनाश अवश्यंभावी है।

इतने सारे सम्मेलनों, चेतावनियों एवं पर्यावरण सुरक्षा का विशालकाय तंत्र खड़ा करने के बावजूद प्रश्न यथावत् है, समस्या की विकरालता घटने के स्थान पर बढ़ी है, क्योंकि जनभावनाएँ जाग्रत् नहीं की गई। प्रकृति के साथ मनुष्य के भाव भरे संबंधों का मर्म नहीं समझाया गया। इसकी सारगर्भित व्याख्या नहीं की गई। आज की वर्तमान पीढ़ी इस बात से अनजान है कि प्रकृति से उसके कुछ वैसे ही भावनात्मक रिश्ते हैं, जैसे कि उसके अपने परिजनों एवं सगे-संबंधियों से। इस भावनात्मक सत्य का मर्मोद्घाटन विज्ञान के दायरे के बाहर की चीज है। संभवतः इसीलिए अपनी सारी तार्किकता एवं मेधा नियोजित करने के बावजूद इसे वैज्ञानिक हल नहीं कर पाए। मानव एवं प्रकृति के बीच उलझी यह गुत्थी वैज्ञानिक होने की बजाय सांस्कृतिक अधिक है। इसका सुलझाव और समाधान भी सांस्कृतिक प्रयत्नों से ही संभव है।

भारत मानवीय भावनाओं का उद्गम बिंदु, मानवीय संस्कृति का जन्मदाता एवं मानव-प्रकृति एवं परमेश्वर के पारस्परिक भावभरे संबंधों का चिरकाल से दार्शनिक व्याख्याता रहा है। यहीं के महर्षियों के मुख से कभी ओजस्वी गूँज उठी थी—

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोऽरण्यं ते पृथिवि स्योनमस्तु।
बभ्रुं कृष्णां रोहिणीं विश्वरूपां ध्रुवां भूमिं पृथिवीमिन्द्रगुप्ताम्।
अजीतोऽहतो अक्षतोऽध्यष्ठां पृथिवीमहम्। —अथर्व० १२, १-११

आज जबकि पर्यावरण संकट के कारण धरती पर अक्षत खड़ा रहना मुश्किल हो गया है, ऐसे क्षणों में सांस्कृतिक क्रांति के जन्मदाता वेदमूर्ति-तपोनिष्ठ परमपूज्य गुरुदेव की पराप्रेरणा से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संचालित शांतिकुंज ने पर्यावरण की सांस्कृतिक गुत्थी को सुलझाने का संकल्प लिया है। इस संकल्प में पुरातन ऋषिगणों की वाणी ध्वनित होते अनुभव की जा सकती है। श्रावणी महापर्व पर शांतिकुंज में संपन्न हुए पर्यावरण संवर्ग समारोह में यह निश्चित किया गया कि पर्यावरण संरक्षण पाँच स्तरों पर संभव होगा।

१—मानव—प्रकृति एवं परमेश्वर के संबंध, २—मानव और अन्य जीव—जंतुओं का संबंध, ३—मानव और प्रकृति के विविध रूपों का संबंध, ४—मनुष्यों के आपसी संबंध, ५—वर्तमान पीढ़ी का भविष्य की पीढ़ी से संबंध। जीव—जंतुओं पर एक समग्र सोच न बनने से छोटे—छोटे निरीह एवं मूक प्राणी उपेक्षित रह जाते हैं और संरक्षण एकांगी रहता है। पर यह तभी संभव है, जब हम स्वयं में एवं प्रकृति के समस्त घटकों में परमेश्वर की पराचेतना अनुभव करें। तभी सभी जंतुओं एवं वनस्पतियों के प्रति संवेदना का भावविकास संभव हो सकेगा। प्रकृति के विविध रूपों के प्रति मनुष्य का संबंध इसी समझ पर आधारित होना चाहिए कि इनसे हमें केवल अपने उपयोग की वस्तुएँ ही नहीं लेनी हैं, बल्कि इसके संरक्षण की जिम्मेदारी भी हमारी है। जमीन, जंगल, नदी और भूजल के प्रति आक्रामक रवैया छोड़कर हमें इनके सहज विकास पर ध्यान देना होगा।

कृत्रिम वृक्षारोपण के साथ प्राकृतिक वन संरक्षण भी जरूरी है, क्योंकि जलवायु संतुलन, जल एवं भू—संरक्षण तथा जैव विविधता की वास्तविक सुरक्षा प्राकृतिक वनों में ही संभव है। यह भी ध्यान दिया जाना जरूरी है कि मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण से प्रकृति भी प्रभावित होती है। शोषक अपनी विलासिता के लिए आदतन प्रकृति को विनष्ट करता है। मनुष्यों में पारस्परिक सौहार्द एवं मर्यादा पर्यावरण संरक्षण के लिए अतीव आवश्यक है। शोषण एवं विषमता जितनी कम होगी—पर्यावरण उतना ही समृद्ध होगा। पर्यावरण की समृद्धि ही संसार की समृद्धि है। अपनी भावी पीढ़ी को जीवन की संपन्नता तभी सौंपी जा सकती है, जब वर्तमान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पीढ़ी पर्यावरण संरक्षण के लिए पूर्ण जागरूक एवं कटिबद्ध हो। युगनिर्माण मिशन के प्रत्येक कार्यकर्ता को न केवल स्वयं जानना चाहिए बल्कि द्वार-द्वार जाकर, घर-घर पहुँचकर जन-जन को यह चेताना चाहिए कि पर्यावरण संरक्षण केवल वृक्षारोपण नहीं है, अपितु वह प्राकृतिक आधार है, जिस पर मानव जीवन व जीव-जंतु जीवित रहते हैं। इसी पर कृषि एवं औद्योगिक क्रांति भी निर्भर है। पर्यावरण ही सृष्टि का आधारभूत जीवनतत्त्व है। इसका संरक्षण-संवर्द्धन हमारे, हम सबके जीवित रहने की अनिवार्य शर्त है।

☆ प्रकृति का उपभोग नहीं उपासना करें

मनुष्य की बुद्धि ने जाने वह कौन-सी अभिशापित घड़ी थी, जब यह मान लिया प्रकृति जड़ है, उसे चाहे जब जिलाने और चाहे जब सर्वनाश कर डालने का अधिकार है। सेवा, सद्भावना, परिपोषण के रूप में प्रकृति को दिए गए अनुदान किस तरह प्रतिफलित होते हैं ? यह किसी को देखना हो तो, बानमुड़ा के राल्फ सेंडर का इतिहास पढ़कर देख लें। जिसने केवल पौधों के प्रति असीम प्यार करके दुनिया भर के फल-फूल एकत्र करने-रोपने की कठिन साधना से भौतिक समृद्धि का शिखर पार कर लिया। पर यदि उसके साथ दुर्भावना व्यक्त की जाए तो प्रकृति में इतनी जबर्दस्त सामर्थ्य है कि मनुष्य को परास्त करके ही छोड़ देती है; फिर उसे अपने आप में चाहे जितना शक्तिशाली और सामर्थ्य होने का ही अभिमान क्यों न हो ?

बात अमेरिका के एक छोटे से नगर की है। कोरेफोर्ड नामक व्यक्ति के घर के साथ लगा हुआ एक सुंदर बगीचा था। बगीचे की देख-रेख के लिए उनके पिता ने टोनी नामक एक माली नियुक्त रखा। टोनी उस बगीचे की पूरी तरह देखभाल नहीं करता था, तो भी चीकू, अमरूद, आम, नासपातियाँ सभी फल देते थे। तब आजकल की तरह रासायनिक खादों का प्रचलन नहीं हुआ था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गोबर की साधारण खाद और थोड़े-बहुत पानी से ही बाग में लगाई जाने वाली सब्जियाँ उतनी सब्जी देती थी, जिससे पूरा परिवार भरपेट सब्जी खाता था, फल-फूल मित्रों और संबंधियों में भी बाँटते थे। सब ओर बड़ी प्रसन्नता बिखेर रखी थी, थोड़ी-सी मिट्टी के इन थोड़े-से पौधों ने।

दरवाजे के सहन पर उन्हीं दिनों एक पौधा उग आया। यह पौधा मिश्र जाति का था, उससे घर की शोभा निखर उठती थी। दरवाजे पर सघन छाया के अतिरिक्त उसमें नन्हें-नन्हें पक्षी बैठकर प्रातः-सायं चहचहाते, तो वहाँ प्राकृतिक संगीत का आनंद प्रवाहित होने लगता। वसंत ऋतु में उसमें फूल लद जाते, तो उसके आकर्षण से मधुमक्खियाँ, तितलियाँ दूर-दूर से दौड़ी चली आईं।

विजातीय था तो क्या हुआ, अपनी संतान न थी तो क्या हुआ, आखिरकार था तो वह भी प्रकृति का ही एक नन्हा शिशु छोटा-सा घटक। घर वालों ने उस पौधे को निरर्थक त्रास देना प्रारंभ कर दिया। यह कैसी विडंबना है कि लोग अपनों से जिनसे फल की आशा हो, उनके साथ अत्यधिक मोह दर्शाए और विरानों से वे समाज शरीर का ही अंग-अंश होते हुए भी, उपेक्षा, अनादर और अविश्वास बरतें ? कोरेफोर्ड ने रीडर्स डाइजेस्ट के १९६० के एक अंक से अपनी भूल स्वीकारते हुए लिखा है कि हम लोग पहले तो उसकी छाल छीलकर अपने नाम लिखा करते, पीछे उनमें सैकड़ों कीलें ठोक दी। उसकी डालों में बाँधकर पटाखे छुड़ाए, पर उस पौधे की मस्ती में रत्तीभर अंतर नहीं आया, वह अपनी स्वाभाविक गति से वैसे ही विकसित होता चला गया, जिस तरह मनस्वी व्यक्ति कठिनाई, बाधाओं-प्रतिरोधों की भी परवाह न करते हुए प्रगतिपथ पर निरंतर आगे बढ़ते रहते हैं।

अन्याय की सीमा यहीं तक नहीं रही, इन लोगों ने उसके नीचे आग जलाना, खाना पकाना भी प्रारंभ कर दिया; जिससे पक्षीगण वहाँ से भाग गए। आत्मीयता की भावना से ओत-प्रोत वृक्ष ने अपनी डालें बढ़ाकर उनके आँगन में भी छाया कर दी, तो उन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लोगों ने न केवल डालें ही छाँट दी, अपितु उसे जड़ से सुखा डालने की गरज से उसकी तमाम सारी जड़ें भी काट डालीं। जिस तरह संत और सज्जन गाली देने वाले के प्रति भी विनम्र-हितैषी और मृदुभाषी बने रहते हैं, उसी तरह उस वृक्ष ने इतनी व्यथा सहकर भी अपनी प्रवृत्ति रोकी नहीं। उसे न जाने किस शक्ति का बल था, जो निरंतर बढ़ता ही रहा।

इस बीच विलक्षण दुर्घटना घटी, अब तक जो वृक्ष-वनस्पति पेड़-पौधे इस परिवार के प्रति आत्मीयता उदारता और सहयोग का भाव रखते थे, अपने एक सजातीय के प्रति दुर्व्यवहार देखकर क्रुद्ध हो उठे अर्थात् उन सबने असहयोग आंदोलन कर दिया। चीकू के पौधे कुम्हलाकर सूख गए, अँगूर की बेलों ने फल देना बंद कर दिया, अमरूदों में कीड़े पड़ने लगे और सब्जियों तक ने फल देने से इनकार कर दिया। लॉन में लगी दूब ने अपने भाइयों का साथ दिया, वह भी पीली पड़ गई।

फोर्ड परिवार को बड़ी चिंता हुई, उसने समझा कि पोषण तत्त्वों के अभाव में ऐसा हो रहा होगा, अतएव मिट्टी की जाँच कराई गई, बोतलों में से नया प्लाज्मा तत्त्व संग्रहीत किया गया। कीटनाशक छिड़के गए, अच्छी बढ़िया खाद दी गई, तो भी परिणाम शून्य रहा। न केवल वनस्पतिशास्त्री अपितु रसायनज्ञों और फिजीशियनों तक की सहायता ली गई, उन्होंने जो भी उपाय सुझाए, सब प्रयोग में लाए गए, किंतु समस्या अपने स्थान से टस से मस नहीं हुई।

कोरेफोर्ड ने उस समय की अपनी व्यथा व्यक्त करते हुए लिखा है—उस समय मैं बगीचे में जाता, तो मुझे हर पौधा नाराज और बीमार प्रतीत होता, यहाँ तक कि झाड़ियाँ जो मेरे लिए निरर्थक थी, वह तक अप्रसन्न दीखतीं। शायद यह किसी विषाणु (वायरस) के कारण हो, उसकी भी जाँच कराई गई, पर रोग शरीर में नहीं, प्रकृति के मन में ही लगता था, अन्यथा वैज्ञानिकों के इतने प्रयत्नों का कोई तो प्रतिफल निकलता। प्रकृति के सम्मुख

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पराजय का इतना बड़ा दृश्य अन्यत्र देखने में नहीं आया। यह बात संपर्क में आए प्रत्येक वैज्ञानिक ने स्वीकार की, जो पौधे ठीक वैसी ही मिट्टी से अन्यत्र फलते-फूलते उन्हें नर्सरी से लाते ही यह मनोव्यथा लग जाती और पौधा दो दिन में ही कुम्हलाकर अपने भाइयों के सविनय अवज्ञा आंदोलन में सम्मिलित हो जाता। प्रकृति में इतना घनिष्ठ सहयोग यदि कहीं सर जॉन स्टुअर्ट मिल को देखने को मिल गया होता, तो वे 'प्रकृति में उपयोगितावाद' के सिद्धांत का प्रतिपादन न करते। बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है, यह लिखने की अपेक्षा वह छोटे-छोटे लोगों में भी सहयोग की प्रवृत्ति है, यह प्रतिपादित करते।

इस बीच पूर्व जन्म के किसी भयंकर अपराध के प्रतिशोध की तरह उस बड़े वृक्ष की जड़ों ने भीतर ही भीतर ऐसा विकास किया कि, दरवाजे के खंभों को ही फाड़ दिया। उससे मकान की चूलें चरमरा गईं। प्रकृति के इस भयंकर प्रतिशोध के कारण फोर्ड परिवार बुरी तरह भयभीत हो उठा। उन लोगों ने अन्यत्र मकान ले लिया और वह घर ही छोड़कर चले गए।

उन्होंने देखा कल तक जो पेड़-पौधे कुम्हलाए पड़े थे, उन सबमें हर्ष की लहर थी, सबमें नूतन चेतनता थी। पौधे बढ़ने लगे, फूलने-फलने लगे, पक्षी फिर लौट आए, गिलहरियाँ फिर कुतुर-कुतुर करने लगी, प्रातः-सांय पुनः कलरव गान होने लगा।

कुछ धार्मिक व्यक्तियों ने कहा—"फोर्ड ! लगता है तुम पिछले जन्मों में कोई पूँजीपति थे और श्रमिकों का शोषण करते थे या कि मिलावट का, कम तौल का, घटिया माल बेचने वाले दुकानदार थे, यह इसका प्रतिफल है।" कुछ ने इसे बड़े वृक्ष का शाप बताया, जो भी हो, प्रकृति ने यह दिखा दिया कि मनुष्य के लिए वह अपनी इच्छा से ही उपभोग्य हो सकी है, उसकी बर्वरता से नहीं, वह इतनी समर्थ है कि, मनुष्य उसे जीत नहीं सकता, उसकी उपासना से चाहे जितने लाभ लेलें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकृति परमात्मा की व्यवस्थापिका शक्ति है। यह भूल नहीं करनी चाहिए कि परमात्मा नहीं देखता तो कुछ भी किया जा सकता है। प्रकृति का प्रत्येक तिनका उसका प्रतिनिधि और उसकी सहायक शक्ति है, यह मानकर कहीं भी कुछ भी पाप करने से डरकर ही रहना चाहिए। उसकी उपासना के तो और भी सात्त्विक, परिणाम उपलब्ध किए जा सकते हैं।

☆ प्राकृतिक प्रकोपों का कारण और निवारण

पिछले कुछ दशकों में संसार को प्राकृतिक प्रकोपों के बीच से अधिक गुजरना पड़ा है। सूखा, बाढ़, भूकंप की घटनाओं में तीन-चार वर्षों से जितनी वृद्धि हुई है, उतना पहले कभी नहीं देखा गया। मौसम में इतना अप्रत्याशित परिवर्तन शायद ही कभी हुआ हो। वातावरण इतना असंतुलित हो गया है कि, यह ठीक पता नहीं कि मौसम में कब, क्या परिवर्तन हो जाए ? कहीं ठंढ बढ़ी हैं, तो कहीं गर्मी। प्रकृति को इतना क्रुद्ध पहले कभी नहीं देखा गया है। मौसम की विचित्रता, प्राकृतिक असंतुलन को देखने से लगता है कि, कहीं हम प्रलयकाल के निकट तो नहीं हैं, जिसकी कल्पना प्रस्तुत करते हुए ऋषि कहता है—

यत्र तत्र भूस्खलनं कदाचिच्च भूकम्पनम्।
क्वचित् वृष्टिरनावृष्टिः जायते तस्मिन् क्षणे।।

(मत्स्य पुराण)

उस समय सर्वत्र भूस्खलन और भूकंप आते हैं। कहीं अतिवृष्टि और कहीं अनावृष्टि होती है।

तथ्य चाहे जो भी हो, प्रकृति के असंतुलन की बात से इनकार नहीं किया जा सकता। अप्रत्याशित प्रकृति प्रकोप यह सोचने को बाध्य करते हैं कि, इस असंतुलन का कारण क्या है ? दैवीय प्रकोप या मनुष्य की स्वयं विनिर्मित परिस्थितियाँ। अध्यात्म तत्त्व दर्शन के अनुसार, इस प्रकार के प्रकृति प्रकोप को दैवी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आक्रोश समझा जा सकता है और उसका कारण मनुष्य की उस संकीर्ण स्वार्थपरता को माना जा सकता है, जिसके कारण देवता रुष्ट होते हैं। ऐसे प्रसंग न आने पाएँ, उसके लिए मनुष्यों और देवों के बीच परस्पर सद्‌भाव संपन्न आदान–प्रदान बना रहना चाहिए। यह कार्य यज्ञ परंपरा को प्रखर बनाए रहने से ही संपन्न हो सकता है। गीता का कथन है—

देवाभावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।

तुम सब यज्ञीय कर्मों द्वारा देवताओं को प्रसन्न करो। देवता प्रसन्न होकर अपने अनुग्रह की वर्षा करेंगे।

देवताओं को प्रसन्न रखने से अभिप्राय यहाँ प्रकृति को संतुलित एवं व्यवस्थित रखने से भी है। प्रकृति दैवीय शक्तियों की क्रीड़ाभूमि है। उसके अनुदानों से ही विश्ववसुंधरा पुष्पित–पल्लवित होती तथा समुन्नत बनती है। विभिन्न दैवीय शक्तियाँ ही अपना स्थूल परिचय प्रकृति की हलचल बनकर देती हैं। जिनका अलंकारिक वर्णन पौराणिक उपाख्यानों में आता है। इनमें वर्णन है कि देवता मनुष्य के सत्कर्मों से प्रसन्न होकर अनुदान बिखेरते हैं। इन देवताओं के अनुग्रह को प्राप्त करने के लिए इन्हें प्रसन्न रखना होता है। प्रसन्न रखने का अभिप्राय यहाँ उन्हें प्रसाद, उपहार देने से नहीं है, न उनकी आवश्यकता ही देवी–देवताओं को है। वे शक्तियाँ मात्र अनुनय–विनय पर प्रसन्न नहीं होतीं। मानवी मर्यादा के नियमों पर चलकर तथा आदर्शवादी परंपरा अपनाकर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया जा सकता है।

बिजली प्राप्त करने के लिए धन–ऋण तारों की व्यवस्थित तार–लाइन बनानी पड़ती है। उसका संबंध पावर हाउस से जोड़ना पड़ता है। विद्युत संचार की प्रक्रिया तब कहीं जाकर आरंभ होती है और बल्व में चमकती, पंखे में चलती तथा हीटर को गरम करती देखी जाती है। इसे चाहे दैवीय अनुग्रह माना जाए अथवा नियम–मर्यादाओं के पालन का प्रतिफल।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकृति के अनुग्रह को भी इसी प्रकार समझा जा सकता है। यह अनुदान उच्चस्तरीय नियम-व्यवस्था के अधीन चलते रहने से ही मिलता रहता है। जिस प्रकार बिजली के नंगे तारों को छूने वाले उसके प्रकोप के भाजन बनते, दुर्घटनाग्रस्त होकर मरते देखे जाते हैं, उसी प्रकार प्राकृतिक व्यवस्था में अवरोध पैदा करने वाले उसके कोप का भाजन बनते हैं। चाहे उसे प्राकृतिक प्रकोप कहा जाए, चाहे मानवी कृत्य अथवा दैवी आक्रोश।

प्रकृति के प्रकोपों में यह बढ़ोत्तरी कुछ वर्षों से ही आई है। यह बढ़ोत्तरी विघातक अनुसंधानों, परमाणु परीक्षणों के साथ बढ़ी है। औद्योगीकरण से प्रदूषण के संकट का अभी हल नहीं निकल पाया था कि, परमाणु परीक्षण की विभीषिका भी आकर जुट गई। इस दोहरे प्रहार ने सारी प्राकृतिक व्यवस्था को ही चरमरा दिया।

अच्छे कर्म का फल अच्छा और बुरे का बुरा सर्वविदित है। कहने को तो यह सिद्धांत पुराना पड़ गया, किंतु इसके पीछे तथ्य सनातन ही है। यह सिद्धांत सृष्टि के कण-कण में कार्य कर रहा है। गेहूँ का बीज पृथ्वी में पड़कर असंख्यों बीज के रूप में फलित होता है। अच्छाइयाँ एवं बुराइयाँ अपने अनुरूप प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करती हैं।

शास्त्रों में वर्णन है कि ,मनुष्य जितनी गंदगी फैलाता है, उसकी स्वच्छता के लिए तथा वातावरण को परिशोधित करने के लिए यज्ञ कृत्य करने चाहिए। यज्ञ देवता वातावरण को परिशोधित करते तथा संतुलित रखते हैं। उसके प्रभाव से ऋतुएँ समय पर आती हैं। संतुलित वातावरण मानवी सुख-समृद्धि का आधार बनता है। पौष्टिक अन्न, वनस्पतियाँ उपजती हैं। मनुष्य स्वस्थ एवं नीरोग बनता है। यज्ञ प्रयोगों के सत्परिणामों से सभी परिचित हैं। अतीत में जब तक यज्ञ प्रक्रिया चलती रही, प्रकृति का संतुलन बना रहा। कहते हैं कि भारत में कभी दूध-दही की नदियाँ बहती थीं। आध्यात्मिक ही नहीं, भौतिक अनुदानों से भी भारत ने विश्वमानव को तृप्त किया था। कालांतर में यह प्रक्रिया बंद हो गई। मनुष्य का भ्रष्ट चिंतन तथा दुष्ट कर्तृत्व

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वातावरण में ऐसे प्रदूषण भरने लगा, जो वायुमंडल में बढ़ती जाने वाली विषाक्तता से भी अधिक भयंकर है।

निस्संदेह प्राकृतिक असंतुलन का दोषी मनुष्य स्वयं है, दोषारोपण चाहे भगवान् पर किया जाए अथवा देवी-देवताओं पर, इससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। परिणामों को तो भुगतना ही होगा। इन प्राकृतिक प्रकोपों ने अपार संपत्ति को तो नष्ट किया ही, नर संहार भी कम नहीं हुआ। समस्त प्राणियों को उसका शाप सहना पड़ा। इस क्षति का लेखा-जोखा तैयार किया जाए, तो प्रतीत होगा कि प्रकृति एक हाथ से देकर दूसरे हाथ से लौटाने पर उतारू हो गई है।

भूकंप, बाढ़, भूस्खलन जैसे प्राकृतिक प्रकोपों के कारणों पर भी विचार किया जाए, तो इस संदर्भ में भांडे खोल देने वाले तथ्य सामने उपस्थित होते हैं। भूकंप के बारे में 'इलास्टिक रिवाइव्ड सिद्धांत' सर्व विदित है। इसके अनुसार, अनेक स्थानों पर पृथ्वी काँपती है, जिससे टूट-फूट होती है। बड़ी-बड़ी अट्टालिकाएँ पलभर में धराशायी हो जाती हैं। विपुल धनशक्ति एवं जनशक्ति नष्ट होती है। वैज्ञानिक मान्यता के अनुसार, पृथ्वी एक गर्म पिघलता हुआ गोला है, जिसकी ऊपरी परत पर मिट्टी की एक हलकी एवं ठंढी परत जमी है। कई स्थानों पर यह पपड़ी कमजोर है। बनावट में असमानता होने तथा असमान फैलाव-सिकुड़न के कारण पृथ्वी के भीतर स्थित चट्टानें कहीं-कहीं तनी हुई रहती हैं। जब तनाव किसी प्रकार बढ़ जाता है अथवा किसी बाहरी दबाव से झटका लगता है, तब वे टूट जाती हैं। यही प्रक्रिया भूकंप का कारण बनती हैं। पृथ्वी की यह पपड़ी जहाँ-जहाँ कमजोर है, प्रायः भूकंप का झटका वहाँ-वहाँ महसूस किया जाता है।

परमाणु विस्फोटों के समय उस स्थान की पृथ्वी में कंपन्न होता है। यह कंपन्न कमजोर एवं तनावपूर्ण चट्टानों को झटका देकर तोड़ देता है। यह आवश्यक नहीं कि जिन स्थानों पर परमाणु परीक्षण हो रहा है वहीं की चट्टानें टूटें, बल्कि दूरवर्ती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पृथ्वी की कमजोर चट्टानों को भी तोड़ सकती है। भूकंप का झटका इन स्थानों पर महसूस किया जाता है।

अनेक स्थानों पर भूकंप का झटका अनुभव होने का कारण है, भूकंप से उठी कंपन तरंगों का पृथ्वी के एक स्थान से दूसरे स्थान तक चलना। ये तरगें दो प्रकार की होती हैं। एक तरंग तो पृथ्वी के ऊपरी पृष्ठ से होकर चलती है, जिसे पृष्ठीय तरंग कहते हैं। दूसरी तरंग पृथ्वी के भीतर जाकर दो भागों में बँट जाती है। एक को एस० तथा दूसरी को पी० तरंग कहते हैं। विभिन्न गति से चलती हुई ये तरगें पृथ्वी के अधिक घने केंद्रीय भाग से टकराकर लौटती हैं। जहाँ दोनों तरंगें एक-दूसरे को प्रवलित करती हैं, वहाँ भूकंप का झटका तीव्र महसूस किया जाता है। वैज्ञानिकों का मत है कि बहुत समय पूर्व उत्तरकाशी के पास हुए भू-स्खलन, जिसके फलस्वरूप हिमालय की विशाल चट्टानें टूटकर गिर पड़ी थी, के पीछे उपर्युक्त प्रक्रिया ही कारण थी।

परमाणु परीक्षणों से उत्पन्न होने वाली भूगर्भीय तरंगों से भूकंपों की संख्या में अभिवृद्धि हुई है। अनुनाद प्रक्रिया द्वारा ये तरंगें पृथ्वी की मजबूत चट्टानों को भी तोड़ने में समर्थ हैं। इनकी गति यदि पृथ्वी में चट्टानों की प्राकृतिक कंपन के समान है, तो चट्टानों के टूटने की संभावना और भी बढ़ जाती है। रिजोनेन्स की शक्ति से हर कोई परिचित है। पुल पार करते हुए सिपाहियों के कदम मार्च को तोड़ दिया जाता है। एक साथ, एक गति, एक ताल के क्रम से ध्वनि के रिजोनेन्स से पुल टूटने की संभावना रहती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि, एक स्थान के परमाणु परीक्षणों से किसी अन्य स्थान पर कभी भी, बहुत समय बाद भी भूकंप आ सकता है।

समुद्री तूफानों के आने में भी इस प्रकार कें परीक्षणों की बात वैज्ञानिक स्वीकार करने लगे हैं। सामान्य लहरों की अपेक्षा कभी-कभी तो इन तूफानों में लहरों की ऊँचाई अप्रत्याशित रूप से डेढ़ सौ फीट तक पहुँच जाती है। इनका वेग दो सौ मील प्रतिघंटा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तक देखा गया है। पिछले दिनों आंध्रप्रदेश में आए भयंकर तूफान में उन लहरों की विनाशकारी शक्ति देखने में आई। विश्वास किया जाता है, समुद्री तूफानी लहरों का संबंध ज्वार लहरों से है। किंतु वैज्ञानिकों का कहना है कि, इन तूफानी लहरों का कारण पृथ्वी की सतह और समुद्र के भीतर आए भूकंप भी होते हैं।

बाढ़ की घटनाओं में असामान्य वृद्धि कुछ वर्षों से देखी जा रही है। अभी पिछले वर्ष की भयंकर बाढ़ ने करोड़ों व्यक्तियों को बे-घर कर दिया। असंख्यों लोगों को न केवल भारत में बल्कि अन्य देशों के लोगों को भयंकर बाढ़ का सामना करना पड़ा है। बाढ़ के कारणों का पता करने पर जो तथ्य सामने आए हैं, वे बताते हैं कि यह मनुष्य की क्रियाएँ हैं, जो प्रतिक्रियास्वरूप इस प्रकार विभीषिकाएँ खड़ी करती हैं। सामान्यतः वर्षा-प्रक्रिया में समुद्र का पानी सूर्य की गर्मी से भाप बनकर उड़ता रहता है। वही ठंडा होकर जल की बूँदों के रूप में जम जाता है। इन्हीं बूँद समूहों को बादल कहते हैं। ये हलकी होने के कारण हवा में तैरती रहती तथा नीचे गिरती हैं। इन बूँदों का आकार अतिरिक्त भाप के होते रहने से बढ़ जाता है। बड़ी बूँदें भार के कारण पृथ्वी पर गिरने लगती हैं। यह वर्षा की सामान्य प्रक्रिया संतुलित रूप से चलती रहती है। असंतुलन की स्थिति तब बनती है जब वायुमंडल में स्थित ऑक्सीजन, नाइट्रोजन तथा कार्बन डाइ-ऑक्साइड आवेशयुक्त हो जाती है। परमाणु परीक्षण से यही प्रक्रिया संपन्न होती है। विस्फोट से उत्पन्न रेडियोधर्मी पदार्थ ऊपर वायुमंडल में जाकर ऑक्सीजन, नाइट्रोजन और कार्बन डाइ-ऑक्साइड को आवेशित करते हैं। 'आयन' की स्थिति आने पर, इन पर पानी की बूदें अधिक जमा होने लगती है। बूँदों का अतिरिक्त जमाव अधिक वर्षा का कारण बनता है।

नदियों में आई बाढ़ का एक कारण परमाणु-परीक्षणों से उत्पन्न अधिक ताप से पहाड़ों पर जमी बर्फ का पिघलना भी है। इसके साथ वर्षा का संयोग जुड़ जाने से स्थिति और भी संकटपूर्ण हो जाती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकृति का संतुलन बिगड़ता जा रहा है। परिणाम सामने हैं—विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक विक्षोभ और वर्तमान संकटपूर्ण परिस्थितियों के उत्तरदायी मनुष्य स्वयं है। इस विषाक्तता के परिशोधन की व्यवस्था तो बनाई जानी चाहिए, नए परीक्षणों पर सख्ती से रोक लगानी चाहिए। साथ ही अधिक उत्पादन के लिए विशालकाय उद्योगों की स्थापना की होड़ सभी देशों में चल रही है, इस अविवेकपूर्ण उत्साह को बंद किया जाए। बड़े उद्योगों से उत्पादन तो बढ़ेगा, किंतु उनसे उत्पन्न होने वाली विषाक्तता का यदि लेखा-जोखा लिया जाए, तो उत्पादन की अपेक्षा कहीं अधिक महँगा पड़ेगा। प्रदूषण की वृद्धि रोकने के लिए बड़े उद्योगों का कुटीर उद्योगों में परिवर्तन किया जाए। उससे उत्पादन में कमी हो सकती है। किंतु दूरगामी परिणामों की दृष्टि से देखा जाए, तो बड़े उद्योगों से उत्पन्न होने वाले प्रदूषण जितनी क्षति पहुँचाते हैं उसकी तुलना में यह हानि अल्प होगी। वस्तुओं का उत्पादन कम हो, तो भी गुजारा किया जा सकता है। आवश्यकताओं में कटौती करके काम चलाया जा सकता है, किंतु उद्योगों के प्रदूषण की प्रतिक्रियास्वरूप होने वाले प्राकृतिक विक्षोभों को सहन करना असह्य है।

वातावरण की विषाक्तता के परिशोधन में यह उपचार की सनातन परंपरा ही सफल हो सकती है। यज्ञीय-दर्शन को जनसामान्य के चिंतन में उतारा जा सके, तो सत्प्रवृत्तियों के विकास में असामान्य योगदान मिलेगा। चिंतन की भ्रष्टता एवं कर्तृत्व की निकृष्टता का परिष्कार भी इसी प्रकार संभव है। इस बात से कोई भी विचारशील इनकार नहीं कर सकता कि भ्रष्ट चिंतन एवं निकृष्ट कर्तत्व वातावरण को उसी प्रकार दूषित कर रहे हैं, जिस प्रकार परमाणविक परीक्षण।

यज्ञ देवता की प्रतिष्ठापना इस युग की माँग है। सत्प्रवृत्तियों का अभिवर्द्धन यज्ञीय प्रवृत्तियों के प्रसार से ही संभव है। वातावरण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का संतुलन-परिशोधन तथा प्राकृतिक प्रकोपों के रोकथाम के लिए यज्ञानुष्ठान का प्रचलन व्यापक स्तर पर करना होगा।

☆ हम बिच्छू की तरह अपनी मातृसत्ता को समाप्त न करें

पृथ्वी की स्वाभाविक मृत्यु अन्य ग्रह-नक्षत्रों के समान अपने नियत क्रम और नियत समय पर हो सकती है। पर लगता है उसके बच्चे अपनी माँ को समय से पहले ही मार डालने के लिए आतुर हो रहे हैं। बिच्छुओं में ऐसा ही होता है, उसके बच्चे ही माता के पेट को खा-पीकर साफ कर देते हैं। लगता है मनुष्य भी धरती को जल्दी ही मौत के मुँह में जल्दी से जल्दी धकेल देने के लिए आतुर हो रहा है। इस संदर्भ में उसे बिच्छु के बच्चों जितना भी लाभ नहीं मिलने वाला है। माँ को खाकर बिच्छु के बच्चे जीवित बने रहते हैं, पर मनुष्य का दुर्भाग्य इतने तक भी सीमित नहीं रहने देगा, धरती का अंत होने के साथ-साथ मनुष्य को भी अपना अस्तित्व गँवाना पड़ेगा। इस स्थिति को मनुष्यजाति का महामरण भी कहा जा सकेगा।

परमाणु विस्फोट, कारखाने, द्रुतगामी वाहन, जंगलों का कटना, घास वाले क्षेत्र का घटना यह सारे उपद्रव इन दिनों लाभदायक समझे जाते हैं और उत्साहपूर्वक लोग इन प्रयासों में जुटे हैं। विभिन्न प्रयोजन के लिए अग्नि जलने की और उसमें जीवाश्मयुक्त ईंधन झोंके जाने की गति निरंतर तीव्र होती जा रही है। फलस्वरूप तथाकथित वैज्ञानिक प्रगति से पहले वाले कुछ समय पूर्व के और अब के वायुमंडल में १५ प्रतिशत कार्बनिक गैस बढ़ने तथा १५ प्रतिशत ऑक्सीजन घटने का अंतर पड़ गया। अर्थात् तीस प्रतिशत अशुद्धता बढ़ गई है। अशुद्धता की यह बढ़ोत्तरी चलती रही, तो फिर हम अपनी धरती को ही शुक्र या मंगल की स्थिति में चली जाने के लिए विवश कर देंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्टैनफर्ड विश्वविद्यालय के अंतरिक्ष विज्ञानी वान० आर० एब्लेमन ने पृथ्वी के वायुमंडल में इन दिनों बढ़ रहे असंतुलन पर चिंता व्यक्त की है। पिछले सौ वर्षों से लकड़ी, कोयला जैसे जीवाश्मी ईंधन को बहुत बड़े परिमाण में जलाया जा रहा है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि वायुमंडल में लगभग १५ प्रतिशत कार्बनिक गैस की मात्रा बढ़ गई है। इसके अतिरिक्त जीवाणुओं की संख्या घट जाने से उनके द्वारा उत्पन्न की जाने वाली ऑक्सीजन की उत्पत्ति लगभग उतनी ही अर्थात् १५ प्रतिशत और घट गई है। यह दुहरी हानि अपनी धरती के लिए भावी संकट के लिए बढ़ती आ रही विभीषिकाओं की पूर्व चेतावनी है।

मनुष्य का प्रधान आहार 'ऑक्सीजन' है। अन्न, जल की अपेक्षा अनेक गुनी 'ऑक्सीजन' वह साँस द्वारा ग्रहण करता है। जीवन की आधारशिला यह प्राणवायु ही है। अन्न-जल के बिना कुछ समय गुजर हो सकती है, पर शुद्ध वायु के बिना क्षणभर भी गुजारा नहीं। मनुष्य सबसे अधिक खपत ऑक्सीजन की ही करता है। यह हरे-भरे जंगलों और वृक्ष-वनस्पतियों से ही प्राप्त होती है। दुर्भाग्यवश हम जंगलों का सफाया करके उनके स्थान पर बड़े शहर तथा कल-कारखाने खड़े करते चले जा रहे हैं। इससे दुहरी हानि होती है। एक ओर तो वृक्ष-वनस्पति कटने से ऑक्सीजन का उत्पादन कम होता है, दूसरी ओर कल-कारखाने तथा तेलवाहन अपने धुएँ से कार्बनिक गैस की मात्रा बढ़ाते हैं। ऑक्सीजन का घटना और कार्बनिक गैस का बढ़ना न केवल मानव प्राणी के लिए है, वरन् भूमंडल की वर्तमान स्थिति के लिए भी संकट उत्पन्न करेगा।

जीवों और वनस्पतियों की उपस्थिति पृथ्वी के वर्तमान वातावरण को रासायनिक रूप से संतुलित बनाए हुए हैं। यदि यह संतुलन नष्ट हो जाए, तो फिर अपनी धरती भी अन्य ग्रह-नक्षत्रों से अत्यधिक ठंडी या गर्म होकर वैसी ही निर्जीव हो जाएगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पृथ्वी, शुक्र तथा मंगल इन तीन ग्रहों की रचना एक ही समय एक ही मूलभूत पदार्थ से हुई है। आरंभ में हाइड्रोजन और हीलियम का उनमें समान रूप से बाहुल्य था, किंतु शुक्र और मंगल के वायुमंडल में उपयोगी तत्त्व स्थिर न रह सके। वे अंतरिक्ष में उड़ गए। धरती के इन दो सहोदरों की स्थिति मृतप्राय: हो गई।

पृथ्वी की स्थिति इन दोनों से भिन्न है। यहाँ सूर्य की गर्मी को उचित मात्रा में ग्रहण करने की और शेष को अंतरिक्ष में वापस लौटा देने की क्षमता है। इसी से यहाँ शीत-ताप का संतुलन बना हुआ है और प्राणियों के जन्मते-बढ़ते रहने की परिस्थितियाँ बनी हुई हैं।

अपने वायुमंडल को संतुलित बनाए रखने में जीवाणुओं का भारी योगदान है। अपनी धरती के इर्द-गिर्द जितना निर्जीव पदार्थ भरा पड़ा है, उसकी तुलना में प्राय: एक करोड़ गुना जीवाणु पदार्थ है। यदि जीवाणुसत्ता घटने लगे, तो वायुमंडल में ऑक्सीजन की तथा अन्य उन पदार्थों की मात्रा घट जाएगी, जो धरती का सह्य तापमान बनाए हुए हैं। संघनता बढ़ी तो गर्मी बढ़ेगी और झीनापन आया, तो शीत का आधिपत्य जम जाएगा, वायुमंडल के वर्तमान संतुलन का बिगड़ना भविष्य में पृथ्वी को भी शुक्र या मंगल की स्थिति में ही धकेल देगा, तब यहाँ जीवधारियों के अस्तित्व की संभावना न रह जाएगी।

वायुमंडल की जीवनोपयोगी स्थिति कायम रहे, इसके लिए यह आवश्यक है कि, दृश्य और अदृश्य जीवसत्ता का अस्तित्व स्थिर रहे। इस स्थिरता में उथल-पुथल उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों का प्रभाव यही होगा कि ऑक्सीजन घटती चले और कार्बनिक गैस बढ़ जाए। इससे पृथ्वी पर न केवल गर्मी बढ़ेगी, वरन् कार्बनिक गैस बढ़ जाने से प्राणियों का जीवन कठिन हो जाएगा। ऑक्सीजन के अभाव में वे क्रमश: दुर्बल, सुस्त, अविकसित और अल्पजीवी होते चले जाएँगे। यही विपत्ति अंतरिक्ष

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में और भूतल पर विचरण कर रहे आँख से न दीख पड़ने वाले जीवाणुओं की होगी। आखिर गैसीय आहार तो उन्हें भी चाहिए। दमघोंटू परिस्थितियों में तो न केवल जीवधारी ही समाप्त होंगे, वरन् जीवाणुसत्ता भी अपना अस्तित्व गँवाती चली जाएगी।

बुद्धिमान् समझा जाने वाला मनुष्य आज अपनी प्रगतिशीलता के नशे में मदोन्मत्त हो रहा है, उसे तत्काल अधिकाधिक साधन-सुविधायें प्राप्त करने की धुन है। इस सनक में वह भावी जीवन-मरण की संभावनाओं को एक प्रकार से उपेक्षित ही करता चला जा रहा है। किंतु वह दिन दूर नहीं, जब यह तथाकथित प्रगतिशीलता बहुत महँगी पड़ेगी।

वैज्ञानिक प्रगति और आर्थिक उन्नति के नाम पर हम जो कुछ कर रहे हैं, देखना चाहिए कि वह बालकों जैसी एकांगी आतुरता तो नहीं है, विशेषतः तब तो इस अंधी दौड़ को और भी अधिक गंभीरता के साथ परखा जाना चाहिए, जबकि इस भूतल के लिए और समस्त मानवजाति के लिए ही संकट उत्पन्न कर रही हो। सामूहिक रूप से संपन्नता के अत्युत्साह के कारण समस्त संसार के लिए संकट उत्पन्न हो रहा है और व्यक्तिगत जीवन में उसी रीति-नीति को अपनाकर व्यक्तित्व के स्वस्थ विकास की संभावनाओं को धूमिल किया जा रहा है। अच्छा हो, समय रहते हम अपनी इस अविवेकशीलता से कदम पीछे हटा लें।

☆ पर्यावरण संरक्षण—हम सबका कर्तव्य

मनुष्य और पर्यावरण का परस्पर गहरा संबंध है। पर्यावरण यदि प्रदूषित हुआ, तो व्यक्ति अस्वस्थ होंगे और जनस्वास्थ्य को शत-प्रतिशत उपलब्ध कर सकना किसी भी प्रकार संभव न हो सकेगा। इसके विपरीत वह यदि सुरक्षित और संरक्षित रहा, तो संपूर्ण स्वस्थता के लिए आकाश-पाताल के कुलाबे मिलाने की जरूरत न पड़ेगी और थोड़े-से प्रयास से ही वांछित लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन दिनों संपूर्ण विश्व में समग्र स्वस्थता के प्रति चेतना तो जगी है और उसकी प्रगति के लिए तरह-तरह के उपाय और उपचार भी हो रहे हैं; पर पर्यावरण को बचाए बिना इस प्रकार के प्रयास आधे, अधूरे और अधकचरे ही कहे जाएँगे। शरीर खूब स्वच्छ हो और वस्त्र मैले-कुचैले बने रहें, तो इसे स्वास्थ्य-संवर्द्धन की दिशा में एकांगी प्रयत्न ही कहना पड़ेगा। होना यह चाहिए कि स्वास्थ्य-संरक्षण के प्रति जितनी और जिस प्रकार की सतर्कता तथा तत्परता बरती जा रही हैं, उससे भी कई गुनी अधिक जागरूकता हवा, पानी, मिट्टी की सुरक्षा के प्रति बरती जाने की आवश्यकता है, तभी हम सही अर्थों में उस स्थिति को उपलब्ध कर सकेंगे, जिसे समग्र स्वस्थ की संज्ञा दी जा सके।

गाय का बच्चा जब तक धीमी गति से नियम-कायदे के अनुरूप दूध पीता रहता है, तब तक गाय उसे पेट भर पीने देती है और दुलार से चाटती रहती है, पर जब वह उद्दंडता पर उतरता है और थन काटकर उन्हें लहुलुहान करने लगता है, तो माता के तेवर बदलते हैं और वह करारी लात जमाकर दूर धकेल देती है। एक पक्ष का व्यवहार बदलते ही दूसरा पक्ष अपने तौर-तरीके देखते-देखते बदल लेता है।

प्रकृति हमारी माता है। उसी के अजस्र अनुदानों के कारण शरीर के ढाँचे से लेकर मानसिक विकास तक के जीवन को समुन्नत बनाने वाली अनेकानेक उपलब्धियाँ हस्तगत हुई हैं। निर्वाह से लेकर लोकसुविधा के साधनों का भंडार उसी की खदान से हाथ लगा है। जिस पर गर्व किया और अहंकार जताया जाता है, वह समस्त साधन-सामग्री प्रकृति का अनुदान भर है। इसे सीमित मात्रा में लिया और भले मानस की तरह सदुपयोग में लाया जाए, तो सामान्यक्रम ठीक तरह चलता रहता है। मनुष्य को भी कुछ कमी नहीं रहती और प्रकृति संतुलन भी बिगड़ता नहीं। अदृश्य जगत् में विक्षोभ भी उत्पन्न नहीं होता, पर जब अतिवादी उद्दंडता अपनाई जाती है और एक सोने का अंडा रोज देने वाली मुर्गी का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पेट चीरकर देखते-देखते स्वर्ण भंडार हथिया लेने की ललक उठती है, तो उसका पेट चीरा जाता है और वह भी गँवा बैठा जाता है, जो सहज सरलतापूर्वक मिलता चला आता था। यही अनौचित्य इन दिनों प्रकृति के साथ मनुष्य द्वारा अपनाया जा रहा है।

द्रुतगामी वाहनों और कारखानों के लिए तेल, कोयला जैसी खनिज ऊर्जा का दोहन असाधारण गति से हो रहा है। फलतः वायुमंडल में प्रदूषण तो भरता ही है, साथ ही वह संचित भंडार भी चुकता चला जाता है, जो भूगर्भ में चिर संचय के रूप में जमा था। इस व्यतिक्रम से भूकंपों एवं अन्यान्य प्रकृति प्रकोपों का सिलसिला बढ़ा है और वह स्थिति समीप आती जा रही है कि इस शताब्दी के भीतर वह संचय समाप्त हो जाएगा और कारखानों, द्रुतवाहनों के समक्ष ऊर्जा के अभाव में कबाड़खाने मात्र बन जाने की विभीषिका सामने आ खड़ी होगी।

मदिराजन्य उन्माद प्रसिद्ध है। उसकी अति मात्रा लेने पर मनुष्य नालियों में मुँह रगड़ता, अनर्गल वचन बोलता और बावलों जैसी हरकतें करता है। दूसरा नशा सफलताजन्य अहंकार का है, जो उसे पचा नहीं पाते, वे उद्दंडता का अनाचार अपनाते हैं। शरीर में बलिष्ठता आने पर गुंडागर्दी सूझती है। पैसा बढ़ने पर दुर्व्यसनों की भीड़ दौड़ पड़ती है। अहं बढ़ने पर लोग दबाने ठगने की बात सोचते हैं। प्रकृति की परतों को असाधारण रूप से उधेड़ने में यत्किंचित सफलता मिल जाने पर भी यही हो रहा है। विज्ञान को अणुबम, रासायनिक बम बनाने की सूझी। विश्व विजय के सपने देखने वालों की पूरी चांडाल चौकड़ी जम गई। सर्वसाधारण भी अनुकरण में पीछे कैसे रहता ? उसने अपना रहन-सहन, आहार-विहार ऐसा अपनाया, जिसे एक प्रकार से मुँह चिढ़ाना ही कहा जा सकता है।

एयर कंडीशंड कमरों में रहने वाले तात्कालिक मौज तो उठाते हैं, पर शरीर की प्रतिरोधक शक्ति बुरी तरह गँवा बैठते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं, और आये दिन जुकाम जैसी बीमारियों के शिकार बने रहते हैं। पकवान, मिष्टान्न, मांस, व्यंजन जैसे स्वादों से स्वादिष्टता तो मिली, पर पेट का कचूमर निकल गया और तज्जनित रक्त विकारों से अनेकानेक बीमारियों की झड़ी लग गई। यह चटोरेपन की प्रतिक्रिया है। धन-लिप्सा ने कमाई के ऐसे तरीके ढूँढ़ निकाले, जिनसे ढेरों संपदा कुछ ही समय में जमा कर लेने की ललक ने ऐसा अनाचारों का ढेर लगा दिया, जिसमें प्रयोक्ता को तो मनमाना लाभ हुआ, पर अन्य असंख्यों को उस कुचक्र में पिसकर कंकाल भर रह जाना पड़ा। विनोद, मनोरंजन के नाम पर कामुकता, छद्म, आक्रमण और शोषण के दृश्य देखने को मिले। फलतः आँखों को रस जरूर आया, पर चिंतन और चरित्र में निकृष्टता का दौर बढ़ता चला गया। सोचा गया कि, नियंता की प्रकृति की कोई व्यवस्था तो है नहीं, फिर संकीर्ण स्वार्थ की पूर्ति के लिए कुछ भी कर गुजरने में क्या हर्ज है इसी ढीठता के अंतर्गत पेड़ बुरी तरह कटे और प्राणियों को घासपात की तरह उदरस्थ कर जाने की प्रथा चल पड़ी। कृत्रिम खाद, कीटनाशक, कृत्रिम प्रजनन आदि से किसी को तात्कालिक लाभ भले ही मिले, पर प्रतिफल रूप में हो रहे पर्यावरण विकृति के दूरगामी परिणाम हानिकारक ही हो सकते हैं। होते हुए देखे भी जा रहे हैं।

प्रकृति के साथ बलात्कार अभी तथाकथित वैज्ञानिकों, मूर्द्धन्यों को अपने कौशल की ध्वजा फहराने का निमित्त कारण भले ही प्रतीत होता है, पर तत्त्वदृष्टि से देखने पर यही प्रतीत होगा कि स्वल्प-सफलता के आधार पर उद्धत हुआ मनुष्य नशेबाजों की तरह ऐसा कुछ कर रहा है, जो उसके लिए ही नहीं, समूचे समुदाय के लिए घातक सिद्ध होगा ?

आकाश में उपग्रहों का कबाड़ जमता जा रहा है। वायु में प्रदूषण भर गया है। जल शुद्धता गँवा रहे हैं। भूमि रेगिस्तान बनती जा रही है। दूसरों के साथ अनाचार बरतने का अभ्यासी अपनों के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साथ भी वह दुष्टता बरतने में कोई अंतर कर नहीं पा रहा है। फलतः शालीनता को भारी क्षति पहुँच रही है। इस प्रकार के अनेकों कारण मिलते जाने पर समस्याओं और कठिनाइयों के अंबार लगते जा रहे हैं।

यह अतिवादी उद्दंडता—प्रकृति एक सीमा तक ही सहन कर सकती है। अतिवादी व्यवहार किसी को भी क्षुभित कर सकता है, प्रकृति को भी। समझदारी यदि वापस न लौटे, तो फिर कान उमेठने और चपत जड़ने का काम दयालु माता को ही करना पड़ता है।

यह अनुभव कराने वाले अनेकों घटनाक्रम सामने आ रहे हैं; जो बताते हैं कि कहीं कोई बड़ी भूल हो रही है। अवांछनीयता की प्रतिक्रिया ही कई बार इतनी कठोर हो जाती है कि राह बदलने के लिए बाधित करती है। डायबिटीज, ब्लडप्रेशर आदि के रोगी अपनी खुराक पर नियंत्रण करने के लिए मन मारकर बाधित होते हैं। असंयमी साधारण स्थिति में तो किसी के रोके नहीं रुकते, पर जब उसकी प्रतिक्रिया प्राणघातक रोग खड़े कर देती है, तो ऑपरेशन का कष्ट सहने से लेकर पैसा पानी की तरह बहाने के लिए बाधित होना पड़ता है। इसे मजबूरी भी कह सकते हैं, प्रकृति की प्रताड़ना भी और नियंता की कठोरतापूर्वक शिक्षा देने की पद्धति भी।

मनुष्य में इतनी समझदारी अभी बाकी है कि वह एक सीमा तक ही उच्छृंखलता बरतता है। जब उसे संकट की भयंकरता सामने प्रत्यक्ष दीख पड़ती है, तब वह सँभलता और चाल बदलते भी देखा जाता है। इसे समझदारी भी कह सकते हैं और विवशता भी। मस्ती में दौड़ने वालों के मार्ग में जब कोई बड़ा खड्ड आ जाता है, तब वे बचने की बात सोचते हैं। सर्प-सिंह का आभास मिलते ही अति उत्साही भी वापस लौट पड़ते हैं। समय आ गया कि पिछली शताब्दी में प्रकृति के साथ जो अतिवादी अनाचार बरता गया है, उसके परिणामों को समझा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाए और नवयुग की प्रभात किरणें आते-आते उस रवैये को बदल दिया जाए, जो नींद की मीठी खुमारी में उचित और मनभावन भी लगता था।

सदाशयता-दूरदर्शिता अपनाने की अंतःप्रेरणा ही ईश्वरीय अनुशासन है। उसी को प्रकृति का नियंत्रण और संतुलन भी कहा जा सकता है। अध्यात्मवेत्ताओं का कहना है कि अब इसी सुधार, परिष्कार का दौर चलेगा। शालीनता की रीति-नीति अपनाए जाने का परिवर्तन एकाकी देखने वालों द्वारा महान् परिवर्तन जैसा कहा जाएगा और अध्यात्म की भाषा में उसे *"सतयुग की वापसी"* नाम दिया जाएगा। इसकी उपयुक्त वेला अब सन्निकट ही है, यह समझना चाहिए।

❑ ❑

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

औद्योगीकरण की समस्या का समाधान

इसे बीसवीं सदी की एक विडंबना ही कहा जाना चाहिए कि उद्योगों के फलने–फूलने में जनरुचि का बहुत बड़ा हाथ रहा है। यह प्रोत्साहन इसलिए मिला कि अधिक साफ–सुथरी, अधिक आकर्षक, पॉलिश्ड वस्तुएँ–हाथ की बनी वस्तुओं की तुलना में अधिक रास आने लगी हैं। वे कुछ सस्ती भी पड़ती हैं एवं प्रचुर मात्रा में आसानी से उनके विक्रेता उन्हें हस्तगत करा देते हैं।

शासनसत्ता एवं धनाधीशों ने बड़े उद्योगों को देश की प्रगति और जनता को सस्ती व अधिक सुविधा–साधन देने का आश्वासन देकर इस तेजी से गत कुछ दशकों में बढ़ाया है कि चारों ओर उन्हीं की भरमार दिखाई देती है। उन्हें स्थान व मुद्रा उपलब्ध कराने में टैक्स की अधिक प्राप्ति के प्रलोभन के कारण और भी बढ़ावा मिला। मशीनें बनाने वालों को अपने लिए काम का एक नया क्षेत्र मिला। किसानों ने अधिक राशि के बदले बहुमूल्य अन्न पैदा करने वाली अपनी जमीनें बेच दीं, फलतः जहाँ–तहाँ कुकुरमुत्तों की तरह उद्योग खड़े होते चले गए एवं भारत जैसे कृषि प्रधान देश में एक असमंजस व विरोधाभास वाली स्थिति उत्पन्न करते चले गए। ऑटोमेशन (स्वचालन पद्धति) ने नई–नई जटिल मशीनों का निर्माण किया। जिसमें प्रारंभ में लागत अधिक लगने पर भी अत्यधिक लाभांश मिलने की पूरी संभावना थी, किंतु रोजगार के अवसर उतने ही कम होते चले गए। कम श्रमिक, कम लेबर, यूनियन समस्या, अधिक उत्पादन, अधिक लाभ इस नीति ने ऐसा जोर पकड़ा है कि क्रमशः टेक्नालॉजी सुपर टेक्नालॉजी में बदलती गई व आज की विद्रूपता भरी स्थिति खड़ी हो गई, जिसमें अगणित श्रमिक एवं शिक्षित बेरोजगारों की भीड़ खड़ी दिखाई देती है। इस औद्योगीकरण ने पर्यावरण को भी अपूर्णनीय क्षति पहुँचाई है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुटीर उद्योगों के साथ सुविधा–सामग्री का अभाव, हर जगह उनका उपलब्ध न होना, अधिक श्रम की माँग जैसे पक्ष जुड़े होने से यह स्वाभाविक ही था कि क्रमशः हस्त उद्योग गिरते चले जाएँ एवं उनके स्थान पर कस्बा स्तर तक भी उत्पादन प्रधान बड़े उद्योग लग जाएँ। इसे हीन भावना एवं श्रम की अवमानना का समन्वय ही कहना चाहिए कि विदेशी आयात की हुई वस्तुएँ या बड़ी मिलों से निकली सामग्रियाँ अधिक आकर्षक लगने लगती हैं एवं उपभेक्ता के संबंध में यह मान्यता दर्शकों की बनती है कि वह कदरदान है, कृपण या निर्धन नहीं। ऐसी मनःस्थिति में स्वाभाविक है कि सोफियानी वस्तुओं की खरीद ही होगी, वह भी अनावश्यक, चाहे वे देशी हों या विदेशी।

○ जहरीले साँप रूपी औद्योगीकरण को हटाना ही होगा

आज विश्व के सभी मनीषियों, अर्थ विशेषज्ञों, समाज विज्ञानियों का कहना है कि यदि समाज को ढहने से बचाना है, तो ग्रामों को व कुटीर उद्योगों को फिर जिंदा करना होगा। मशीनीकरण, शहरीकरण के साथ निष्ठुरता–शुष्कता का समन्वय यह बताता है कि आने वाले समय में जैसे–जैसे शहर फूलेंगे, उनका विस्तार होगा। समस्याएँ और बढ़ेंगी तथा अंततः उन विभीषिकाओं को आमंत्रित करेंगी, जिनसे पश्चिम जगत को न केवल परेशान होना पड़ रहा है, अपितु महाविनाश की तलवार ऊपर लटकती देख सतत भयाक्रांत होकर जीना पड़ रहा है।

डॉ० इ० एफ० शुमाकर (१९१०–१९७७) जिन्हें गाँधीवादी अर्थशास्त्र का एक प्रमुख प्रवक्ता माना जाता रहा है, अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *"स्माल इज ब्युटीफुल"* में लिखते हैं कि—"हमें भोगवादी प्रौद्योगिकी का मुकाबला करने के लिए मानवमुखी प्रौद्योगिकी का विकास करना होगा, जो मनुष्य के हाथों और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिमाग को बेकार बनाने के बजाय उन्हें पहले की अपेक्षा अधिक उत्पादक बनाने में सहायक हों।" वे कहते हैं कि—"बड़े पैमाने के उत्पादन की प्रौद्योगिकी हिंसक, पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाली, संसाधनों के समाप्त होते चले जाने की दृष्टि से आत्मघातक और मनुष्य को नकारा बना देने वाली है। इसके विपरीत बहुत-से लोगों द्वारा छोटे पैमाने पर उत्पादन की प्रौद्योगिकी अच्छी से अच्छी, आधुनिकतम जानकारी व अनुभव का उपयोग करते हुए विकेंद्रीकरण में सहायक होती है, पर्यावरण से छेड़खानी नहीं करती, दुर्लभ संसाधनों के प्रयोग में संवेदनशील होती है तथा मनुष्य को मशीन का दास नहीं बनाती, उनकी सेवा करती है। इसे *'मध्यवर्ती प्रौद्योगिकी'* भी कहा जा सकता है, जो आने वाले समाज में मानव समाज के विकास का प्रमुख आधार बनेगी।"

श्री शुमाकर का उपर्युक्त कथन दूरदर्शितापूर्ण है, एवं आज जब हम इक्कीसवीं सदी के कगार पर खड़े हैं, यह और भी सही प्रतीत होता है। जब शहरों में, गंदी बस्तियों में हैजा फैलता है, तो सब वहाँ से भागने लगते हैं। कहीं अग्निकांड हो जाय, तो भले ही सब कुछ जीवन भर का सँजोया उपार्जन नष्ट हो जाय, पहले जान बचाने की पड़ती है एवं भागने की प्रवृत्ति चल पड़ती है। भूकंप आने के पूर्व जानवरों को पूर्वाभास होने लगता है एवं वे उस स्थान से पहले ही भाग जाते हैं। अगले दिनों यही होने जा रहा है। औद्योगीकरण ने शहरों को फैलाया, विस्तार दिया, श्रमिकों की फौज खड़ी कर दी, आवास की सारी व्यवस्था को छिन्न-भिन्न कर गंदी बस्तियों में रहने के लिए उन्हीं को विवश किया, जो गाँवों से काम के लिए भागकर शहर आए थे। अब प्रकृति ऐसी व्यवस्था कर रही है कि शहरों की बुराइयाँ ही शहरवासियों को वहाँ से भगाएँ, ताकि वे प्रकृति के साहचर्य में शरण ले सकें। आदमी विलासी न बनकर उद्यमपरायण हो, भले ही हाथ से छोटी-मोटी खेती करे या एक या दो हार्स पावर की मशीनों से न्यूनतम प्रदूषण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पैदा करने वाला उत्पादक उद्योग वह शहरों से दूर रहकर संपादित करे।

यह पूर्वाभास सहज ही उन सबको हो रहा है जो दैवीसत्ता से परोक्ष रूप से जुड़े हैं। चिंतक-मनीषी वर्ग के दिव्यदृष्टि संपन्न लोगों का कहना है कि—"व्यक्ति अब शहर से पलायन कर उद्योगों-प्रदूषण से भरे माहौल से भागकर प्रकृति की शरण में आएगा, खोदी खाई को पाटेगा तथा पुनः ग्रामीण परिकर की समस्वरता को स्थापित कर सारे आवास-प्रौद्योगिकी तंत्र का विकेंद्रीकरण करेगा।"

यह तो नहीं मान लेना चाहिए कि यह सब अनायास रातों-रात ही हो जाएगा, क्योंकि जिन धनाध्यक्षों के हाथ में औद्योगीकरण है, वे अपना लाभ छोड़कर, छोटे उद्योगों में अपनी पूँजी लगाकर अधिक श्रमिकों को अधिक काम एकाएक दे देंगे, मलाई छोड़कर छाछ पर संतोष करने के लिए तैयार हो जाएँगे, यह भी तो तर्कसंगत नहीं लगता। परंतु विश्वास क्रिया की प्रतिक्रिया वाले सिद्धांत पर किया जाना चाहिए। औद्योगीकृत नगरों के रहन-सहन ने जो-जो भी आदतें जनसाधारण को दी हैं, वे उनके पलायन का कारण बनेंगी। नशाखोरी उनमें चरम सीमा पर है। स्मैक, हैरोइन, चरस, तंबाकू से लेकर देशी शराब में ही मजूरों-रहवासियों का सारा उपार्जन व स्वास्थ्य नष्ट होता चला जा रहा है। यही आदतें उनके परिवारज़नों को भी लग चुकी है। परिणाम आर्थिक कंगाली एवं अस्वास्थ्यकर परिस्थितियों के रूप में सामने हैं। ऐसे लोगों को शहरों की सुविधा का प्रलोभन छोड़कर दूर जाना ही होगा। मध्य वर्ग व उच्च वर्ग के लोगों में भी अब ये आदतें तेजी से प्रविष्ट होती जा रही हैं। अंततः बसेरा उन्हें भी बाहर खोजना होगा।

साँप चमकीला-आकर्षक दिखाई पड़ता है, किंतु जहरीला होता है। बिच्छू आकर्षक व खिलौनों के समान बच्चों को प्रतीत होता है। किंतु हाथ लगाते ही वह जलन भरा विष अंदर प्रविष्ट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करा देता है। शहर के आकर्षण इसी प्रकार के हैं। औद्योगीकरण इसी विषाक्तता किंतु बाह्य आकार एवं पूँजी प्रलोभन के कारण शहरों-कस्बों को फैलाता-बढ़ाता व जनशक्ति के साथ संकटों को भी आमंत्रित करता चला जा रहा है। उसे अब अपनी मौत मरना ही होगा, यह इक्कीसवीं सदी की प्रमुख-शक्ति—जनशक्ति का कहना है।

अब आदमी के मानस का ऐसा विकास होने जा रहा है कि वह स्वयं को ऐसे आकर्षणों से बचाएगा। बदन टूटना, जम्हाई लेना बुखार आने का पूर्व संकेत है। अभी से यह संकेत बदलती परिस्थितियाँ दे रही हैं कि बड़े उद्योगों की अभिवृद्धि का क्रम रुकेगा एवं छोटे कुटीर-उद्योगों को प्रश्रय मिलेगा। लोग गाँवों में, छोटे कस्बों में, सीमित सुविधाओं में रहना अधिक पसंद करेंगे। इन्हें नवयुग की आधारशिला रखने वाले कम्यून भी कह सकते हैं। दैवी प्रेरणा यह कहती है कि यह सब होकर के रहेगा, क्योंकि प्रकृति यही चाहती है। चाहे मानव ऐसा विवश होकर करे तो भी उसे शहरों से गाँवों की ओर, बड़े उद्योगों से लघु उद्योगों की ओर उन्मुख होना ही पड़ेगा, यह ऋषिसत्ता की अंतःस्फुरणा है।

☆ ऐसी धरती की कल्पना तो कीजिए !

जिसमें पृथ्वी में स्त्रियाँ तो होंगी, किंतु पुरुष नाम की कोई सत्ता नहीं होगी। तब फिर बेचारी नारी अकेली सृष्टिसंचालन का कार्य किस तरह चला पायेगी ? अधिक से अधिक एक शताब्दी अपनी जीवन ज्योति जलाए रख सके। वह बुझ गई तो आज की धरती की भी वही स्थिति होगी, जो निर्जन और बीहड़ चंद्रमा, मंगल या मानवविहीन किसी भी अन्य ग्रह-नक्षत्र की है।

बात न तो हँसी की है न पागल-प्रलाप की। आधुनिक सभ्यता, प्रगति और मनुष्य के हाथ मिट्टी न लगे—उसे कम से कम शारीरिक श्रम करना पड़े—यह धारणा ही उक्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिस्थितियाँ उत्पन्न करने जा रही है। औद्योगीकरण के नाम पर खड़े किए जा रहे बड़े-बड़े कल कारखाने, तीव्र गति के निरंतर बढ़ते वाहन तथा अणु आयुधों सहित निरंतर बढ़ रही युद्ध की विभीषिकाएँ—यह सब निरंतर वातावरण को विषैली गैसों से भरती जा रही हैं। पर्यावरण दूषण की समस्या न केवल वायुमंडल में छाती चली जा रही है, अपितु जीवन के लिए अत्यावश्यक जल को भी विषाक्त बनाती चली जा रही है। जैसे-जैसे यह विष बढ़ता जा रहा है, घुटन, स्वास्थ्य में गिरावट और अनेक तरह की नई तथा असाध्य बीमारियों के आगे अब वह आनुवंशिकी को भी नष्ट करने पर तुल गई है। वैज्ञानिक और विचारक इन तथ्यों को लेकर बुरी तरह चिंतित है। बचाव के उपायों का अनुसंधान भी चल रहा है, पर मूल कारण नष्ट करने की अपेक्षा उन्हें और बढ़ावा मिलता रहेगा तो अकेले चिंता करने मात्र से क्या कुछ बन पड़ेगा ?

मिलान (इटली) के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो० कार्लो सिरतोरी ने अपनी वैज्ञानिक शोधों के आधार पर बताया है कि, जल्दी ही वह युग आ रहा है जब धरती पर से पुरुष सत्ता का नामोनिशान मिट जाएगा। यह इसलिए संभावित है कि, पर्यावरण प्रदूषण इस हद तक बढ़ गया है कि उससे भ्रूण में नर लिंग निर्धारित करने वाले गुणसूत्र (क्रोमोसोम) नष्ट हो जाते हैं। ऐसा इसलिए होता है कि, समूचे भ्रूण में यह गुणसूत्र उतने अधिक कोमल तथा संवेदनशील होते हैं कि वे वायु प्रदूषण की निर्धारित सीमा से अधिक सहन करने में असमर्थ होते हैं। जिन देशों और क्षेत्रों में दूषण का घनत्व बढ़ा है, वहाँ यह संकट अभी से दीखने लगा है और वहाँ अभी से आने वाली नई संतति यह विकार लेकर जन्म ले रही है। अभी तो स्थिति उनकी शरीर रचना में अनियमितता, जन्मजात अपंगता के ही दृश्य उपस्थित कर रही हैं, पर एक समय वह भी आयेगा जब वे धरती पर जीवित उपस्थित होने से ही मना कर देंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्थिति यह है कि अकेली दिल्ली में मोटर बसों, रेलगाड़ियों आदि से प्रति दिन ३० टन हाइड्रोजन कार्बन, २४० टन कार्बन डाइ-ऑक्साइड तथा २० टन नाइट्रोजन ऑक्साइड हवा को गंदा करके विष घोल देते हैं। विद्युत् के कारण ५० टन पलाई ऐश, ७० टन सल्फर डाइ-ऑक्साइड तथा ४०० किलोग्राम आर्सेनिक विष समुदाय दिल्लीवासियों की देह में आधिपत्य जमा लेते हैं। शेष देश की कल्पना करने से तो बुद्धि चकरा जाएगी।

एक ही उपाय है—मनुष्य शहरीकरण की प्रवृत्ति का शिकार होने से बचे। औद्योगीकरण का बायकाट करे तथा प्राकृतिक जीवन की ओर लौटे। दूषण का सामना करने वाले साधन-यज्ञ, वृक्षारोपण, पुष्पोद्यान के प्रचलन में रुचि ली जाए और उन्हें मानवता की रक्षा के पुण्य के रूप में महत्ता प्रदान की जाए। यदि वह नहीं कर सकते, तब भी तो उसी नृशंस कांड के लिए तैयार रहना होगा, जिसकी आशंका डॉ० सिरतोरी ने व्यक्त की है।

❑ ❑

www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मृदा प्रदूषण ! कैसे हो समाधान ?

आज ही सब कुछ पा लेने के लोभ में आने वाले कल की दुर्दशा बना देने को नासमझी के सिवा और क्या कहेंगे ? यह नासमझी जितनी अधिक कृषि क्षेत्र में हुई है, उतनी शायद और कही नहीं। एकबारगी खेतों से सब कुछ छीन लेने की सनक के कारण-रासायनिक खादों एवं कीटनाशक दवाइयों का प्रचलन इधर बेतहाशा बढ़ा है। इस प्रचलन से तात्कालिक राहत तो जरूर मिली है, खेतों में उत्पादन भी बढ़ा है। लेकिन इन तात्कालिक लाभों के पीछे क्या छुपा है, यह जानने की शायद हममें से किसी ने कोई जरूरत नहीं समझी।

हमारे आज के कारनामे, हमें कल क्या परिणाम देंगे ? इस सत्य पर यदि हम विचार करें, तो उस लालची आदमी का किस्सा हमारी आँखों के सामने तैरने लगेगा, जिसने एक साथ सारे सोने के अंडे पा लेने के लिए बेचारी मुर्गी की जान ले ली। रासायनिक खाद के उपयोग के संबंध में भी कुछ ऐसी ही बात है। इसके उपयोग से थोड़े समय के लिए उत्पादन तो जरूर बढ़ता है, किंतु इसके साथ ही मिट्टी में विद्यमान जैविक पोषक तत्त्वों का नाश होता है। साथ ही मिट्टी की प्राकृतिक संरचना भी विकृत हो जाती है। जिन खेतों में रासायनिक उर्वरकों का उपयोग किया जाता है, उनमें पानी की माँग भी बढ़ जाती है। उत्पादन की मात्रा बरकरार रखने के लिए दूसरी-तीसरी बार क्रमशः ज्यादा रसायनों का प्रयोग करना पड़ता है, जिससे खर्चा बढ़ने के साथ मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरता नष्ट होने की दर भी बढ़ जाती है।

वनों के काटे जाने से भू-स्खलन या मिट्टी का कटाव अधिक हो गया है, जिससे उपजाऊ मिट्टी बह जाती है और जमीन में मिट्टी के ढेले या पत्थर मात्र रह जाते हैं। इस प्रकार भूमि की उर्वरा शक्ति कम होती जा रही है। खनन-कार्यों द्वारा भी धरती की परिस्थितिकी को बिगाड़ा गया है। जहाँ भी खनन का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कार्य किया जाता है, वहाँ की भूमि न तो कृषि और न ही वन प्रदेश के लायक रहती है।

अब यह आवश्यक हो गया है कि हमें अपनी जमीन और जमीन के संसाधनों को संरक्षण की दृष्टि से अधिक महत्त्व देना होगा। यह एक गूढ़ सत्य है कि, धरती ही वह एकमात्र स्रोत है, जिससे हम मनुष्यों को सभी प्रकार की संपदा हस्तगत होती है। अन्न, कपड़े, खनिज तथा जीवनयापन के सभी साधन धरती माँ की कृपा से ही प्राप्त होते हैं।

☆ प्रकृति के साथ विवेकसम्मत व्यवहार करें

पिछले दिनों अपने ही देश में उर्वरक के बेतहाशा प्रयोग से उपजी एक समस्या प्रकाश में आई।

पंजाब के लुधियाना जिले के कंगनवाल गाँव में देखा गया कि जिंक उर्वरक के कारण खेतों में लौह तत्त्व एवं मैगनीज की कमी हो गई। अन्य पाँच गाँवों में ताँबे की कमी पाई गई। अध्ययन के दौरान यह भी देखने को मिला कि, जिंक डालने से ८० से ६० प्रतिशत भू-भाग ऐसे रूप में बदल जाता है, जो पौधों के काम नहीं आता।

रासायनिक खादों की तरह कीटनाशक दवाइयों के दुष्परिणाम सामने आए हैं। पिछले कुछ सालों में इनके उपयोग में भी कई गुना बढ़ोत्तरी हुई है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि, भारत में प्रतिवर्ष ५ लाख टन से भी ज्यादा कीटनाशक रसायन उपयोग में लाए जाते हैं। बिना सोचे-समझे किए गए इस उपयोग से समस्या का समाधान होने की बजाय परिस्थितियाँ और अधिक उलझती जा रही हैं। देखने को यह मिला है कि, कई बार कीटनाशकों के उपयोग से कीटों की संख्या और बढ़ी है। इस बढ़ोत्तरी को वैज्ञानिक भाषा में 'अपसेट्स' कहते हैं, जो कल्पनातीत ढंग से होती है। कई बार इसे मूल संख्या से १२०० गुना तक बढ़ते हुए देखा गया है। इस क्रम में यह भी पाया गया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है कि, कीटों की प्रजातियाँ अपनी प्रतिरोधी क्षमता को इस कदर बढ़ा लेती हैं कि उन पर कीटनाशकों का कोई प्रभाव नहीं होता है। हाँ, भूमि के उपयोगी तत्त्व जरूर विकृत हो जाते हैं। इस कारण एक के बाद एक नए-नए तरीके के कीटनाशकों का अनुसंधान करना पड़ता है। इस कार्य में होने वाले भारी-भरकम खर्चे के परिणाम में बरबादी के सिवा और कुछ हाथ नहीं लगता।

इन फसलनाशी कीटों की प्रतिरोधी क्षमता ज्यामितीय अनुपात में बढ़ती देखी गई है। सन् १९५० में केवल २० प्रतिशत कीट प्रजातियाँ ही कीटनाशकों के खिलाफ प्रतिरोध की क्षमता रखती थीं। वर्तमान वर्ष तक यह क्रमिक वृद्धि लगभग ५०० कीट प्रजातियों तक जा पहुँची है। विशेषज्ञों ने अपने अध्ययन के दौरान इस दशा को खेतों में ही नहीं, घरों में भी बरकरार अनुभव किया है। उनके अनुसार कई सालों से डी० डी० टी० की फुहार के बाद हिमालय क्षेत्र में खटमलों की संख्या हद से अधिक बढ़ गई। यह बढ़ोत्तरी उनकी संख्या में ही नहीं, कद में भी पाई गई। ये पहले की अपेक्षा कहीं अधिक बढ़े, अधिक रक्त चूसने वाले एवं अधिक चमकदार थे।

कीटनाशकों के बढ़ते उपयोग की वजह से इनके अंश भी खाद्य पदार्थों में पाए जाने लगे हैं। अन्न, शाक, सब्जी ही नहीं—मांस, मछली और जल भी इनके प्रभाव से अछूता नहीं रहा। इनके खाने से होने वाले प्रभाव विविध रोगों के रूप में प्रकट होते देखे जा सकते हैं, कीटनाशकों की वजह से होने वाली मौत की पहली घटना केरल में हुई थी। जहाँ पैरपियान कीटनाशक रसायनयुक्त गेहूँ के उपयोग से १०० लोग मरे थे।

फसलों में इस तरह के रसायनों का उपयोग जब भी किया जाता है, उनका ५० प्रतिशत से अधिक भाग जमीन पर ही पड़ता है। मिट्टी में डाले गए डी० डी० टी०, गैमेक्सीन, एल्ट्रिन, क्लोरोडेन के अवशेषों के जहरीले असर को क्रमशः ८, १०, ११, १२ सालों तक मौजूद पाया गया है। खरपतवारनाशी रसायनों के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अवशेषी अंश भी ६ से ३६ महीनों तक बने रहते हैं। इस तरह के प्रयोग में नासमझी की हद तो यहाँ तक है कि, जिन कीटनाशी रसायनों को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने जहरीला एवं नुकसानदेह घोषित कर दिया है, अपने देश के किसान जानकारी के अभाव में उनका भी खुलकर प्रयोग कर रहे हैं। ऐसे रसायनों में डी० डी० टी०, वी० एच० सी०, हेक्टाक्लोर, २-४ डीफास्वेल, डेस्डिन, क्लोरोडेन प्रमुख हैं, जिन्हें विकसित देशों में प्रतिबंधित किया जा चुका है। लेकिन न जाने क्यों, अपने यहाँ इनके उपयोग में बढ़ोत्तरी होती जा रही है!

रासायनिक खादों के विकल्प में परंपरागत रूप में उपयोग की जाने वाली खादों को आज भी प्रभावी पाया गया है। सनई, ढेंचा, आदि की बुवाई और इनके पौधों की बाद में जुताई करके मिट्टी में मिला देने से उर्वरता में असामान्य वृद्धि होती देखी गई है। विभिन्न पशुओं के गोबर की खाद का भी कम मूल्य नहीं है। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के प्रयोगों से सिद्ध हुआ है कि, मक्का, गेहूँ और चना के लिए जिंक की पूर्ति करने में मुर्गी की खाद एवं सुअरों की खाद उपयुक्त है। इसी तरह फली वाली फसलों व हरी खाद से मिट्टी के प्रायः सभी पोषक तत्त्व आ जाते हैं। मिट्टी में लोहा व मैगनीज की कमी पूरा करने में खेत को लंबे समय तक पानी में डुबाए रखना भी एक अच्छा उपाय है। रासायनिक उर्वरकों की जगह नीलहरित शैवाल और राइजोवियम जैसे उर्वरक भी विकल्प के रूप में सामने आते रहे हैं।

पश्चिमी बंगाल के सुंदरवन दलदल क्षेत्र में नीलहरित शैल के प्रयोग से उत्साहवर्द्धक परिणाम आए हैं, इससे धान की पैदावार में ७ प्रतिशत तक बढ़ोत्तरी देखी गयी है। भूमि-खाद्यान्न एवं पर्यावरण तथा कीटनाशी रसायन और रासायनिक खादों के दुष्प्रभावों को देखते हुए इनके विकल्प की खोज जरूरी है। विकल्प के रूप में उन प्राकृतिक तौर-तरीकों को अपनाया जा सकता है—जो आज भी बेहद प्रभावी हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हालैंड में कृषि का मुख्य उत्पादन फूल है, जिनमें गुलाब का फूल प्रमुख है। गुलाब के फूल में कुछ गोल कृमि लगे पाए गए। लेकिन जहाँ आस-पास गेंदे के फूल थे, वहाँ इन कृमियों का कोई प्रभाव नहीं था। इस तरह गेंदे के फूलों द्वारा गुलाब को इन कृमियों से सुरक्षित किया गया।

कुछ कीट-पतंगे भी इस कार्य में सहायक सिद्ध होते देखे गए हैं। अमेरिका के पूर्वी तट पर एक वनस्पति उग आई, जो किसी भी तरह उपयोगी न थी, साथ ही पशुओं के लिए हानिकारक भी थी। देखते-देखते यह २५ लाख हेक्टेयर भूमि में फैल गई। यूरोप में इसका कोई प्रभाव नहीं था, क्योंकि वहाँ इसके दुश्मन दो भृंग थे। सन् १९४८ में इनका आयात किया गया। इनके असर से सन् १९५९ तक अमेरिका में मात्र १ प्रतिशत ही यह वनस्पति रह गई।

आस्ट्रेलिया ने १८वीं शताब्दी में कैक्टस मँगवाया, जो इतना बढ़ा कि इसने ६ करोड़ एकड़ भूमि को अपने कब्जे में कर लिया। लगने लगा कि वृद्धि दर यदि यही बनी रही, तो अन्न उपजाने के लिए जमीन न मिलेगी। स्थिति को नियंत्रण में लाने के लिए तरह-तरह के रसायन छिड़के गए, किंतु कुछ भी असर न हुआ। वर्ष १९३० में अर्जेंटीना से पतंगों की एक प्रजाति के तीन अरब अंडों का आयात किया गया। जिससे उत्पन्न होने वाले पतंगों के प्रभाव से ७ सालों में ही कैक्टस की समाप्ति हो गई। इसमें खर्च मात्र १० पैसा प्रति एकड़ आया था। जबकि रासायनिक छिड़काव का खर्च १५० रुपए प्रति एकड़ था। अनावश्यक का बढ़ाव रोकने की प्रकृति की यह प्रक्रिया इकोलॉजी के सिद्धांत के अंतर्गत सहज कार्य करती देखी जा सकती है।

नीम जैसे कुछ पौधे भी कीटों पर नियंत्रण बनाए रखने में अपनी सक्षमता प्रदर्शित करते देखे गए हैं। परंपरागत बीज का उपयोग कीट एवं कई तरह के रोगों के विरुद्ध सक्षम है। कुछ पक्षी भी इसमें अपनी भूमिका निभाते देखे गए हैं। कुछ सालों पूर्व

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चीन ने फसलों को हानि पहुँचाने के कारण गौरैया पक्षी को नष्ट कर दिया था। लेकिन इसका दुष्परिणाम यह रहा है कि वहाँ चावल का एक दाना भी नहीं पैदा हुआ, क्योंकि गौरैया धान के साथ एक कीड़ा भी खाती थी। गौरेया के नाश के बाद यह कीड़ा खूब पनपा। पूरी फसल नष्ट हो गई। अंत में चीन ने ४०,००० गौरैयों का आयात किया, जिससे समाधान हो गया।

इस तरह प्राकृतिक नियंत्रण की दिशा में नए-नए प्रयोग भी किए गए हैं। विकिरण द्वारा हानिकारक कीटों को निर्बीज करके वंश को ही समाप्त करने के प्रयोग हुए हैं। दूसरा कृत्रिम प्रजनन द्वारा नए कीटों की संख्या बढ़ाई गई। जिससे वे आपस में ही समाप्त हो जाएँ। इन तरीकों के अलावा एक तरीका सूझबूझ का भी है, जिसको अपनाकर हम प्रकृति के जैवचक्र को समझें, तदनुरूप विवेकसम्मत व्यवहार करें। साथ ही उन तथ्यों में भी हम कुछ लाभदायक तत्त्वों को खोजें, जिन्हें अति आधुनिकतावादी बनने की सनक में हम छोड़ चुके हैं। प्रकृति का सहयोग पाने की दिशा में इस अन्वेषण-अनुसंधान में हमें बहुत कुछ ऐसा मिल सकेगा, जिसे अपनाकर न केवल हम कीटनाशी रसायनों एवं रासायनिक खादों के आत्मघाती तरीके को छोड़ सकते हैं, बल्कि ऐसा कुछ सार्थक कर सकते हैं, जिससे हमारी भावी पीढ़ियाँ भी उर्वरक धरती में लहलहाती फसलों का आनंद उठा सकें।

☆ हिमालय से छेड़छाड़ बंद हो

इन दिनों न तो साँस लेने के लिए शुद्ध हवा है, न पीने को स्वच्छ जल, यहाँ तक कि मिट्टी भी विषैले रसायनों के कारण निरापद नहीं रही। ऐसी स्थिति में ध्यान अनायास प्राकृतिक वातावरण की ओर खिंच जाता है। अब तक वन्य प्रांतर ही ऐसे क्षेत्र थे, जिन्हें इन सबसे अछूता कहा जा सकता था; पर पर्यटकों की बढ़ती भीड़ ने इन्हें कहीं का न रखा। वन-पर्वत सभी धीरे-धीरे इसकी चपेट में आ रहे हैं। अन्यों की स्थिति तो फिर भी ठीक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कही जा सकती है, पर जिस दिव्यता के लिए हिमालय को पहचाना और बखाना जाता था, वह भी अब दयनीयता की कहानी कहने लगा है।

हिमालय को 'देवात्मा' कहा गया है। इसके दो कारण हैं। वहाँ का वातावरण इतना शांत, मनोहारी और रमणीक है कि यहाँ आकर फिर जनसंकुल वातावरण में लौटने की इच्छा नहीं होती। यह स्थूल वातावरण की चरचा हुई। वहाँ का सूक्ष्म वातावरण इतना प्राणवान, प्रखर और ऊर्जा से ओत–प्रोत है कि दृश्य–अदृश्य का यह अद्भुत समन्वय उसे ऐसी दिव्यता प्रदान करता है, जिसे 'देवात्मा' कहना ही उचित होगा। सूक्ष्म शरीरधारी तपस्वियों और स्थूल देहधारी योगियों की उपस्थिति के कारण भी वह 'देवात्मा' कहलाने योग्य है। आरंभ में हिमालय का यह देवत्वयुक्त वातावरण ही लोगों को आकर्षित करता था। साधक स्तर के लोग बीच–बीच में थोड़े दिनों के लिए वहाँ जाकर निवास और साधना करते, फिर लौट आते। प्रकृतिप्रेमी वहाँ के चित्ताकर्षक सौंदर्य के कारण उस ओर की यात्रा करते और सप्ताह–दो–सप्ताह के पर्यटन के बाद वापस आ जाते, किंतु ५० के दशक में एक तीसरे प्रकार के अभियान की शुरूआत हुई। जो हिमालय अब तक अपनी दिव्यता और सुंदरता के कारण साधकों एवं सैलानियों को आकर्षित करता था, वही अब अपनी सर्वोच्चता के लिए पर्वतारोहियों के आकर्षण का केंद्र बना। दुनिया की सबसे ऊँची चोटी 'एवरेस्ट' यहीं है। कुछ साहसी किस्म के पर्वतारोही उस पर चढ़ने का लोभ संवरण नहीं कर सके। इसी क्रम में सन् १९५३ में न्यूजीलैंड के एडमंड हिलेरी और गोरखा तेनजिंग नोरगे ने सर्वप्रथम उस सर्वोच्च शिखर पर चढ़कर अपनी विजय–पताका फहराई। इसके बाद से तो ऐसे अभियानों की मानो बाढ़–सी आ गई। हर वर्ष कई–कई दल आरोहण के लिए प्रस्थान करते और सफल–असफल होकर लौट आते। अनेक इस प्रयास में काल–कवलित भी हो जाते।

यहीं से हिमालय की दुर्दशा की शुरूआत हुई। आदमी की इन दिनों मानसिकता ऐसी बन गई है कि वह जहाँ कहीं भी जाता या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहता है, वहाँ के पर्यावरण से छेड़-छाड़ अवश्य करता है। यही इस पर्वतराज के साथ हुआ। जब पर्वतारोहण बड़े पैमाने पर आरंभ हुआ, तो पर्यावरण नष्ट होने लगा। यह स्वाभाविक है कि, हिमालय जैसे पर्वत के एवरेस्ट जैसे दुर्गम शिखर की यात्रा के लिए कोई प्रयाण करेगा, तो उसके साथ वह सारे सामान और साधन भी होंगे, जो इस विषम परिस्थिति का सामना करने और जीवनरक्षा की दृष्टि से अभीष्ट और आवश्यक हों। इस उतुंग ऊँचाई में ऑक्सीजन की विरलता का सामना करने के लिए ऑक्सीजन सिलेंडर भी होना चाहिए और मज्जा तक ठिठुराने वाली ठंड से बचने एवं गरम पेयों द्वारा शरीर की रक्षा करने के लिए स्टोव भी आवश्यक है। इसके अतिरिक्त गर्म कपड़े, कंबल, स्वेटर, कोट, जूते, मौजे यह भी अभीष्ट हैं। बरफीली हवाओं से बचने के लिए तंबू और उन्हें गाड़ने वाले सामान भी चाहिए। बरफ काटने वाली कुल्हाड़ी, जीवनरक्षक दवाएँ, इनके अतिरिक्त अन्य कितनी ही नितांत वस्तुओं की जरूरत पड़ती है, जो साथ रख ले जाना पड़ता है। इन सबको गट्ठर बाँधकर तो ले जाया नहीं जा सकता, इसके लिए बड़े-बड़े कार्टूनों, कनस्तरों और डिब्बों की आवश्यकता पड़ती है। सारे सामान को इनमें पैकबंद किया जाता है, फिर बड़ी-बड़ी पॉलीथिन चादरों में उन्हें लपेटा जाता है, ताकि बारिश अथवा हिमपात से उनकी सुरक्षा की जा सके। इतना सामान पर्वतारोही स्वयं लेकर यात्रा कर नहीं सकते। इन्हें ढोने के लिए मजदूर और जानवर चाहिए। बारह सदस्यों वाले दल के साथ औसतन ३५-४० मजदूर और करीब इतने ही भारवाहक खच्चर अथवा पहाड़ी बकरे होते हैं। इन जानवरों को भी खुराक चाहिए, सो वे आस-पास की हरियाली का सफाया करते चलते हैं। उन्हें शीत निवारण के लिए गरमी चाहिए, अतः वे मार्ग में पड़ने वाले वृक्षों को काट डालते हैं। इसके अलावा जहाँ शिविर लगाया जाता है, वहाँ के वृक्ष-वनस्पतियाँ नष्ट हो जाते हैं।

यह उस क्षति की चर्चा हुई, जो पर्वतारोही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्यावरण को पहुँचाते हैं। इसका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक अन्य पहलू भी है। हिमालय के लिए सर्वाधिक खतरनाक यही सिद्ध हो रहा है। अभियान दल जब सफल-असफल होकर ऊँचे पर्वत शिखर से वापसी यात्रा करते हैं, तो उन्हें जिस सामान के बारे में ऐसा महसूस होता है कि, अब यह उनके लिए अनावश्यक और अनुपयोगी है, उन्हें भार से बचने के लिए वे वहीं चोटी पर अथवा मार्ग में छोड़ते चलते हैं। इस प्रकार पिछले ४६ वर्षों में हिमालय एक विशाल 'जंक-यार्ड-कूड़ाघर' बन गया है।

ऐसा अनुमान है कि एवरेस्ट मार्ग पर शिखर से ठीक पूर्व वाले शिविर-क्षेत्र में २००० से २५०० टन कबाड़ भरा पड़ा है। इनमें कनस्तर, डिब्बे, तंबुओं के वारदाने, खाली ऑक्सीजन सिलैंडर, पॉलीथिन बैग, कार्टून, पुलोवर, जैकेट, स्लीपिंग बैग, बरफ हटाने वाले फावड़े, बरफ काटने वाली कुल्हाड़ियाँ, रस्से, जीवनरक्षक और दर्दनिवारक दवाइयों के पैकेट, व्हीस्की और बियर की बोतलें प्रमुख हैं। इस एवरेस्ट की चढ़ाई को क्या कहा जाए, जिसने ये अभिशाप हमें देवात्माओं की तपोभूमि में धरोहर में दे दिए हैं। पर्वतराज की दूसरी चोटियों के मार्ग पर भी ऐसे कबाड़ों की कमी नहीं। हिमालय पर्यावरण का न्यास का कहना है कि, ऐसा प्रायः सभी शिखरों पर देखा जा सकता है।

नेपाल सरकार ने अब इस ओर ध्यान देना आरंभ किया और प्रथम कदम के रूप में पर्वतारोहण की शुल्क दर ३० हजार डालर से बढ़ाकर ५० हजार डालर कर दी है। इससे भीड़-भाड़ में कुछ कमी तो अवश्य आई है, किंतु फिर भी उनके प्रवाह को पूरी तरह रोक पाना इससे भी संभव न हो सका है। इसके अतिरिक्त उसने हिमालय सफाई अभियान भी चलाया है। इस अभियान के द्वारा बड़े पैमाने में कचरे वहाँ से हटाये गए।

इस निमित्त भारत में भी एक न्यास की स्थापना की गई है, जिसका उद्देश्य विश्व स्तर पर हिमालय के पर्यावरण को सुरक्षित बनाये रखने के लिए जनचेतना जगाना है। इसके अतिरिक्त यह न्यास समय-समय पर सफाई अभियान भी आयोजित करता रहता है। इसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अभियान के परिणामस्वरूप पिछले दिनों एक अमेरिकी हाल वेंडल के नेतृत्व में एक सफाई दल का गठन किया गया। इस दल ने करीब १७०० किलोग्राम कूड़ा साफ किया, साथ ही नेपाल के पर्यटन मंत्रालय को इस बारे में एक विस्तृत रूपरेखा तैयार करके दी है, ताकि शेष बचे कूड़े को भी जल्दी से जल्दी हटाने का कार्य आरंभ किया जा सके।

समस्या का यह कोई वास्तविक और स्थायी हल नहीं है। यथार्थ समाधान तो तभी हो सकेगा, जब हर पर्वतारोही इसे अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझे और उसे स्वच्छ, सुंदर एवं असली रूप में बनाए रखने के लिए सचेष्ट बना रहे अन्यथा सिर्फ सफाई-अभियान के बल पर वहाँ के पर्यावरण को बचाए रख पाना संभव न हो सकेगा, कारण कि मनुष्य की यह सहज और स्वाभाविक वृत्ति है कि वह हर सुदर्शन लगने वाली चीज के साथ छेड़खानी करता है। कहीं कोई बहुत आकर्षक पुष्प खिला हुआ हो, तो वह उसे तोड़कर अपने साथ ले जाने के लिए मचलने लगता है। इस बात को इसकी बुद्धि नहीं सोच पाती कि, इसे उपवन की कितनी शोभा बढ़ती है और कितने लोग यहाँ आकर शांति एवं संतोष की अनुभूति करते हैं, पर स्वार्थी बुद्धि को यह कैसे समझाया जाए कि, समष्टिपरक चिंतन में ही उसकी अपनी भलाई निहित है, व्यष्टिवादी चिंतन तो घोर स्वार्थपरता के अंधकूप में डुबो देता है।

ध्यान देने योग्य तथ्य है कि, पर्यावरण की दृष्टि से हिमालय का महत्त्व हिमालय की तराइयों (इस क्षेत्र) तक ही सीमित नहीं है। देवात्मा हिमालय न केवल विश्व भर में आध्यात्मिक या सूक्ष्म जगत् को प्रभावित करता है, बल्कि भौगोलिक पर्यावरण व परिस्थितिकी में भी उसके प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता। वहाँ से गंगा के द्वारा केवल जड़ी-बूटियों का सत्त्व ही नहीं, महत्त्वपूर्ण रासायनिक तत्त्वों का सम्मिश्रण पानी में विलय होकर आता है। हिमालय की यह देन भारत के बड़े भू-भाग को अधिक उपजाऊ तथा प्रदूषण मुक्त तो करती ही है, साथ ही विशिष्ट तत्त्वों से युक्त गंगाजल का सेवन कर असंख्य प्राणी स्वास्थ्य लाभ करते हैं।

❒ ❒

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"पर्यावरण अनुकूलन और गाय"

भारतीय जनजीवन में गाय और गोबर का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। वेदों से लेकर आज तक जितने भी शास्त्र रचे गए हैं, प्रत्येक में गाय की महत्ता का वर्णन मिलता है। ऋग्वेद में शायद ही कोई ऐसा मंडल हो, जिसमें अग्नि, सूर्य, मरुत आदि देवों से दूध देने वाली गायें अथवा उनसे मिलने वाले अनुदानों की प्रार्थना न की गई हो। भगवान् श्रीकृष्ण, इंद्र और वशिष्ठ सहित सभी अनुकरणीय चरित्रों ने अपने कार्य से गाय की महत्ता को मंडित किया है। गाय के अंग-प्रत्यंग में देवताओं के निवास एवं गौमाता तथा कामधेनु की संज्ञा भले ही अलंकारिक लगता हो, पर वास्तविकता यह है कि गाय के अनुदान-उपहार इतने हैं कि यह समूची मानवता के लिए पालक, पोषक, विपत्तिनाशक और रोग-शोक से त्राण दिलाने वाली है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में गाय का जो स्थान औद्योगिक क्रांति से पूर्व था, वह आज भी ज्यों का त्यों बना हुआ है। विकसित तकनीक देशों में भी दूध से बने पदार्थों में गाय का दूध ही प्रयुक्त होता है। दुनिया में केवल छह देश ऐसे हैं, जहाँ भैंसों का दूध पसंद किया जाता है अथवा भैंसें पाली जाती हैं। ठंडे देशों में भैंसों का पालना यों भी संभव नहीं है। अतः विश्व की अर्थव्यवस्था में गाय का विशेष महत्त्व है। डेरी इंडिया के एक वैज्ञानिक सर्वेक्षण के अनुसार ऊर्जा की मूल रूप में गाय का हिस्सा अभी भी १७ प्रतिशत है। गाय का उपयोग हमारे लिए मात्र दूध तक ही सीमित नहीं हैं। बछड़ा, गोबर, हड्डियाँ और चमड़ा भी अन्य पशुओं की अपेक्षा विशेषता लिए हुए है।

वर्तमान में विकसित राष्ट्रों में अणु आयुध निर्माण की प्रतिस्पर्द्धा है। इनके भयंकर दुष्परिणामों से सभी परिचित हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिकाओं में झुलसे जापान के घाव अभी तक भरे नहीं हैं। नागासाकी, हिरोशिमा में डाले गए अणु बमों से लोग आज भी तिल-तिलकर जीते और मरते रहते हैं। अणुरज के घातक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रभाव से हवा, पानी, वनस्पति, खाद्य आदि सभी पदार्थ दूषित हो जाते हैं। ऐसी घातक रज से किस प्रकार बचाव एवं सुरक्षा संभव है ? विश्व में यह सर्वाधिक चिंता का विषय बना हुआ है। इतना ही नहीं, विश्व के लगभग एक तिहाई देश अणु आयुधों एवं पनडुब्बियों में अणु तकनीक का प्रयोग करने लगे हैं। भू-मंडल का कोई भी भाग शेष नहीं है, जहाँ विकिरण का खतरा उत्पन्न न हो गया हो। अत: अणुरज के घातक प्रभावों से बचाव के लिए किसी ऐसे सुरक्षा कवच की तलाश है, जो सर्वसुलभ, सस्ता और कारगर हो।

गाय के दूध में जहाँ पोषक तत्त्वों की प्रचुरता है, वहाँ उसका गोबर मूत्र रोग निरोधी एवं विकिरणरोधी क्षमता रखते हैं। अणुरज अथवा विकिरण का प्रभाव इतना सूक्ष्म व धीमा होता है कि, उसका प्रत्यक्ष अनुभव मनुष्य के लिए भयानक विस्फोट के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता। इसके दुष्प्रभाव से दमा, कैंसर, लकवा, हृदय रोग, अस्थमा आदि अनेक व्याधियाँ-बीमारियाँ फूट पड़ती हैं। जिनका मनुष्य के पास अभी तक कोई कारगर उपाय-उपचार नहीं है। यह समस्या सारे संसार को चिंतित और व्यथित किए हुए है। इस संबंध में अनेकों शोध किए जा रहे हैं और बचाव के लिए अपार संपत्ति और बेशकीमती समय गँवाया जा रहा है; फिर भी किसी ठोस और कारगर निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा जा सका है। किंतु सोवियत वैज्ञानिक शिरोविच के हाथ एक उपाय लगा है, जिसके सार्थक परिणाम निकलकर सामने आए हैं।

रूस के प्रसिद्ध वैज्ञानिक शिरोविच का कहना है कि, उन्होंने रेडियो विकिरण से बचाव के संबंध में अनेकों प्रयोग किए हैं। उनमें सबसे अधिक कारगर बचाव गाय से प्राप्त उपादानों से संभव है। शिरोविच का कहना है कि, गाय के दूध में रेडियो विकिरण से बचाव एवं सुरक्षा की सर्वाधिक क्षमता है। जिन घरों को गाय के गोबर से लीपा गया, उनमें विकिरण का प्रभाव नगण्य रहा। इसी प्रकार छत अथवा दीवारों पर भी गाय के गोबर के कोटिंग की गई, जिसके परिणाम भी लाभकर और चमत्कृत करने वाले सिद्ध हुए और अणुरज का प्रभाव नगण्य रहा। गो घृत को आग में डालकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जब धुआँ किया गया, तो वायुमंडल में बिखरे रेडियेशन का प्रभाव भी कम हुआ। इससे सिद्ध होता है कि हवन-यज्ञ में प्रयुक्त गो घृत, पंचगव्य इसीलिए लाभकर हैं।

भारतीय आयुर्वेदाचार्यों का भी यही मत है कि, निश्चय ही गाय के गोबर में अणुरज से बचाव की क्षमता है। इसीलिए अनादि काल से गोबर से घर लीपने की भारत के गाँव-गाँव और घर-घर में परंपरा है। कालांतर में गोबर से घर लीपने का धार्मिक महत्त्व समझाया जाने लगा है। वास्तविकता यह है कि, गाय का गोबर और मूत्र दोनों ही घातक वैक्टीरिया और वायरसों को नष्ट करने की क्षमता रखते हैं। इस संबंध में आयुर्वेदाचार्यों का कहना है कि, अणुरज के दुष्प्रभावों से पीड़ित व्यक्ति जो दमा, खाँसी, जीर्णज्वर, अपस्मार, उदर रोग, रक्त-पित्त, अम्ल-पित्त आदि व्याधियों से पीड़ित है, यदि उसे गाय के उपादानों से पंचगव्य (दूध, दही, घी, गोबर, मूत्र) सेवन कराया जाए और शरीर पर गोमूत्र और गोबर लेपकर धूप में सिकाव किया जाए, तदुपरांत स्नान कराया जाए, तो उपरोक्त व्याधियों से मुक्ति पाई जा सकती है। विश्वव्यापी आणविक विकिरण एवं अणुरज के खतरे से बचने के लिए श्री शिरोविच का सुझाव है कि, भूमि के चप्पे-चप्पे पर सुरक्षा कवच बनाया जाय और प्रत्येक व्यक्ति को अपने शरीर को भी इस रक्षाकवच से सुसज्जित करना चाहिए। उनका कहना है कि, प्रत्येक व्यक्ति को इसके लिए गाय का दूध, दही, छाछ, घी आदि का नित्य सेवन करना चाहिए तथा घरों की छत व आँगन, गोबर से लीपने चाहिए तथा दीवारों पर भी गाय के गोबर की कोटिंग करानी चाहिए। फसलों को अणुरज के घातक प्रभाव से मुक्त करने के लिए खेतों में गाय के गोबर की खाद प्रयोग करनी चाहिए। इससे उत्पन्न होने वाले अन्न, शाक-सब्जी, फल आदि भी विकिरण से मुक्त बने रहेंगे। यदि वायुमंडल को भी घातक विकिरण से बचाना हो, तो गाय के शुद्ध घी का हवन किया जाना चाहिए। इस प्रकार के सुरक्षा कवच में गाय के अनुदान ही सहायक हो सकते हैं।

◻◻

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कचरा और पर्यावरण

कचरा गंदगी फैलाता है। घर-आँगन में झाड़ू लगाकर जो कूड़ा निकलता है, उसे कहाँ डाला जाए, इसकी निश्चित योजना नहीं होती। शहरों में तो इसका आधा-अधूरा भाग म्यूनिसिपैलिटी वाले कहीं ले जाते हैं, पर जिन देहातों में वैसी व्यवस्था नहीं है, वहाँ वह गलियों में छितराता रहता है। वर्षा-आँधी में पोखर-तालाबों में जा पहुँचता है और उन्हें बीमारियों का घर बनाता है। उलट-पुलटकर वह गंदगी वहाँ के निवासियों के शरीर से ही जा चिपकती है और अनेक प्रकार के स्वास्थ्य संकट खड़े करती है।

घने शहरों में यह समस्या और भी बढ़ी-चढ़ी है। कचरा तो निकलता ही है। उसे कहाँ पहुँचाया जाए, यह योजना स्पष्ट नहीं रहती, फलतः वह इधर-उधर होकर नालियों में पहुँचता है। नालियाँ सड़ती हैं। गली-कूचों में बिखरती हैं और यह सौगात अंततः वहाँ के रहने वालों के सामान में ही खप जाती हैं।

बड़े कारखानों की समस्या और भी भयावह है, उनमें विषैले रासायनिक पदार्थों का उपयोग होता है। गंदगी समीपवर्ती नदी-नालों में बहाई जाती है। इससे जलाशय गंदे होते हैं। जो पशु-पक्षी, जलचर उसे पीते हैं, वे मरते हैं। उस पानी में कपड़े धोये जाएँ, तो उन्हें पहनने वाले इस विषाक्तता से आक्रांत होते हैं। समुद्र तट वाले बड़े-बड़े महानगरों की गंदगी समुद्र में गिराई जाती है। इससे मछलियाँ मरती हैं या बीमार होने पर खाने वालों के लिए विपत्ति बनती हैं। यह गंदगी समुद्र तल तक पहुँच गई तो वहाँ परत बनकर जम जाती है और धरती के साँस लेने में बाधक बनती है। भू-गर्भ की घुटन ज्वालामुखी, भूकंप आदि के रूप में फूटती है। समुद्री तूफानों का भी एक कारण उस जल में गंदगी का भर जाना है। वह कुछ मात्रा में बादलों के साथ भी उड़ जाती है और जहाँ बरसती है वहाँ रहने वालों के लिए विपत्ति खड़ी करती है। तेल, कोयले से चलने वाले वाहन, संयंत्र जो धुआँ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

छोड़ते हैं, उनसे वायु प्रदूषण बढ़ता है और उस हवा में साँस लेना जीवन को मरण की ओर धकेलता है।

☆ कचरे की समस्या और उसका समाधान

लाभदायक उत्पाद की उपयोगिता से सभी परिचित हैं, पर यह भूल जाते हैं कि, उसे प्रयोग में लाने के बाद जो कचरा बचता है, उसे काम में किस प्रकार लाया जाए और किस प्रकार ठिकाने लगाया जाए ? कचरे की उपेक्षा होती रहती है। अतएव वह पड़ा-पड़ा सड़ने लगता है। सड़न में दुर्गंध आती है, जिसका अर्थ है कि, उसमें विषैलापन बढ़ना आरंभ हो गया है। उसे हटाया या मिटाया जाए, अन्यथा वह जिसके भी संपर्क में आएगा, उसे अपने जैसा विषाक्त बनाएगा।

यह स्थिति उत्पन्न होने देने से पहले यह ध्यान रखा जाए कि, उपयोगी सार तत्त्व ग्रहण करने के उपरांत जो कचरा बचेगा उसको किस प्रकार ठिकाने लगाया जाए। एकांगी प्रयास, उत्पादन करते समय तो अच्छे लगते हैं, पर जब दूसरा पक्ष सामने आता है, कचरे का ढेर बनकर सामने खड़ा होता है, तो सूझ नहीं पड़ता कि इसका क्या किया जाए ? कुछ भी न करने—कचरे का ढेर लगाते चलने पर न केवल जगह घिरती है, कुरूपता बढ़ती है वरन् पर्यावरण भी प्रदूषित होता है। निरर्थक वस्तु की सुनिश्चित नियति जब सड़न के रूप में सामने आती है, तो उससे रोग फैलते हैं और संपर्क में आने वाले पदार्थ बरबाद होते हैं। उत्पादन में हुआ लाभ कचरे की दुर्गति के कारण हानि में बदल जाता है। यह हानि तब और भी बढ़ जाती है, जब ठिकाने लगाने की बात उपेक्षा में डाली जाती है। सड़न का संकट गहराने लगता है।

पेड़ों का पतझड़ होता है। आवश्यक है कि उन पत्तों को समेटकर गड्ढे में गाड़ा जाए और खाद बनाया जाए अन्यथा सूखे पत्तों में आग की चिनगारी लगकर दूर-दूर तक फैले हुए जंगलों और खेतों को जला सकती है। पशु चारा खाते हैं। उनका गोबर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खाद बना लिया जाए तो बुद्धिमानी है, अन्यथा सड़ने वाला गोबर मक्खी, मच्छर और बिच्छू आदि हानिकारक जंतु उत्पन्न करेगा और बदबू से सारा वातावरण बिगाड़ देगा।

अनाज के साथ उसके डंठल-पत्ते भी होते हैं। उनका भूसा बनाकर चारे में प्रयुक्त कर लिया जाए तो ठीक, अन्यथा उसके ढेर लग जाएँगे। वर्षा में गलेगा, गर्मी में उड़ेगा और आग जा पहुँची तो जलकर अपना और संपर्क की वस्तुओं का सफाया करेगा। तेल निकलने के बाद तिलहन से जो खल बनती है, उसे जानवरों को खिला देते हैं, अन्यथा वह भी एक समस्या बन जाए।

शरीर में से मल-मूत्र और पसीना निकलता है। यह जल के रूप में लिए गए आहार का अवशेष है। स्नान करने, कपड़े धोने से पसीने की सफाई हो जाती है। पर मल-मूत्र को शौचालय तक छोड़ने भर का ध्यान रहता है, यह व्यवस्था नहीं बनाई जाती है कि, इस कचरे का गोबर की तरह खाद बनाकर, खेती में उपयोग कर लिया जाए। इस अव्यवस्था का ही परिणाम है कि, नालियाँ सड़ती हैं और बिखरी हुई गंदगी हैजा जैसे रोगों का कारण बनती है। यदि उसका सदुपयोग किया जा सका होता, तो जापान की तरह यहाँ भी मानवीय मल-मूत्र से खाद बनती और खेती, बागवानी में असाधारण रूप से सहायक होती।

मनुष्यों तथा पशुओं के शरीर से गंदगी निकलती है। चूल्हे से लेकर छोटे-बड़े कारखानों तक से हानिकारक गर्मी निकलती है। धुएँ से हानि और भी अधिक है। इससे बचाव कैसे किया जाए ? इसके दो ही उपाय हैं, एक तो आबादी की बसावट दूर-दूर रहे, दूसरे कारखाने इतने छोटे लगाए जाएँ—जिनसे प्रदूषण सीमित मात्रा में निकले और गंदगी आसपास ही खप सके। इसे प्राचीन सभ्यता की ओर लौटना भी कहा जा सकता है, जिसमें ग्राम्य जीवन की ही प्रधानता थी। न घने और बड़े शहर बसते थे और न विशालकाय कारखाने ही खड़े होते थे। द्रुतगामी वाहनों के स्थान पर मंदगामी सवारियों से काम लिया जाता था। समय तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसमें अवश्य कुछ अधिक लगता था, पर उतनी ही अवधि जीवन काल •की भी बढ़ जाती थी। साथ ही वातावरण की स्वच्छता भी बनी रहती थी।

ग्रामीण जीवन में निवास-आवास की आधी व्यवस्था पेड़ संभाल लेते हैं। पशु उनके नीचे हर मौसम में विश्राम कर लेते हैं। मनुष्यों को भी दोपहरी बिताने में सुविधा रहती है। कम इमारतें बनाकर भी काम चल जाता है। वृक्षों को पशुओं की तरह लाभदायक बनाया जा सकता है। वे फल-फूल, छाया, प्राणवायु आदि तो देते ही हैं, पत्ते आवश्यकतानुसार चारे का काम भी दे जाते हैं। मनुष्यों और पशुओं द्वारा छोड़ी गई दूषित वायु को भी सोखते हैं और पर्यावरण का संतुलन बनाए रहते हैं।

आहार-विहार की तरह समुन्नत जीवन के लिए स्वच्छता भी आवश्यक है। उसे जीवनशक्ति का पर्यायवाची मानना चाहिए। गंदगी को स्वनियंत्रित मृत्यु रूप में देखा-समझा जा सकता है। अपने संपर्क और प्रगति क्षेत्र को जितना-अधिक स्वच्छ रखा जा सके, रखना चाहिए। इसे सभ्यता का प्रतिनिधि मानकर पूरे मन से अपनाना चाहिए।

यांत्रिक सभ्यता उत्पादक और शोभायमान तो लगती है, पर उसने जल और थल को ही नहीं, बल्कि नभ को भी प्रदूषण से भर दिया है। वायुयानों, रॉकेटों, उपग्रहों ने आकाश को और भी दूषित बना दिया है। धुएँ की घुटन और ऊर्जा की बढ़ोत्तरी ने वायुमंडल में जो विषाक्तता भरी है, उसमें कमी नहीं हो रही वरन् बढ़ोत्तरी ही होती जा रही है। यह सामूहिक आत्म-हत्या का सुलभ निमंत्रण है। अच्छा हो, हम समय रहते चेतें। ग्राम्य जीवन की पुरातन सभ्यता की ओर लौटें और स्वच्छता पर आधारित शांत जीवन जिए।

☆ कचरा बन सकता है—वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत

इन दिनों विश्वभर में वैकल्पिक ऊर्जा की बात बड़ी गंभीरता से सोची जा रही है। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायोगैस, समुद्र से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऊर्जा, ज्वालामुखी से टर्बाइन चला सकना, इन सभी पर विशाल पैमाने पर प्रयोग किए जा रहे हैं।

अब वैज्ञानिक सोचते हैं कि, क्यों नहीं उन साधनों का उपयोग किया जाए, जो अपने आसपास ही उपलब्ध हैं। कहावत है कि, कभी तो घूरे के दिन फिरते हैं। कूड़ा आज की सबसे बड़ी समस्या है। एक अनुमान के अनुसार—भारत की शहरी आबादी, जो १९८१ की जनगणना के अनुसार १४ करोड़ ३१ लाख है, द्वारा नित्य साढ़े चार टन कचरा दैनंदिन जीवन में काम आने वाली वस्तुओं के उपयोग के बाद फेंक दिया जाता है। अमेरिका, इंग्लैंड, कनाडा, जर्मनी, जापान जैसे संपन्न राष्ट्रों में यह औसत तो प्रति व्यक्ति ५ टन प्रति वर्ष आता है। सोचा यह गया है कि, अब इस कूड़े के ढेर से ऊर्जा प्राप्त की जाए। ब्रिटेन की एक फर्म 'फ्लेमलेस फर्नेसेज' ने एक ऐसा संयंत्र विकसित किया है, जिसमें कूड़े-कचरे को डालकर उसे ६०० डिग्री सेंटीग्रेड पर जलाकर ऊर्जा प्राप्त की जाती है। इसे संचित कर विभिन्न उपयोगों में लिया जा सकता है। यह अन्य ऊर्जा की तुलना में सस्ती व करीब १७ प्रतिशत अधिक है। घर्षण द्वारा पूरी तरह जलने के बाद जो अवशिष्ट राख बचती है, उसे न्यूमेटिक वाहक द्वारा अलग कर दिया जाता है। इस प्रकार वायु प्रदूषण भी नहीं होता। स्वीडन ने 'ब्रिनी' नामक संयंत्र विकसित किया है, जिसमें कूड़े की छोटी-छोटी गोलियाँ बनाकर उन्हें जलाकर ऊर्जा प्राप्त की जाती है। यहाँ प्रतिवर्ष सारे कूड़े का एक-चौथाई भाग जलाकर उससे ऊर्जा संबंधी एक-तिहाई आवश्यकता पूरी कर ली गई है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि, यदि सारे विश्व के कूड़े को जलाया जाए, तो उससे प्राप्त ऊर्जा ४ लाख घन लीटर तेल से प्राप्त ऊर्जा के बराबर होगी। वैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुसार—किसी भी ज्वलनशील द्रव्य की १० पौंड मात्रा से सारी दुनिया की एक महीने की विद्युत् आवश्यकता पूरी की जा सकती है, अगर १ पौंड कोयले को पूर्णतः ऊर्जा में बदल सकना संभव हो, तो १० अरब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किलोवाट से भी अधिक की ऊर्जा प्राप्त होगी। आइंन्सटीन के इसी सिद्धांत [$E=MC^2$] के आधार पर परमाणु ऊर्जा को प्राप्त किया जाता है, पर उसी सिद्धांत को कूड़े पर भी यदि आरोपित किया जाए तो परिणाम फलदायी ही है। कूड़ा दहन प्रदूषणरहित ऊर्जा प्राप्ति के अतिरिक्त इसके निष्कासन व सफाई में भी सहायक होगा, यद्यपि अभी यह प्रारंभ ही है।

लकड़ी की छीलन या बुरादे का प्रयोग भारत में कई स्थानों पर होता रहा है, पर उसके परंपरागत उपयोग से अधिक लकड़ी का क्षय होता है एवं ऊर्जा सीमित मात्रा में प्राप्त होती है। न्यूजीलैंड में लकड़ी की छीलन के परिष्कृत प्रयोग से ईंधन के खर्च में अस्सी प्रतिशत कमी आई है। वहाँ को काऑपरेटिव डेयरी अपने बर्नर इसी माध्यम से चलाती हैं।

❑ ❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऊर्जा और पर्यावरण

एक व्यापारी अपनी पूँजी में आय एवं व्यय का एक यथोचित अनुपात रखकर एक संतुलित अर्थव्यवस्था बनाता है, तभी लाभ की बात बन पाती है। उसी प्रकार पृथ्वी भी एक वृहद् स्वरूप वाली 'फर्म' है। यहाँ अर्थव्यवस्था—आय-पूँजी व खर्च के परस्पर संबंध की बात को कैसे भूला जा सकता है ? स्थूल दृष्टि से ही पृथ्वी को यदि 'केपीटल' मान लिया जाए, तो यह तथ्य स्पष्ट होता है कि इसका दोहन एक सीमा तक ही किया जा सकता है। सामयिक समृद्धि की बात अदूरदर्शितायुक्त है। पर्यावरण पर उसका कैसा प्रभाव पड़ रहा है ? इसके दूरगामी परिणाम क्या होंगे—आदि बातों पर भी विचार-विनिमय होना आवश्यक है।

स्थिति जब हाथ से बाहर होने लगती है, तो वैकल्पिक व्यवस्था की बात दूरदर्शी व्यक्ति समय रहते सोच लेते हैं। कुछ ऐसा ही चिंतन इन दिनों नीति निर्माताओं, वैज्ञानिकों, विचारकों का चल रहा है। जीवाश्मी ईंधन ही आज ऊर्जा की प्राथमिक आवश्यकता को पूरी करता है। इसमें मुख्यतः कोयला, जलाऊ लकड़ी, पैट्रोलियम पदार्थ आते हैं। संसार में एक तरफ जहाँ ऊर्जा की मांग में निरंतर वृद्धि हो रही है, वहीं दूसरी तरफ संसाधन निरंतर समाप्त होते जा रहे हैं। आने वाले २५-५० वर्ष तक भी ईंधन के उपलब्ध भंडार पूरे पड़ेंगे, इस पर शंका की जाने लगी है।

समस्याओं का दूसरा पहलू है—परंपरागत ऊर्जा संसाधनों के कारण पर्यावरण पर पड़ने वाले विपरीत प्रभाव। पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले स्रोतों में औद्योगिक इकाइयाँ, तापीय ऊर्जा केंद्र, पेट्रोल-डीजल आदि से चलने वाले वाहन आदि मुख्य माने जाते हैं। प्रदूषण नियंत्रण के लिए यह आवश्यक है कि, वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों के उपयोग की ओर ध्यान दिया जाए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आणविक शक्ति के सदुपयोग की बात अब खटाई में पड़ती जा रही है, क्योंकि सबसे बड़ी समस्या अणु भट्ठियों की राख को विसर्जित करने की एवं उससे संभावित घातक प्रदूषण की है। प्रदूषणरहित ऊर्जा के कई विकल्प सोच लिए गए हैं, कई स्थानों पर इनको व्यवहार में भी उतार लिया गया है।

☆ भूगर्भीय प्राकृतिक ऊर्जा स्रोत

प्राकृतिक रूप से उपलब्ध ऊर्जा स्रोतों में भू-गर्भीय महत्त्वपूर्ण है। 'भू-गर्भीय' ऊर्जा प्राप्त करने के लिए ज्वालामुखियों के आसपास के क्षेत्र में पृथ्वी में छेद करके, उबलते पानी से जो आसपास के क्षेत्र में, जमीन की तलहटी में १५० से ३०० डिग्री सेंटीग्रेड के तापमान पर विद्यमान रहता है, टर्बाइन चलाकर विद्युत् पैदा की जाने लगी है। ज्वालामुखियों की संख्या सारे विश्व में ८५० है, जिनमें से ६१५ सक्रिय एवं शेष प्रसुप्त हैं। तथापि इन सभी के आसपास मीलों तक १००० मीटर की तलहटी तक गर्म खौलता पानी उपलब्ध रहता है। हवाई द्वीप के इंजीनियरों ने किलोओए ज्वालामुखी के पास तीन मेगावाट का एक विद्युत् संयंत्र लगाया है, जो वर्तमान में तो प्रायोगिक स्तर पर है, पर इसके विस्तार की असीम संभावनाएँ हैं। विद्युतीय जेनरेटर का संबंध यहाँ खौलते पानी से कर दिया गया है। ताप के दबाव से जेनरेटर चल पड़ता है और यह कभी न समाप्त होने वाली भाप बिना किसी वायु प्रदूषण के सतत विद्युत् उत्पन्न करती रह सकती है। वैज्ञानिकों ने भू-गर्भीय जल का अधिकतम तापमान ३५८ डिग्री सेंटीग्रेड पाया है, जो भविष्य में संभवतः ५६० मेगावाट की विद्युत् शक्ति का उत्पादन कर सकेगा। अमेरिका, इटली, जापान, जर्मनी, फ्रांस में इस दिशा में प्रयोग हो रहे हैं।

कैमबॉर्न स्कूल ऑफ माइन्स ने पृथ्वी से हजारों फुट नीचे गर्म चट्टानों की ऊष्मा को एकत्रित कर उससे विद्युत् उत्पन्न करने में सफलता प्राप्त की है। पृथ्वी के भीतर ग्रेनाइट की जो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परत विद्यमान है, उसके विषय में ज्ञात हुआ है कि यह एक-तिहाई पृथ्वी के अंदर है। यदि इसकी ऊष्मा को प्रयुक्त किया जा सके, तो ऊर्जा की पूर्ति आगामी ५० वर्षों के लिए मात्र इसी स्रोत से होती रह सकती है।

"हवा से ऊर्जा"

पवन चक्की से विद्युत् उत्पादन यूरोपवासियों के लिए कोई नयी चीज नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों में खपत की जाने वाली ऊर्जा में से अधिकांश भाग हॉलैंड-इंग्लैंड जैसे राष्ट्रों में इसी माध्यम से मिलता रहा है। वायु प्रवाह की ग्रिड के अनुसार बड़े पंखों वाली कई पवन चक्कियों से विद्युत् का बड़े पैमाने पर उत्पादन अमेरिका में प्रयोग स्तर पर चल रहा है। मैसाचुसेट्स विश्वविद्यालय के प्रोफेसर वि० ई० हीटोनीमस के अनुसार, एक बड़े खुले मैदान में ८५० फीट ऊँची ३ लाख पवन चक्कियाँ लगाकर—उनसे टर्बाइन्स चलाकर २ लाख मेगावाट तक ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है, पर यह तो बहुत बड़े पैमाने की बात हुई। हॉलैंड में १ मेगावाट तक की क्षमता वाली कई पवन चक्कियाँ लगी हैं, जिनसे छोटे-छोटे उद्योग चलाए जाते हैं।

भारत में भी विशेषज्ञों ने उस पर बड़ा विशद् अध्ययन किया है। उनका कहना है कि इस विशाल राष्ट्र में किसी भी समय, कहीं न कहीं हवा तीव्र गति से चलायमान रहती है। इन सभी क्षेत्रों को एक पावर ग्रिड से जोड़कर २४ घंटे उस एक अकेले स्रोत से ऊर्जा प्राप्त कर सारे देश के औद्योगिक शहरों की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता है।

"ऊर्जा का एक स्रोत—जल"

समुद्र ऊर्जा भी पवन ऊर्जा की तरह ऐसी है, जिसे 'रिन्यू' किया जा सकता है। ब्रिटेन के आसपास अटलांटिक महासागर है। मात्र उसकी ब्रिटेन के तट को छूने वाली सागर लहरों में औसतन ८० किलोवाट प्रति मि० अर्थात् १२० हजार मेगावाट की ऊर्जा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्पादक क्षमता है। यदि इसमें से एक-तिहाई नष्ट हुई भी मान ली जाए, तो शेष से सारे ब्रिटेन की ऊर्जा पूर्ति हो सकती है। फिर भारत का सागर तट तो और भी सुविस्तृत है। ज्वार-भाटों से ऊर्जा उपलब्ध करने के प्रयास फ्रांस में लॉरेन्स नामक स्थान पर तथा रूस में किसलाया ग्यूबा में चल रहे हैं। दोनों ही स्थानों पर २४० मेगावाट के संयंत्र सफलतापूर्वक चल रहे हैं।

शास्त्र कहते हैं कि, समुद्र मंथन से १४ रत्न निकले थे। आज वैज्ञानिक ऊर्जा रूपी रत्नों की प्राप्ति के लिए समुद्र-मंथन कर रहे हैं। धरती के संपूर्ण भू-भाग का दो-तिहाई हिस्सा पानी से ढका है। यदि इस सारी शक्ति का सदुपयोग संभव हो सके, तो ऊर्जा संसाधनों के अपरिमित स्रोतों का नया द्वार खुल सकता है। थर्मोसायफन पद्धति एवं पानी की शक्ति उद्‌जन को अलग कर उससे ऊर्जा प्राप्ति के प्रयोगात्मक प्रयास तो अब कई राष्ट्रों में चल रहे हैं।

जल विद्युत् की कुल क्षमता का मात्र ५ प्रतिशत भारत प्रयुक्त कर पाया है। प्रति वर्ष लगभग ८६० घन मीटर बरफ पिघलकर हिमालय से नीचे आती है। अधिकांश सागर में जाकर व्यर्थ हो जाती है। विशाल नहरों व जल भंडारों के माध्यम से उत्तरी व दक्षिणी भू-भाग से ६५०० लाख एकड़ फुट जल एकत्र कर उससे जल विद्युत् प्राप्ति की योजना का प्रस्ताव 'गारलैंड नहर योजना' के रूप में काफी समय से है, पर आधुनिक तकनीकी क्षमता का अभाव, भूस्खलन का भय, जलवायु में विषम परिवर्तन जैसे दुष्प्रभाव इस योजना को कार्यान्वित नहीं होने दे रहे हैं। अभी भारत में ४० हजार मेगावाट विद्युत् जल से निकाली जाती है। यह अभी भी काफी खर्चीली, अधिक समय लेने वाली तकनीक है।

☆ "सौर ऊर्जा"

ऊर्जा के विषय में सर्वाधिक चर्चा सौर ऊर्जा के संबंध में हुई है। ऐसा अनुमान है कि—सूर्य पाँच सप्ताह की अवधि में इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पृथ्वी को इतनी ऊर्जा प्रदान कर देता है कि, यदि उसे हम सचित कर प्रयोग कर सकें, तो यह सदियों तक के लिए पर्याप्त है। हमारा देश सूर्य से चमकने वाला देश 'ट्रॉपिकल' कहलाता है। प्रति वर्ग किलोमीटर भू-भाग पर सूर्य की विकिरण शक्ति लगभग दस लाख किलोवाट पड़ती है। यह मात्रा दिल्ली की कुल बिजली शक्ति से लगभग तीन गुनी के बराबर है। यदि एक वर्ग किलोमीटर पर ६ घंटे सूर्य का प्रकाश लिया जाए, तो ऊर्जा ६ × १० लाख किलोवाट घंटे होती है, जो कि ६००० टन कोयले (३०० वैगन) के समतुल्य है। सूर्य आधे समय चमकता है, ३ माह वर्षा के कारण प्रकाश नहीं उपलब्ध हो पाता एवं इस प्रकाश की तीव्रता परिवर्तित होती रहती है, तो भी औसतन २५० वाट प्रति वर्गमीटर ऊर्जा का औसत आता है। भारत की १ लाख मेगावाट ऊर्जा की आवश्यकता पूर्ति हेतु मात्र ४००० वर्ग किलोवाट क्षेत्र पर सौर किरणें चाहिए, पर इसका संचयन एवं उसका ऊर्जा में परिवर्तन इतने अधिक तकनीकी जंजालों से घिरा है कि, यह महँगी पड़ती है। अभी हमारे यहाँ यह प्रायोगिक स्तर पर ही है, तो भी अनाज सुखाने, गर्म पानी आदि के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में इसे प्रयुक्त किया जा रहा है व सफलताएँ भी मिली हैं। सूरज से वाटर पंप, रेफ्रिजरेशन, एयरकंडिशनिंग, विद्युत् उत्पादन (फोटो वोल्टिक सोलर सेल्स से) प्रयोग रूप में तो संभव हो सका है, व्यवहार में उतरने में अभी देर है। बड़े पैमाने पर राष्ट्रीय बंधनों से भी ऊपर विश्व स्तर पर जब इन संयत्रों के निर्माण की बात संभव हो पायेगी, तब शायद यह वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोत सस्ता पड़े।

"पशुधन से ऊर्जा की प्राप्ति"

भारत में अव्यावसायिक ऊर्जा के साधन देश की खपत की आधी से भी अधिक शक्ति प्रदान करते हैं। उनका उपयोग मुख्यतः भारत की ग्रामीण जनता में होता है, जो देश की ६८ करोड़ जनता लकड़ी, कृषि अवशेष तथा पशु-गोबर को जलाकर ऊर्जा उत्पन्न व प्रयोग करती है। यद्यपि ये साधन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपर्याप्त हैं, पर इन पर ग्रामीण समूह की निर्भरता भविष्य में बनी रहेगी। इसे दृष्टिगत रख कृषि वैज्ञानिकों द्वारा कई ऐसे विकल्प सुझाए गए जिनसे उपलब्ध साधनों में ही कम से कम खर्च पर अधिक ऊर्जा प्राप्त कर ली जाए। पूसा इन्स्टीट्यूट के वैज्ञानिकों का कथन है कि, ग्रामीण क्षेत्र में पशुओं का गोबर और कृषि का कचरा जो सामान्यतः गंदगी एवं प्रदूषण पैदा करता है, 'मीथेन' गैस में परिवर्तित किया जा सकता है। इससे प्राप्त ऊर्जा प्राकृतिक तेल से प्राप्त ऊर्जा की ११ प्रतिशत आवश्यकता पूरी कर सकती है। अब ये प्रयोग अमेरिका व कनाडा के ऊर्जा एवं पर्यावरण विभाग ने भी करने आरंभ कर दिए हैं। जब विकसित कहे जाने वाले देश भी गोबर व पशुधन की ओर वापस लौट सकते हैं, तो कोई कारण नहीं कि भारत में भी इस विषय में प्रगति न की जाए, जबकि पशुधन की दृष्टि से भारत धनी है व अधिकांश जनता ग्रामीण परिसर में रहती है।

१ लाख पशु १५ लाख टन गोबर प्रतिवर्ष देते हैं। १ पौंड गोबर से १० घन फुट मीथेन गैस बनती है। इस प्रकार इतने गोबर से ३ अरब घन फुट मीथेन गैस बनेगी, जिसकी कीमत लगभग ४५ से ६० लाख रुपये होगी। इलाहाबाद में पिछले दिनों संपन्न हुई विश्वस्तर के मूर्द्धन्य वैज्ञानिकों की गोष्ठी में यही निश्चय किया गया था कि, ऊर्जा संकट एवं पर्यावरण प्रदूषण की वर्तमान स्थिति को हल करने के लिए सरलतम तरीका विकासशील देशों के लिए यही हो सकता है कि 'बायोगैस' का उत्पादन बढ़ाया जाए। कृषि यंत्रों, सिंचाई की मशीनों आदि के लिए बायोगैस का उपयोग कर इसे डीजल पंपों, विद्युत् पंपों के स्थान पर प्रतिष्ठित किया जा सकता है।

अपने देश की परिस्थितियाँ अन्य राष्ट्रों से अलग हैं। न तो आर्थिक दृष्टि से, न तकनीकी दृष्टि से अभी विकसित राष्ट्रों का मुकाबला ऊर्जा के क्षेत्र में किया जा सकता है। पर वह सब तो संभव है ही, जो हमारे लिए सहज सुलभ है। यदि उपलब्ध

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मवेशियों के गोबर को नष्ट होने से बचाकर बायोगैस प्लांट लगा दिये जाएँ, तो देश की ऊर्जा संबंधी अधिकांश समस्या हल हो सकती है और पर्यावरण प्रदूषण को भी काफी कम किया जा सकता है। यदि और भी कोई सुलभ मार्ग मिल सके, तो वहाँ उसे अपनाने में कोई कठिनाई नहीं, पर इस राष्ट्र की नित्य क्षयित संपदा है—नित्यक्षरित हो रही हैं, उसे सही विधि से उपयोग कर वैकल्पिक ऊर्जा की समस्या हल कर ली जाए, तो प्रगति का पथ प्रशस्त हो सकता है तथा पर्यावरण में संव्याप्त प्रदूषण से भी मुक्ति पाई जा सकती है।

✰ सौर ऊर्जा—कुछ तथ्य

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

१. सौर ऊर्जा का पृथ्वी पर अधिकतम प्रवाह घनत्व १ किलोवाट प्रति वर्ग मीटर है।

२. पृथ्वी पर पड़ने वाली कुल सौर ऊर्जा का मात्र ०.१% ऊर्जा द्वारा ही विश्व की ऊर्जा खपत की आवश्यकता पूरी हो सकती है।

३. दोपहर के समय ७० मील × ७० मील क्षेत्रफल पर पड़ने वाली सौर ऊर्जा ही यदि विद्युत् में बदली जा सके, तो उसकी क्षमता विश्व के सभी ऊर्जा उत्पादन केंद्रों द्वारा एक ही समय पर उत्पादित अधिकतम ऊर्जा के बराबर होगी।

४. एक घर की छत का यदि कुछ भाग ही सौर ऊर्जा संचय हेतु उपयोग में लाया जा सके, तो उससे ही घर की सभी आधुनिक विद्युत् प्रणालियों व यंत्रों की विद्युत् आवश्यकता पूरी हो सकती है।

५. सौर ऊर्जा प्रदूषणमुक्त है और सभी को उपलब्ध भी है। विकेंद्रीकृत सौर ऊर्जा उत्पादन होने से पर्यावरण संतुलन बने रहने में भी सहायता मिलती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

☆ ऊर्जा संरक्षण—समय की माँग

किसी भी राष्ट्र के समग्र विकास में ऊर्जा का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। उद्योगों के विकास में श्रमशक्ति, धन और स्थान के साथ ऊर्जा भी अपरिहार्य साधन के रूप में देखी जाती है। पिछले कुछ दशकों में जनसंख्या वृद्धि और औद्योगीकरण के विस्तार से पारंपरिक ईंधन की खपत में तेजी से बढ़ोत्तरी हुई है।

ईंधन के ज्यादा खपत से जहाँ जीवाश्म ईंधन के सीमित भंडार में निरंतर कमी होती जा रही है, वहीं दूसरी तरफ उनके उत्पादन और प्रयोग दोनों से ही पर्यावरण प्रदूषण बढ़ रहा है। जीवाश्म ईंधन के निरंतर दोहन तथा उपयोग से तेजाबी बारिश तथा धरती के तापमान वृद्धि जैसी समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। यही कारण है कि इन दिनों विश्व में ऊर्जा संकट और ऊर्जा असुरक्षा की भावना व्याप्त हो गई है। संसार के सभी देश वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की खोज के साथ ऊर्जा संरक्षण के भी कारगर उपाय ढूँढ़ने में लगे हुए हैं। खनिज तेलों के निरंतर बढ़ते मूल्यों को देखकर भारत जैसे विकासशील देशों में ऊर्जा संरक्षण का मुद्दा और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

ऊर्जा खपत कैसे घटाएँ ?

ऊर्जा खपत के महत्त्वपूर्ण क्षेत्र हैं—उद्योग, घरेलू उपयोग और यातायात। ऊर्जा की सर्वाधिक खपत उद्योग-धंधों में ही होती है। उद्योगों से तापीय ऊर्जा के रूप में ऊर्जा की बहुत बरबादी होती है। ऊर्जा क्षय के दूसरे कारण हैं—उनका गलत इस्तेमाल तथा प्रबंधन का अभाव।

तापीय ऊर्जा का पुनर्उपयोग संभव तो है ही, सरल भी है। बड़े-बड़े उद्योगों में आपसी संबंध की कमी के कारण तापीय ऊर्जा का बड़ा भाग यूँ ही नष्ट हो जाता है। अगर इसका रिसाइक्लिंग हो सके, तो ऊर्जा बचत के साथ प्रदूषण की मात्रा में भी कमी होगी। तकनीकी के विकास और सहयोग-सहकारिता की भावना से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऊर्जा-श्रृंखला का निर्माण संभव है, जिससे ऊर्जा संरक्षण के साथ प्रदूषण निवारण का दोहरा लाभ मिल सकेगा।

ऊर्जा की अनावश्यक खपत को सक्षम संयत्र के उपयोग से, संयत्रों की नियमित देखभाल, ऊर्जा दक्ष चिमनीयुक्त भट्ठियों या गैसीफायर आदि उपकरणों की सहायता से कम किया जा सकता है। ऊर्जा प्रबंधन, ऊर्जा ऑडिट आदि के द्वारा विभिन्न औद्योगिक इकाइयों की दक्षता की सही गणना, ऊर्जा श्रृंखला बनाना और उद्योगों के अवशिष्ट पदार्थों आदि से ऊर्जा निस्तारण या ऊर्जा में परिवर्तन की संभावनाओं की खोज द्वारा इस दिशा में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किए जा सकते हैं। इस कार्य के लिये "टाटा ऊर्जा अनुसंधान संस्थान" पिछले कई वर्षों से कार्यरत है।

ऊर्जा उपयोग का दूसरा बड़ा क्षेत्र है—घरेलू आवश्यकताएँ। घरों, दफ्तरों, व्यावसायिक इमारतों के निर्माण से पूर्व वास्तुकला, तकनीकी बनावट पर समुचित ध्यान देकर, ऊर्जा संरक्षण की दिशा में सार्थक कदम उठाना संभव है। इस दिशा में काफी प्रगति हुई है। आजकल बुद्धिमत्ता से इमारतों का निर्माण शुरू हुआ है। इनकी डिजाइन में बिजली की बचत एवं ऊर्जा संरक्षण को भी ध्यान रखा जाता है। पुणे की टी० आर० डी० डी० सी० इमारत ४५% ऊर्जा की बचत करती है और मुंबई के सी० एम० सी० भवन से लगभग ३०% बिजली की बचत संभव हुई है। घरों में हवा-रोशनी का समुचित ध्यान रखकर निर्माण किया जाए, तो बिजली की काफी बचत की जा सकती है। दोषपूर्ण निर्माण के कारण कई घरों में असमय भी प्रकाश तथा हवा के लिए बिजली का उपयोग करना आवश्यक हो जाता है।

भोजन बनाने में ईंधन का एक बड़ा भाग प्रयुक्त होता है। बड़े परिवार सामूहिक भोजन व्यवस्था के विकास से ऊर्जा की काफी बचत संभव है। ईंधन की बचत तथा प्रदूषण निवारण के लिए सोलर वाटर हीटर, सोलर कुकर, बायोगैस आदि के उपयोग को महत्त्व देने की भी आवश्यकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यातायात के क्षेत्र में भी पेट्रोल-डीजल की बचत के लिए ऊर्जा दक्ष इंजनों के उपयोग तथा सड़कों में सुधार कर ईंधन में काफी बचत की जा सकती है। बड़े नगरों के विकास और विस्तार से एक क्षेत्र के लोगों को काम-धंधे के लिए दूर-दूर तक यात्रा करनी पड़ती है, जिससे वाहनों से होने वाला प्रदूषण और ईंधन खपत दोनों ही बढ़ते हैं। कुटीर उद्योगों के प्रोत्साहन, कल-कारखानों के विकेंद्रीकरण से यातायात में खर्च होने वाली ऊर्जा में कटौती करना संभव है। छोटे-छोटे कस्बों, गाँवों में उद्योग-धंधे को बढ़ावा देकर ईंधन से चलने वाले वाहनों की अपेक्षा साइकिल-रिक्शा आदि के उपयोग को प्रोत्साहित किया जा सकता है। जितने बड़े शहर होंगे, उतनी ही मशीनी परिवहन व्यवस्था की आवश्यकता बढ़ेगी।

भारत सरकार ने ऊर्जा संरक्षण को एक राष्ट्रीय प्राथमिकता के रूप में स्वीकारा है। योजनाबद्ध प्रयासों तथा स्पष्ट विचारपूर्ण नीतियों द्वारा ऊर्जा के बचत को बढ़ावा देने के लिए ऊर्जा सलाहकार बोर्ड तथा ऊर्जा प्रबंधन केंद्र की स्थापना भी की गई है, पर ऊर्जा संरक्षण केवल सरकार के प्रयासों से संभव नहीं है। आज जब पेट्रोलियम पदार्थों, बिजली के दामों में निरंतर वृद्धि हो रही है, हम सभी का नैतिक दायित्व हो जाता है कि, ऊर्जा की बचत और संरक्षण की दिशा में व्यक्तिगत प्रयास तो करें ही, जनसामान्य में भी जागृति पैदा करने के कारगर उपाय अपनाएँ।

❑ ❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जनसंख्या वृद्धि और पर्यावरण

सर्वविदित है कि, विश्व-जनसंख्या-वृद्धि जितनी तीव्र गति से इन दिनों हुई है, वैसा पहले कभी नहीं हुआ। आँकड़ों पर दृष्टिपात करने से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है। सन् १८०० में संपूर्ण विश्व की जनसंख्या-वृद्धि-दर मात्र ०.४७ प्रतिशत थी। एक शताब्दी बाद इसमें विकसित और अविकसित एवं विकासशील जैसा एक विभाजन हो गया, परिणामस्वरूप उसमें दो प्रकार की वृद्धि आरंभ हुई। विकसित विश्व ने जहाँ १.३४ प्रतिशत वृद्धि सन् १९०१ में दिखलायी, वहाँ अविकसित तथा विकासशील विश्व की वृद्धि-दर ४.७५ प्रतिशत थी। सन् १९५० के आते-आते इसमें क्रमशः १.५० और ३.०२ प्रतिशत की और वृद्धि हो गई है। आज यह बढ़ोत्तरी दर इतनी है, जिसे पूर्व की तुलना में विशाल ही कहना पड़ेगा।

आबादी की दृष्टि से विचार करें, तो 'विश्व जनसांख्यिकी रिपोर्ट' के अनुसार दुनिया की कुल आबादी आज से ६ हजार साल पूर्व मात्र ४५ लाख थी। सन् १५०१ में बढ़कर यह ४४ करोड़ हो गई, १६३० में ५२ करोड़, १८५५ में ९८ करोड़, १९५० में २१० करोड़, १९७५ में ४०० करोड़, १९९९ में ६२० करोड़। इसी दर से यह बढ़ोत्तरी होती रही, तो अनुमान है कि सन् २०२५ तक विश्व की कुल जनसंख्या ८७० करोड़ हो जाएगी।

जिस ग्रह पर हम रह रहे हैं, उसके धरती और संसाधन सीमित हैं, जबकि जनसंख्या-वृद्धि अपरिमित गति से हो रही है। ऐसी स्थिति में प्रकृति और पर्यावरण पर दबाव पड़ना स्वाभाविक है। आबादी बढ़ेगी तो अन्न उत्पादन भी बढ़ना चाहिए और आवास के लिए भूमि भी। खाद्यान्न उत्पादन को तो कुछ सीमा तक वैज्ञानिक विधियों द्वारा बढ़ाया भी जा सकता है, पर रहने के लिए भूमि की कमी की पूर्ति कैसे हो ? जमीन का दो-तिहाई भाग जल से भरा है। इसका एक-तिहाई हिस्सा ही स्थल है। इसमें भी रहने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

योग्य सपाट-समतल भूमि से लेकर पर्वत, वन सभी सम्मिलित हैं। यदि रहने योग्य वर्तमान खंड में ही बढ़ी हुई और बढ़ने वाली अतिरिक्त आबादी को किसी प्रकार रखा गया, तो फिर यह तो एक छोटे बाड़े में अनेक पशुओं को रखने जैसा हो जाएगा। मनुष्य के लिए स्वस्थता भी जरूरी है, उसे हवा और प्रकाश भी चाहिए। उक्त घिच-पिच स्थिति में इन आवश्यकताओं की पूर्ति संभव नहीं। ऐसे में विकल्प एक ही रह जाता है—वनों को काटा जाए और पहाड़ों को समतल बनाया जाए। यह प्रकृति से स्पष्ट छेड़छाड़ हुई। इससे प्रकृति और पर्यावरण दोनों प्रभावित होंगे। जंगल कटेंगे, तो वर्षा घटेगी। आबादी बढ़ेगी, तो उद्योग बढ़ेंगे। उद्योगों के बढ़ने से प्रदूषण बढ़ेगा और पर्यावरण अस्वास्थ्यकर बनेगा। इन सभी विभीषिकाओं को एक शब्द में कहना हो, तो इसे 'जनसंख्या-वृद्धि' ही कहना पड़ेगा। यही इनके मूल में समाहित है। इसे यदि घटाया-मिटाया जा सके, तो बहुत हद तक उपर्युक्त समस्याओं से पिंड छुड़ाया जा सकता है, पर न ऐसा होना था, न हुआ। आगे भी इसकी कम ही संभावना दीखती है।

☆ प्राकृतिक अनुशासन और प्रजनन की क्षमता

मनुष्य जब प्रकृति की अवहेलना करना आरंभ करता है, तो प्रकृति भी उससे निपटने का अपना उपाय-उपचार प्रारंभ कर देती है। आए दिन घटने वाली प्राकृतिक आपदाओं मे इसकी अनुभूति की जा सकती है। क्रिया होगी, तो प्रतिक्रिया भी स्वाभाविक है। अब यह प्रतिक्रिया मनुष्य के अंदर उसके बंध्यत्व के रूप में घटित होने जा रही है।

जब छोटे स्तर के दंड से अपराधी काबू में नहीं आते, तो उनके लिए बड़े और विशिष्ट स्तर के दंड का प्रावधान करना पड़ता है।

निसर्ग को मनुष्य के संदर्भ में ऐसी ही रीति-नीति अपनानी पड़ती है। उसने जब यह अनुभव किया कि, इस छोटी-मोटी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दंडव्यवस्था से अब काम चलने वाला नहीं और न प्रयोजन पूरा होने वाला है, तो अपने तरकश का सर्वाधिक समर्थ आयुध का प्रयोग करते हुए आबादी को नियंत्रित करने संबंधी एक बिल्कुल ही अभिनव शुरूआत की और मानवकृत विभीषिकाओं से धरती को मुक्त बनाने का प्रयास आरंभ किया।

अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि, विश्वभर में मनुष्य के शुक्राणुओं की संख्या घटती जा रही है। इस आशय की प्रथम जानकारी पी० डी० जेम्स नामक प्रसिद्ध अँग्रेज विज्ञान कथा लेखिका की रचना से मिली। सन् १६६२ में उनने विज्ञान कथा पर आधारित एक उपन्यास लिखा, नाम था—'दि चिल्ड्रेन ऑफ मेन'। यों तो यह ग्रंथ एक वैज्ञानिक कल्पना था, पर इसकी नींव अध्ययनों पर आधारित थी; अतएव उसे एकदम काल्पनिक कहना भी उचित नहीं। एक वैज्ञानिक होने के नाते जेम्स ने अपने अध्ययन को ही पुस्तक का कथानक बना डाला और इस प्रकार एक नवीन तथ्य से संसार अवगत हुआ।

उसी वर्ष एक डैनिश अंतःस्रावी ग्रंथि विशेषज्ञ नील्स ई० स्कैकेबिक ने अपनी एक शोध-रिपोर्ट 'ब्रिटिश मेडिकल जर्नल' में प्रकाशित करवाई। यह विश्वभर के ६१ ग्रंथों के अध्ययनों पर आधारित थी। इसके अनुसार पिछले पचास वर्षों में स्वस्थ पुरुषों के शुक्राणुओं में ४० प्रतिशत की गिरावट आई है। सन् १६४० में जब प्रथम बार स्वस्थ और प्रजनन क्षमतायुक्त मनुष्यों के शुक्राणुओं का अध्ययन किया गया, तो प्रति मिलीलीटर वीर्य में इसकी औसत संख्या ११३० लाख थी। सन् १६६२ में यह घटकर मात्र ६६० लाख रह गई। इनमें भी सब पूर्ण स्वस्थ थे, ऐसी बात नहीं। उसमें से अधिकांश या तो गतिहीन थे या असामान्य। असामान्यों में ऐसे शुक्राणु बड़ी संख्या में देखे गये, जिनके पूँछें नहीं थीं और सिर दो-दो थे। स्कैकेबिक का कहना है, कि शुक्राणुओं की संख्या में यह गिरावट अब भी जारी है और यह क्रम आगे यथावत् बना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहा, तो जल्दी ही मनुष्य प्रजनन के अयोग्य साबित होंगे, ऐसा उनका मानना है।

प्रजनन में शुक्राणुओं की क्या भूमिका है ? तनिक इस पर चर्चा कर लेना यहाँ अनुचित न होगा। शुक्राणु एक विशिष्ट आकार धारण किए होते हैं। सिर का हिस्सा कुछ बड़ा और गोलाकार लिए होता है। उसके एक पूँछ जुड़ी होती है। जब इनकी विशाल जनसंख्या अपने लक्ष्य की ओर प्रस्थान करती है, तो उनमें से मात्र एक लाख के करीब ही गंतव्य तक पहुँच पाते हैं, शेष की रास्ते में ही मृत्यु हो जाती है। इस एक लाख में भी कोई एक दर्जन शुक्राणु डिंबाणु से संयोग का प्रयास करते हैं। इनमें भी किसी एक को ही सफलता मिल पाती है। जो सफल होता है—वही डिंबाणु के बाह्य आवरण को भेदकर अंदर प्रवेश करने में समर्थ हो पाता है। विज्ञान की भाषा में इस पारस्परिक संयोग को 'गर्भाधान' कहते हैं। यहीं से भ्रूण का विकास आरंभ होता है। बोलचाल की भाषा में यही 'गर्भधारण' है।

गर्भाधान की इस प्रक्रिया में शुक्राणुओं की विशाल संख्या अत्यंत महत्त्वपूर्ण है ? यह संख्या किसी भी प्रकार यदि इससे कम होती, तो मनुष्य के लिए प्रजनन और गर्भधारण कितना कठिन होता, इसका उपर्युक्त विवेचन से सहज ही अंदाज लगाया जा सकता है। अतः इस विशाल परिमाण को न तो संयोग कहा जा सकता है, न निरुद्देश्य। प्रकृति की यह सुनियोजित व्यवस्था है। इन दिनों यदि इसकी संख्या घटी है, तो यह अनायास नहीं है, निश्चय ही इसके पीछे प्रकृति की प्रेरणा है, ऐसा कई कारणों से प्रतीत होता है। प्रथम तो यह कि, यह इसी क्षेत्र विशेष अथवा समुदाय विशेष की स्थिति नहीं है। विश्व के लगभग सभी हिस्सों और सभी समुदायों में न्यूनाधिक अंतर के साथ एक ही निष्कर्ष सामने आया है कि, संप्रति पूरी मनुष्य जाति की शुक्राणु संख्या में आश्चर्यजनक गिरावट आई है। ऐसी दशा में इसे परिस्थिति या पर्यावरण का परिणाम नहीं कहा जा सकता, कारण कि तब इसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसी क्षेत्र या वर्ग विशेष तक ही सीमित रहना चाहिए था, पर ऐसा कहाँ है ? यह तो विश्वव्यापी बना हुआ है। दूसरे, शरीरशास्त्रियों के अनुसार मद्यपान और एंटीबायोटिक ओषधियों के सेवन से भी शुक्राणु प्रभावित होते हैं और उनकी संख्या घटने लगती है; किंतु यह अस्थायी स्थिति है। उनका प्रयोग बंद होते ही वह अपनी सामान्य और स्वाभाविक अवस्था प्राप्त कर लेते हैं। इसके साथ ही उनकी तादाद पूर्ववत् हो जाती है; पर अध्ययन बताते हैं कि उनकी औसत संख्या में लगातार घटोत्तरी हो रही है। यह भी इस बात का प्रमाण है कि यह किसी भौतिक क्रिया की प्रतिक्रिया नहीं, वरन् अदृश्य की प्रेरणा है।

तेजी से जनसंख्या-वृद्धि कर रहा भारत जैसा विशाल आबादी वाला देश भी उपरोक्त परिणाम की ही पुष्टि करता है। मुंबई के डॉ० अनिरुद्ध मालपानी और डॉ० अंजली मालपानी ने अपनी रचना 'गेटिंग प्रिगनेंट-ए गाइड फॉर दि इनफर्टाइल कपल' में तत्संबंधी तथ्यों की विस्तृत विवेचना की है। उनका कहना है कि मुंबई स्थित उनके चिकित्सालय में बंध्यत्व के शिकार बड़ी संख्या में लोग इलाज करवाने आते हैं। चूँकि महिलाओं का प्रजनन क्षमता संबंधी परीक्षण एक जटिल प्रक्रिया है, अस्तु वहाँ सर्वप्रथम पुरुषों का शुक्राणु-परीक्षण किया जाता है। इस जाँच में यही तथ्य उभरकर सामने आया है कि बंध्यापन का प्रमुख कारण कोई अन्य रोग नहीं, वरन् अभीष्ट परिमाण से भी काफी कम तादाद में शुक्राणुओं की उपस्थिति है। इसमें भी एक बड़ा हिस्सा ऐसे शुक्राणुओं का होता है, जो विकृत स्तर के होते हैं और जिनमें गर्भाधान की क्षमता होती ही नहीं। ऐसी स्थिति में नारी भला गर्भधारण किस प्रकार कर सकेगी ? वे कहते हैं कि कोलाबा स्थित उनके 'स्पर्म बैंक' में शुक्राणु दानदाताओं में से ८० से ६० प्रतिशत व्यक्ति ऐसे होते हैं, जो स्वस्थ होने के बावजूद उनके वीर्य को कम शुक्राणु होने के कारण अस्वीकार कर दिया जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दस में से मात्र एक व्यक्ति ही ऐसा होता है, जिसका स्पर्म वांछित स्तर का होने के कारण स्वीकार किया जाता है।

मुंबई के पैथोलॉजिस्ट डॉ० अविनाश फड़के का मानना है कि, आज से चार दशक पूर्व दस सौ लाख या इससे अधिक शुक्राणु संख्या एकदम सामान्य बात थी; पर अब यह एक विरल स्थिति है। कारण स्पष्ट है कि मनुष्य अपने प्रजनन को स्वयं नियंत्रित नहीं कर सका, अतः प्रकृति की ओर से ऐसी व्यवस्था की गई कि उसकी अवांछनीय वृद्धि पर अंकुश लगाया जा सके। यदि ऐसा नहीं होता, तो जल्दी ही द्रुत और निरंकुश जनसंख्या-वृद्धि के कारण प्रकृति में मानव जीवन के लिए अपेक्षित पर्यावरण संतुलन कायम रखना मुश्किल हो जाता, जिससे धरती पर इतनी अव्यवस्था और अराजकता उत्पन्न हो जाती, जिसका कोई ठिकाना नहीं। इसे रोकने के लिए अलौकिक हस्तक्षेप आवश्यक था; यही हुआ भी।

मनुष्य इस संदर्भ में गंभीर चिंतन कर यह निर्णय करे कि उसे अपनी सत्ता इस धरती पर बनाए रखनी है अथवा बंध्यत्व का शिकार होकर वंशवृद्धि गँवानी है। मर्जी उसकी है, निश्चय उसका है।

☆ प्रकृति की क्रूर कठोरता से सावधान

अनियंत्रित संतानोत्पत्ति और मौज-मजे की जिंदगी—यह दो इस युग की ऐसी दुष्प्रवृत्तियाँ हैं, जो प्रकृति के सुव्यवस्थित क्रियाकलापों को चुनौती देते हुये पर्यावरण को क्षतिग्रस्त करती रही हैं।

धरती पर प्राणियों के लिए सीमित संख्या में ही स्थान और साधन हैं। यदि वे अपनी संख्या बढ़ाने पर स्वेच्छा पूर्वक नियंत्रण न करेंगे, तो इस कटौती के लिए प्रकृति को निर्मम कुल्हाड़ी चलानी पड़ेगी। इसी प्रकार यदि लोग समर्थता, पुरुषार्थ परायणता, तितिक्षा और संघर्षशीलता की अवज्ञा करके शौक-मौज का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विलासी जीवन जीने लगेंगे, तो भी ऐसी अकर्मण्यता और कोमलता जन्मेगी, जिसे प्रकृति की परिभाषा में निकम्मापन माना जाता है। विलासी, आलसी और जागरूकता रहित प्राणियों को नियति के चक्र में पिसकर नष्ट ही होना पड़ता है।

संतानोत्पादन की जो क्षमता प्राणियों को मिली है, यदि वह निर्बाध गति से चलती रही, तो एक ही प्राणी कुछ शताब्दियों में सारी धरती को घेर लेगा। हाथी को ही लें, उसकी प्रजनन गति मंद मानी जाती है। ३० वर्ष की आयु में वह पिता बनने योग्य होता है और उसकी प्रजनन शक्ति इसके बाद ६० वर्ष तक रहती है। १० वर्ष के अंतर से हथिनी माता बनती है। इतने पर भी गणित कहता है कि, यदि उसकी सारी संतानें जीवित रहें, तो ७० वर्षों की अवधि में एक हाथी का वंश १९ लाख हो जायेगा। चक्रवृद्धि गति से यह स्वाभाविक है, आश्चर्यजनक नहीं। यह तो मंद प्रजनन अभ्यासी और सशक्त काया वाले हाथी की बात हुई। दुर्बल काया और अति प्रजनन की प्रकृति वाले पिछड़े जीवों की बात ली जाए, तो उनकी वंशवृद्धि के परिणाम इतने आश्चर्यजनक होंगे कि, यदि उनकी सभी संतानें बनी रहें, तो दस-बीस वर्ष में ही वे पृथ्वी को अपने वंशजों से ढक लेंगे।

इस विपत्ति से निपटने के लिए प्रकृति ने एक क्रूर कुल्हाड़ा भी तैयार रखा है। वह है—समर्थ का चुनाव। जो सुयोग्य और समर्थ होते हैं, वे ही प्रकृति की विविध चुनौतियों को स्वीकार करते हुए संघर्ष करते हैं और उस आधार पर अपनी विकसित योग्यता का परिचय देकर जीवित बने रहते हैं। जो इस लड़ाई में हारते हैं, वे मौत के मुँह में चले जाते हैं। जो जीव जितना अधिक प्रजनन करेगा, उसकी संतानें उतनी ही दुर्बल और स्वल्पजीवी होंगी। जो इस आग से खेलने में समझदारी का उपयोग करते हैं, उन्हें काट-छाँट की कैंची उतना ही कम कष्ट देती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन संग्राम एक ऐसी सच्चाई है, जिससे न तो इनकार किया जा सकता है और न बचा जा सकता है। चैन से बैठने और मौज-मजा करने की कल्पना भर कोई करता रह सकता है, पर प्रकृति उसे वैसा करने नहीं देती। आलसी अपनी संघर्षशीलता वाली प्रतिभा गँवाते चले जाते हैं, फलतः समय की चुनौती से जूझने लायक क्षमता उनमें रहती ही नहीं। ऐसी दशा में अयोग्य और असमर्थ को हटाकर संसार के सौंदर्य को बनाए रखने के लिए नियति के संचालक-सूत्र, कुशल माली की तरह अपना काम करते हैं। वे इस बात की परवाह नहीं करते हैं कि, उन्हें दयालु कहा जायगा अथवा निर्दयी।

आलसी और प्रमादी वर्ग के विशालकाय प्राणी धरती पर से अपना अस्तित्व समाप्त कर बैठे। परिस्थितियों से लड़ने के लिए जिस कठोरता और सजगता की आवश्यकता है, उसे यदि अक्षुण्य न रखा गया तो अकर्मण्यता का अभ्यस्त व्यक्ति क्रमशः दुर्बल होता चला जाएगा और फिर उसकी अनुपयोगी सत्ता को स्थिर न रखा जा सकेगा।

आत्मरक्षा के लिए हमें प्रकृति के कानूनों को ध्यान में रखना होगा। संतानोत्पादन पर विवेकपूर्वक नियंत्रण स्थापित करें, और साथ ही संघर्षशील कठोर जीवनक्रम को अपने स्वभाव का अंग बनाकर रखें, तभी प्रकृति के कठोर कुल्हाड़े से हमारा बचाव हो सकेगा।

☆ जनसंख्या निरोध की निर्दय किंतु प्राकृतिक प्रविधि

उत्तरी योरोप में एक छोटा-सा देश है, उसका नाम है—"नार्वे"। नोर्डकिन अंतरीप इसी देश के उत्तरी तट पर स्थित है। इस अंतरीप में ६ माह तक तो दिन ही दिन बना रहता है, अर्थात् सूरज चमकता है, शेष ६ माह दोपहर में भी सूरज दिखाई नहीं पड़ता, अर्थात् रात ही रात होती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नार्वे प्रकृति के उक्त विलक्षण दृश्य से भी बढ़कर एक ऐसे रहस्य का उद्घाटन दिन-रात करता रहता है, जिसके लिए आज दुनिया भर के सभी देशों में पृथक् मंत्रालय खुले हुए हैं, तो भी समस्या नियंत्रण में नहीं आती। वह विश्वव्यापी समस्या है— "जनसंख्या की असीमित वृद्धि"। संख्याशास्त्रियों का अनुमान है कि, प्रतिवर्ष संसार की आबादी एक करोड़ बीस लाख बढ़ रही है। प्रोफेसर हीजवान फास्टर का कथन है कि, १३ नवंबर २०२६ दिन शुक्रवार को मनुष्यजाति का इसलिए अंत हो जायेगा कि उस दिन जनसंख्या इतनी अधिक हो जाएगी कि लोगों को खड़े होने तक की जगह न रह जायेगी। डॉ० जेम्स बर्नर के आँकड़े इससे भी भयंकर हैं। लंदन की स्वास्थ्य कांग्रेस का भी कथन है कि, सन् २०५० तक संसार, जनसंख्या वृद्धि के कारण महाप्रलय के गर्भ में चला जाएगा और मनुष्य अपने आप लड़-झगड़कर, प्राकृतिक प्रकोपों द्वारा नष्ट-भ्रष्ट होकर नेस्तनाबूद हो जाएगा।

यह आँकड़े जितने सत्य हैं, जितने भयानक हैं—शुतुरमुर्ग की भाँति, उतना ही मनुष्य उससे मुँह छुपाना चाहता है। कहते हैं, रेगिस्तानी शुतुरमुर्ग जब अपने शिकारी को देखता है, तो भयग्रस्त होकर अपना मुँह बालू में घुसेड़कर सुरक्षित हो जाने की कल्पना करता है। इस बीच शिकारी वहाँ पहुँच जाता है और उसकी अपनी भूल के कारण ही बड़ी आसानी से उसका आखेट कर लेता है। प्रकृति मनुष्य की मूर्खता पर प्रहार करने के लिये कितनी निर्दयतापूर्वक तैयारी कर रही है, उसका दर्शन करना हो तो नार्वे जाना चाहिए और वहाँ पाए जाने वाले चूहे की-सी आकृति वाले विचित्र जंतु "लेमिंग" की जीवनपद्धति और उसके परिणाम का अध्ययन करना चाहिए।

"लेमिंग" ठीक चूहों जैसे ही होते हैं, किंतु इनकी दुम छोटी है। इनके दो ही काम मुख्य हैं। एक खाते रहना, दूसरा बच्चे पैदा करते रहना। लगता है—पूर्व जन्म में अधिक संतान पैदा करने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वाले ही भाग-भागकर नार्वे जाते हैं और इस जन्म में "लेमिंग" के रूप में शरीर धारण कर अपनी विभुक्षित वासना पूरी करने का प्रयत्न करते हैं, पर उनकी यह मूर्खता ही उनके महानाश का कारण बनती है। महाप्रलय के जो संकेत प्रो० हीजवान, माल्थस, डॉ० जेम्स बर्नर आदि ने दिये हैं, उनका जीता-जागता दृश्य नार्वे में देखा जा सकता है।

मादा लेमिंग दिन-रात बच्चे पैदा करती रहती है, फलस्वरूप कुछ ही दिनों में पहाड़ियों की पहाड़ियाँ "लेमिंगों" से ऐसे भर जाती हैं—जैसे बरसात में पानी। रहने के लिये, शरीर छुपाने के स्थान नहीं रहते, तो बिलबिलाते हुए इधर-उधर भागते हैं। दाँव लगता है भेड़ियों, भालू और लोमड़ियों का। वे इन्हें खा-पीकर बराबर कर देते हैं।

कई बार शत्रु भी इनकी संख्या घटा नहीं पाते, तब वे चींटी की तरह तीन-तीन, चार-चार की कतार बनाकर समुद्र की ओर चल पड़ते हैं। बेचारे इतने कायर और कमजोर होते हैं कि, दिन में चल नहीं सकते। कमजोर के लिए हर जगह दुश्मन तैयार रहते हैं। इसी भय से वे रात में चलते हैं और किसी तरह समुद्र तक पहुँच जाते हैं, पर वहाँ भी उन्हें सिवाय "आत्महत्या" के कुछ हाथ नहीं आता। समुद्र में कूद-कूदकर अपनी जान गँवा देते हैं। थोड़े-बहुत बच जाते हैं, वह लौटकर आते हैं और फिर से प्रजनन और विनाश का यही क्रम प्रारंभ हो जाता है।

मनुष्य, प्रकृति के इस निर्दय सत्य से कुछ सीखता व संभलता, तो दुर्गति की जो स्थिति सामने दौड़ती आ रही है वह कम न हो जाती ?

❑ ❑

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"वृक्ष-वनस्पति और पर्यावरण"

कारखानों की चिमनियाँ, रेल गाड़ियाँ तथा घरेलू प्रयोग में निकलने वाले धुएँ की मात्रा अत्यधिक बढ़ जाने से वायुमंडल में विषाक्तता बढ़ती है। मनुष्यों की संख्या अत्यधिक बढ़ जाने, वृक्ष कटने, जंगल घटते जाने से भी वायु प्रदूषण बढ़ता है। कोलाहल तथा अणु विस्फोटों से उत्पन्न विकिरण भी आकाश में घातक तत्त्वों की भरमार करते हैं। इस अभिवृद्धि का परिणाम मनुष्यों के शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य पर बहुत बुरा पड़ता है। घुटन से धीमी आत्महत्या जैसी स्थिति बनती है। अणु-विकिरण से पीढ़ियों के अपंग होते जाने का खतरा है। इसके अतिरिक्त एक बहुत ही भयानक बात है—तापमान बढ़ते जाने से ध्रुवीय बरफ पिघल पड़ने और समुद्र जल में उफान आने का खतरा। इससे निचले धरातल के पानी में समा जाने का भय रहता है। जलीय भार संतुलन बिगड़ जाने से धरती डगमगाती है और जल स्थानों में थल उभरता है और थल स्थानों पर अगाध जल भर जाने जैसा खतरा रहता है। धरती के इतिहास में विभिन्न कारणों से ऐसी उथल-पुथल अनेक बार हुई है। प्रकृति संतुलन बिगड़ जाने से मौसम में भारी उलट-पुलट हुई है। लंबे हिमयुग आए हैं और अधिकांश प्राणी उसी में मर गये हैं। समय बदलने पर बचे-खुचे प्राणियों से नया प्रजनन क्रम चला है। पुरानी प्रजातियों के कितने ही जीवधारी अपना अस्तित्व गँवा बैठे हैं। इसी प्रकार अग्नि वर्षा के युग भी आये हैं, जिसमें जल और वनस्पतियों का ही नहीं, प्राणियों का भी सफाया हुआ है। ऐसे-ऐसे अनेक विग्रह संकट है, जो अंतरिक्ष में विषाक्तता बढ़ाने वाले असंतुलन के कारण उत्पन्न होते हैं। भूतकाल के ऐसे घटनाक्रमों को देखते हुए आशंका एवं संभावना सामने आती है कि, इन दिनों वायुमंडल से बढ़ती हुई विषाक्तता कहीं ऐसे ही पुरातन खंडप्रलयों को पुनरावृत्ति न करने लगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समय रहते प्रस्तुत विभीषिका से निपटने के लिए विश्व के शासकों, अर्थशास्त्रियों, दार्शनिकों और वैज्ञानिकों को मिलकर ऐसे उपाय सोचने चाहिए, ऐसे कदम उठाने चाहिए कि संव्याप्त विषाक्तता का परिशोधन हो सके और नई अभिवृद्धि पर कारगर अंकुश लग सके। बड़े कारखानों के स्थान पर छोटी विद्युत संचालित मशीनों का उपयोग हो, वे एक स्थान पर न लगें, छोटे–छोटे देहातों में बिखरें। बड़े शहरों को बढ़ने से रोका जाए और कस्बों में विकेंद्रीकरण हो। अणु विस्फोट एवं विकिरण पर रोक लगे। कोलाहल पर रोक लगे। धुएँ रहित ईंधन प्रयुक्त हो। ऐसे अनेक उपचार इस संदर्भ में अपनाए जा सकते हैं। वृक्षों की कटान रोकने और हरीतिमा संवर्द्धन की बात नए सिरे से सोची जा सकती है। इस प्रकार जनसंख्या वृद्धि पर आज जैसा स्वेच्छाचार अगले दिनों न चलने दिया जाना चाहिए।

यह भौतिक उपाय–उपचारों की चर्चा हुई, जो बढ़ते वायु प्रदूषण पर अंकुश लगा सकते हैं। प्रश्न तब भी अड़ा रह जाता है कि जितना प्रदूषण अब तक आकाश में भर गया, वह भी कम भयानक नहीं है। इसके परिशोधन का भी कोई कारगर उपाय निकलना चाहिए। इस संदर्भ में वृक्षारोपण बहुत ही कारगर उपचार है। यह कार्य हर व्यक्ति अपने स्तर पर कर सकता है।

हरीतिमा संवर्द्धन इस प्रयोजन के लिए सर्वमान्य सिद्धांत है। वृक्ष विषाक्तता को सोखते और प्राणप्रद वायु का उत्पादन करते हैं। पिछले दिनों वन संपदा बेतरह कटी है। नए उत्पादन के लिए प्रयत्न अपेक्षाकृत कम हुए, फलतः भूमिक्षरण, रेगिस्तान, बाढ़, सूखा जैसे अनेक संकट उत्पन्न हुए। उस भूल को अब सुधारा जाना चाहिए और वृक्षारोपण के लिए वनस्पति उत्पादन के प्रयत्न नए उत्साह के साथ आरंभ करने चाहिए। यह कार्य ऐसा है, जिसे सरकार अपने ढंग से, जन समुदाय अपने ढंग से संपन्न करते रह सकते हैं। प्रज्ञा अभियान इस प्रक्रिया को अपने ढंग से कार्यान्वित करने के लिए अग्रसर हो सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रदूषण निवारण के लिए हरीतिमा संवर्द्धन एक कारगर उपाय सिद्ध हो सकता है। अतः वृक्षारोपण पर इन दिनों विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। जिनकी अपनी भूमि है, वे उस पर निजी पेड़ लगाएँ। जिनके पास नहीं है, वे सरकारी या अन्य किसी की खाली भूमि पर अपनी ओर से पेड़ लगाने का परिश्रम करें और उसका स्वामित्व उन्हीं का मानें जिनकी भूमि है। सड़कों के किनारे सरकारी भूमि होती है। अधिकारियों को सूचना देकर—उन्हीं के लिए, उन्हीं के परामर्श से, अपनी ओर से पेड़ लगाने का प्रयास करने में कहीं कोई अड़चन न पड़ेगी। ऐसी भूमि अन्यत्र भी मिल सकती है, जहाँ हरीतिमा लगाने के लिए परिश्रम करने में अड़चन-अवरोध आड़े न आए।

अपने-अपने पूर्वजों की स्मृति में, किसी खुशी या सफलता के उपलक्ष्य में, स्मारक बनाने और पुण्य-परमार्थ कमाने की दृष्टि से भी वृक्षारोपण उपयोगी, महत्त्वपूर्ण एवं सर्व-सुलभ उपक्रम है। इसके लिए जन-जन में उत्साह उत्पन्न करने वाला लोकशिक्षण प्रचार आंदोलन चलना चाहिए।

☆ वृक्ष-वनस्पति के प्रति श्रद्धा अक्षुण्ण रहे

पेड़-पौधों के प्रति पूज्यभाव रखने की अपनी परंपरा सदियों-पुरानी है। दुनिया में कोई भी देश ऐसा नहीं, जिसमें एक त्यौहार केवल इसीलिए मनाया जाता हो कि उस दिन हर व्यक्ति वृक्षारोपण अवश्य करे। यह पर्व भी ब्राह्मण पर्व कहलाता है—अर्थात् वृक्षारोपण को ब्रह्मकर्म के समतुल्य माना गया है। महाभारत ने तो एक वृक्ष लगाने को सौ पुत्रों से बढ़कर पुण्य माना है।

इस उदात्त दृष्टिकोण में विराट् आत्म की अनुभूति भी संयुक्त हो सकती है और आत्मीयता के विस्तार का प्रायोगिक प्रशिक्षण भी। किसी भी दृष्टि से लें, यह एक उपयोगी और आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य परंपरा रही है। जिसकी वैज्ञानिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपयोगिता इन दिनों समझ में आ रही है। भारतीय संस्कृति में वृक्ष-वनस्पति हमारे सम्मुख त्रिदेवों की तरह अत्यंत पूज्य रूप में प्रतिष्ठित होते रहे हैं। ब्रह्मा के रूप में वे सृष्टि में सौंदर्य की रचना करते हैं। विष्णु के रूप में उनका पालन गुण सर्वविदित है। आज तो उनकी सर्वाधिक प्रतिष्ठा शिव रूप में है। इस रूप में मानवता का विष निरंतर पीते रहने का देवकार्य वे न कर रहे होते, तो बीसवीं शताब्दी धरती में जीवन के सर्वनाश की शताब्दी होती। आज का विज्ञान भी स्वीकारता है कि, मानवीय अस्तित्व फ्लोरा (पृथ्वी के वनस्पति जगत्) पर आधारित है। सूर्य से मिलने वाले अनुदान हम पचा नहीं पाते। यह वृक्ष ही हैं, जो कच्चे अन्न को भोजन के रूप में पकाकर देने वाली माँ की तरह सौर ऊर्जा को पहले स्वयं आत्मसात् करते और पीछे हमारे लिए उपयोगी और प्राणदायी बनाकर वातावरण में बिखेर देते हैं। इनके गुणों को देखकर ही किसी विद्वान् ने आज के बुद्धिवाद पर व्यंग करते हुए लिखा है कि, आज लोग मेट्रोलॉजिकल प्लांट, थर्मोप्लांट, हाइड्रोइलेक्ट्रिक प्लांट प्रभृति प्लांटों पर तो ध्यान देते हैं, पर प्लांट (पौधों) पर नहीं, जिनके बिना मनुष्य का जीवन संकट में पड़ सकता है।

थोड़े-से भी थोड़ा पढ़ा-लिखा व्यक्ति जानता है कि, प्रश्वास क्रिया—धुएँ तथा पदार्थों के सड़ने आदि से उत्पन्न कार्बन डाइ-ऑक्साइड जो एक विषैली गैस है—उसे पेड़-पौधे ही सूर्य के साथ होने वाली फोटो संश्लेषण क्रिया में काम में लेकर ग्रहण कर लेते हैं और बदले में ऑक्सीजन गैस छोड़ते हैं। जीवधारियों की प्रश्वास को अपनी श्वास और अपनी प्रश्वास को जीवधारियों के लिए श्वास बनाकर वृक्ष-वनस्पति सृष्टि में जो 'इकोलॉजिकल संतुलन' स्थापित करते हैं। उसी के कारण सृष्टि टिकी हुई है।

किंतु लगता है, मनुष्य उस संतुलन को बिगाड़ डालने और अपने ही हाथ अपनी 'खुदकुशी' करने को तुल पड़ा है। जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ अधिक कृषिभूमि, अधिक आवास, सड़कों,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहरों, फैक्टरियों, बड़े-बड़े कारखानों के लिए अधिक जमीन चाहिए, और यह सब जंगल साफ करके, वृक्षों का विनाश करके ही संभव है। वही हो रहा है, जिससे ऑक्सीजन और कार्बन डाइ-ऑक्साइड का संतुलन बिगड़ रहा है। ऑक्सीजन की जमा पूँजी कम और खर्च बढ़ने से पिछले ७० वर्षों में वातावरण में कार्बन डाइ-ऑक्साइड की मात्रा इतनी अधिक बढ़ गई है कि, पूरे ग्लोब का तापमान अभी से इतना हो गया है, जिसकी संभावना २०२५—२०३० के मध्य थी। इससे ग्रीन हाउस इफेक्ट बड़ी तेजी से क्रियाशील हुआ है। इस असंतुलन को पाटने के लिए अधिक से अधिक वृक्ष लगाने की आवश्यकता है। अब इसे मात्र धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, अपितु जीवनरक्षा की दृष्टि से भी पूरा किया जाना चाहिए।

कार्बन डाइ-ऑक्साइड के अतिरिक्त कल-कारखानों से सल्फर डाइ-ऑक्साइड, कैडमियम, लेड, नाइट्रोजन ऑक्साइड का विष भी बुरी तरह बढ़ता जा रहा है। टोक्यो (जापान), न्यूयार्क (अमेरिका) तथा लंदन (इंग्लैंड) के कुछ क्षेत्र ऐसे हैं, जहाँ साँस लेने तक में भी कष्ट होता है। यह विष मनुष्य देह के लिए प्रतिदिन ४० सिगरेटें पीने के बराबर नुकसानदायक होता है। शीशे (लेड) का जहर को किडनी डैमेज (गुर्दा नष्ट करना), ब्लड प्रेशर तथा मस्तिष्कीय क्रियाओं को क्षतिग्रस्त करता है। सल्फर डाइ-ऑक्साइड से अस्थमा तथा श्वास संबंधी कष्ट उठ खड़े होते हैं। हमारे देवता यह वृक्ष उस विष को पियें नहीं, तो हर व्यक्ति रोग शैया पकड़ लें।

एक वृक्ष एक ऋतु में वायुमंडल से १३० लीटर पेट्रोल के शीशे का अंश सोखकर उसे लेड फॉस्फेट में बदल देता है। यह पानी में घुलता नहीं, उसे वह अपने आप में जीवन भर आत्मसात् किए रहता है। मर जाने के बाद ईंधन के रूप में उसे ही मनुष्य के लिए उपयोगी बनाकर छोड़ जाता है। यही नहीं, बड़े कारखाने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जो ताप पैदा करते हैं; स्वयं प्रकृति की गरमी की असह्य मात्रा को भी संतुलित रखने में यह वृक्ष ही सहायक होते हैं।

एटॉमिक रेडिएशन (अणुविकिरण) जैसे हानिकारक प्रभाव से भी वृक्ष हमारी जीवन रक्षा करते हैं। मांट्रियल स्थित मैकगिल यूनिवर्सिटी की गैस्ट्रो इंटेस्टाइनल रिसर्च लैबोरेटरी ने अपनी शोधों के आधार पर बताया है कि साधारण घास तक रेडिएशन से रक्षा करती है। अतएव पृथ्वी में हरीतिमा अभिवृद्धि, वृक्षारोपण, पुष्पवाटिका अभियान को नैतिक कर्तव्य के रूप में पूरा करना चाहिए। शहरों में तो लॉन और पार्क इतने अधिक आवश्यक हैं कि, उन्हें मनुष्यजीवन का हृदय ही कहा जा सकता है। वह मस्तिष्क को दृष्टिमात्र से निद्रा प्रदान करने वाली शीतलता देते हैं। यदि शहरों में पार्क न हों, तो पागलपन की मात्रा इतनी अधिक बढ़ सकती है कि, उसे संभालना ही कठिन हो जाए।

जेट हवाई जहाजों, भारी मात्रा में रेलों, बसों, भारवाहनों तथा फैक्टरियों आदि के शोरगुल से कानों में सीधा आघात पहुँचता है। वृक्ष न हों, तो यह शोरगुल ही लोगों को बहरा बना सकता है। किसी भी रूप में वृक्षों के प्रति श्रद्धा व्यक्त किए बिना काम चलेगा नहीं।

जंगल अनावश्यक न कटें, यह कार्य सरकार देखे, पर मनुष्य को तो स्थान-स्थान पर वृक्षारोपण करना ही चाहिए। घरों के आस-पास गमलों, लकड़ी की पेटियों में फल-फूल, सब्जियाँ लगाकर अपने लिए दोहरे लाभ की व्यवस्था कर सकते हैं। फूलों के पौधे तो जहाँ कहीं भी निरर्थक स्थान मिले, वहीं रोपें। यह न कहें कि, यह स्थान उनका तो है ही नहीं। मानवता की सुरक्षा का दायित्व सब पर है, उसे उदारतापूर्वक पूरा किया जाना चाहिए।

❑❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारे जीवन में वनों का महत्त्व

पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से वृक्षों का महत्त्व मात्र वायु, जल प्रदूषण पर नियंत्रण करना, मिट्टी के कटाव, उर्वरकता आदि को बनाए रखना ही नहीं है, बल्कि वृक्षों का बहुत ज्यादा प्रभाव सूक्ष्म पर्यावरण पर पड़ता है। वृक्षों-वनों के इस प्रभाव को मनुष्य ही नहीं अन्य प्राणियों के भी रहन-सहन, खान-पान, चिंतन-व्यवहार आदि कृत्यों में भी स्पष्टतया देखा जा सकता है। इसी कारण वृक्षों को ऋषियों ने देवता की उपाधि दी थी।

वृक्षों की नीली छटा के लिए हमारे पूर्वजों में जो प्रेम था, वह हममें भी होना चाहिए। हमें अपनी वन-प्रधान संस्कृति की ओर अभिमुख होना चाहिए। वनों की छाया में जन्म लिया। वृक्षों के पत्तों पर प्रभातकालीन-जलकण का जलपान किया। समीर में डोलती हुई पत्रावलियों में से आते हुए चंद्रकिरण के साथ नृत्यकला के प्रथम पाठ पढ़े। इस संस्कृति के मौलिक सिद्धांतों को अर्वाचीन जीवन में हम ला सकते हैं। हर एक युग में अपनी संस्कृति की प्रेरणा से हमने संस्कारों की मूलभूत भावनाओं को सुदृढ़ बनाया है। इतना ही नहीं, विभिन्न युगों में जो विषमताएँ उपस्थित हुईं, भारतवासियों ने उन्हें भेदने के लिए इन मूल्यों को शक्ति और व्यापकता प्रदान की।

एक समय ऐसा भी था, जब हमारी संस्कृति सर्वांग जीवन को समरस बनाती थी। आर्थिक जीवन पर भी उसका प्रभाव पड़ता था। लेकिन आज हमने इन प्रश्नों को एक-दूसरे से बिलकुल पृथक् कर दिया है। सच तो यह है कि—समस्त जीवन एक है, अभेद्य है। यह सत्य देखने की कला हमारे हाथों से निकल गई है, पर यह बहुत स्पष्ट है कि जब तक समस्त जीवन को एक रूप में देखने की कला हम फिर से नहीं सीखेंगे, तब तक हममें न राष्ट्रीय आत्मविश्वास आएगा और न इस भयंकर परिस्थिति से पार उतरने की शक्ति आएगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आज जो बहुत बड़ा प्रश्न हमारे सामने है, उसको लीजिए। भारत में कभी भी अन्न की कमी नहीं थी। भूतकाल में भारत धान्य और धन से समृद्ध था। आज अन्न की न्यूनता हमारे सामने तांडव कर रही है। जो माता अभी तक **'सुजलां सुफलां शस्य श्यामलां'** थी, वह क्षीण हो गई है। अपनी संतानों को भी वह खिला नहीं सकती। क्यों ? क्योंकि जो हमारी सांस्कारिक प्रणाली है, उसको नवीन दृष्टि से देखने की शक्ति हममें नहीं रही, किंतु यह बात निश्चय समझिए कि इस शक्ति के बिना हम अर्वाचीन जीवन में टिक नहीं सकते।

कहा जाता है, "वृक्ष ही जल है, जल रोटी है और रोटी ही जीवन है।" यह वाक्य नग्न सत्य है। आज सभी भारतीय हृदयों में असंतोष भरा है; क्योंकि हमारे पास खाने को अन्न नहीं। हमारे पास अन्न नहीं है; क्योंकि पानी संग्रह करने की पुरानी पद्धति हम हस्तगत नहीं कर सके। हमारे पास पानी नहीं है, वर्षा अनिश्चित है; क्योंकि हम तरु-महिमा भूल गए हैं। हजारों वर्षों तक हम जीवित रहे; क्योंकि हम वन-बिहारी लोग थे, लेकिन आज हमारी दृष्टि संकुचित हो गई। हम नये-से बन गये। तरु-महिमा की हमको परवाह नहीं रही। वृक्षों को हम काटने लगे। वृक्षारोपण आज एक फैशन बन गया है, परंतु उसमें जो धार्मिक श्रद्धा का तत्त्व था, वह चला गया।

हमारी सारी संस्कृति वन-प्रधान है। ऋग्वेद, जो हमारी सनातन शक्ति का मूल है, वन-देवियों की अर्चना करता है। मनुस्मृति में वृक्ष-विच्छेदक को बड़ा पापी माना गया है। उसके लिए दंड का विधान किया है। मत्स्यपुराण में कहा गया है—"जो आदमी वृक्षों को नष्ट करता है, उसे दंड दिया जाए।" तालाबों, सड़कों या सीमा के पास के वृक्ष को काटना बड़ा गंभीर अपराध था। उसके लिए दंड भी बड़ा कड़ा रहता था। मत्स्यपुराण में कहा गया है कि, जो वृक्षारोपण करता है, वह तीस हजार पितरों का उद्धार करता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। अग्निपुराण भी वृक्ष-पूजा पर जोर देता है। वृक्षों का रोपण स्नेहपूर्वक और उनका परिपालन पुत्रवत् करना चाहिए।

पुत्र और तरु में भी भेद है, क्योंकि पुत्र को हम स्वार्थ के कारण जन्म देते हैं, परंतु तरुपुत्र को तो हम परमार्थ के लिए ही बनाते हैं। ऋषि-मुनियों की तरह वृक्षों की पूजा करनी चाहिए, क्योंकि वृक्ष तो द्वेष-वर्जित है। जो छेदन करते हैं, उन्हें भी वृक्ष छाया, पुष्प और फल देते हैं।

इसलिए जो विद्वान् पुरुष हैं, उनको वृक्षों का रोपण करना चाहिए और उन्हें जल से सींचना चाहिए।

हम स्वर्ग की बात क्यों करें ? हम वृक्षारोपण करके यहाँ ही स्वर्ग क्यों न बनावें ? समस्त इतिहास में महान् सम्राट् अशोक ने ही कहा है—"रास्ते पर मैंने वट वृक्ष रोप दिये हैं, जिनमें मानवों, पशुओं को छाया मिल सकती है। आम वृक्षों के समूह भी लगा दिए हैं।" आज प्रभुत्वसंपन्न भारत ने इस महाराजर्षि के राज्य-चिन्ह ले लिए हैं। वैसे तेईस सौ वर्ष पूर्व उन्होंने देश में एकता स्थापित की थी, वैसी ही हमने भी प्राप्त कर ली है। क्या हम इस संदेश को नहीं सुनेंगे ? हम इस संदेश को सुनकर निश्चय ही ऐसा प्रबंध करेंगे, जिससे भारत के भावी प्रजाजन कह सकें कि, हमने भी हर रास्ते पर वृक्ष उगाये थे, जो मानवों और पशुओं को छाया देते हैं।

कन्हैयालाल जी को वनों से बहुत लगाव था, उनका ही कहना है—"मेरा जन्म शहर में हुआ और शहर में ही प्रायः मैं रहा, किंतु तरुओं के प्रति मेरा प्रेम सदा ही रहा। मथिरान की वृक्षावलियों की छाया में ही मैंने जीवन की सुंदरता और प्रेरणा पाई है। अपने जीवन के महासंकल्प भी मैंने वहाँ ही किए। काश्मीर में पहलग्राम के ऊपर बैंसस के देवदारु-वृक्षों की छाया में मुझे आत्मसिद्धि का भी स्पर्श हुआ। जंगल के पथ पर जाते ही वनदेवियों ने मुझे कल्पना-विकास की शिक्षा दी थी और अपना उपन्यास 'भगवान् कौटिल्य' लिखते समय नैमिषारण्य के काल्पनिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दर्शन करते हुए ही अपनी सनातन संस्कृति की अमर आत्मा का मुझे साक्षात्कार हुआ।"

हमारी संस्कृति में जो सुंदरतम और सर्वश्रेष्ठ है, उसका उद्‌भव सरस्वती के तट के वनों में हुआ। आर्यावर्त के एक श्रेष्ठ द्रष्टा ने ऋग्वेद में कहा है—"वरुण, अग्नि, पानी और औषधि आप सब तृप्त हों। मरुतों के आलिंगन से हमें सुख मिले और इन सब देवताओं के आशीर्वाद से हमारा रक्षण हो।" नैमिषारण्य के वन में शौनक मुनि ने हमको महाभारत की कथा सुनाई— महाभारत, जो भारतीय आत्मशक्ति का स्रोत है। हमारे अनेक तपोवनों में ही ऋषि-मुनि वास करते थे, आजीवन अपने संस्कार, आत्मसंयम और भावनाओं को सुदृढ़ बनाते थे। भारतीय स्मरण भंडार नंदनवन के सौंदर्य से भरा हुआ है। महिलाओं में श्रेष्ठ सीताजी के भव्य आत्म समर्पण की निश्वासपूर्ण करुणा अशोक-वन से संबंध रखती है। हमारे जीवन का उल्लास वृंदावन के साथ लिपटा हुआ है। वृंदावन को हम कैसे भूल सकते हैं ? वहीं कृष्ण भगवान् ने यमुना-तट पर नर्तन करते हुए डालियों और पुष्पों की ताल के साथ अपनी वेणु बजाई। उसकी ध्वनि आज भी हमारे कानों में सुनाई देती है और भगवान् ने ही कहा था—**"अश्वत्थः सर्व वृक्षाणां'** अर्थात् मैं वृक्षों में अश्वत्थ हूँ।

हमको पूर्वजों की ज्वलंत संस्कृति मिली है, परंतु हम उसके योग्य नहीं रहे। हम अपने वनों को काट डालते हैं। हम वृक्षों का आरोपण करना भूल गए। वृक्ष-पूजा का हमारे जीवन में स्थान नहीं रहा। हमारी स्त्रियों में से शकुंतला की आत्मा चली गई। शकुंतला वृक्षों को पानी दिए बिना आप पानी ग्रहण नहीं करती थी। आभूषण—प्रिय होते हुए भी वह यह सोचकर पल्लवों को नहीं चुनती थी कि, इससे वृक्षों को दुःख होगा। जब वृक्षों में फल आते, तो वह बहुत ही आनंद अनुभव करती थी।

पार्वती ने देवदारु को पुत्र के समान समझकर, माँ के दूध के समान पानी पिलाकर बढ़ाया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मंजरित वृक्षों का सौंदर्य हम नहीं भूल सकते। हम नहीं भूल सकते भव्य वृक्षों का अद्भुत गौरव और वृद्ध ऋषियों के समान जगत् के कल्याण में ही जीवन साफल्य समझने वाले वनों को। यदि प्रत्येक पुरुष और स्त्री वृक्षों के महत्त्व को समझे और पुत्रवत् उनका परिपालन करे तो भारत का हर नगर, हर गाँव जीवनोल्लास से ओतप्रोत हो जाएगा। यह सुगम और सीधा-सा तथ्य भी हम कैसे भूल सकते हैं !

हमारे पूर्वज वृक्षों को कितनी श्रद्धा एवं सम्मान की दृष्टि से देखते थे, इसके कितने ही प्रमाण भारतीय साहित्य में मिलते हैं। आज भी कई वृक्षों की पूजा करने की प्रथा प्रचलित है। अब प्रति वर्ष वन-महोत्सव मनाने के आयोजन करके लोगों को फिर से वृक्षों के महत्त्व को समझाने की जरूरत है।

प्राचीन भारत में वृक्षों का धार्मिक महत्त्व विशेष था। प्राचीन साहित्य में अरण्यों एवं वनों के प्रसंग बहुत आते हैं और मूर्तिकला और चित्रकला में तो वृक्षों और पुष्पों का विशेष स्थान रहा है।

सिंधु घाटी-सभ्यता के अवशेषों से पता चलता है कि, उस युग के लोगों को वृक्ष कितने प्रिय थे ? उनके मिट्टी के बरतनों पर पीपल के पत्ते के चित्र मिलते हैं। उनके राज्य-चिन्हों में तो झुकी हुई डालों वाला वृक्ष अंकित है और दूसरे में एक ऊँचे वृक्ष पर बैठा हुआ एक मनुष्य तथा उसके नीचे एक क्षुधातुर व्याघ्र अंकित मिलता है।

वेदों में पर्वतों और नदियों, मेघों के गर्जन और बिजली की कड़क, प्रचंड वायु, प्रभात की सुषमा, शीतल झरने, वृक्ष और वनों का वर्णन आता है। वनदेवी की स्तुति में लिखी गई ऋग्वेद की एक ऋचा में प्रकृति का शब्द-चित्र खींचा गया है। अश्वत्थ और न्यग्रोध की लकड़ी से बने हलों और रथों का प्राचीन ग्रंथों में प्रायः वर्णन आया है। आरण्यकों के विषय में तो कहा गया है कि, उनका अध्ययन वन के शीतल और एकांत स्थान में करना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रामायण और महाभारत के घटना स्थल बहुधा वनों में ही हैं। महाभारत में खांडव वन के जलने का उल्लेख है और रामायण में पंचवटी वन की रमणीयता का वर्णन किया गया है। पुराणों में वृक्षों के माहात्म्य, वृक्षारोपण के पुण्य और वृक्ष काटने के पाप के संबंध में बहुत कुछ कहा गया है।

अग्निपुराण में गृहनिर्माता से कहा गया है—"घर के उत्तर में पलाश, पूर्व में बड़, दक्षिण में आम और पश्चिम में अश्वत्थ के वृक्ष लगाने चाहिए। दक्षिणवर्ती सीमा पर काँटेदार झाड़ी लगानी चाहिए। घर के पास ही फूलों का एक बगीचा लगाना चाहिए, जिसमें फूलों के पौधे और शीशम के वृक्ष लगाये जाएँ।"

इसी पुराण में वृक्षों की पूजा का माहात्म्य बताया गया है—"जो मनुष्य लोगों के हित के लिए वृक्ष लगाता है, वह मोक्षपद प्राप्त करता है। वृक्ष लगाने वाला मनुष्य अपने ३०,००० भूत और भावी पितरों को मोक्ष दिलाने में सहायक होता है।" मत्स्यपुराण में कहा गया है—"१० कुएँ बनवाना एक ताल बनवाने के समान है। १० तालों का निर्माण एक झील के निर्माण के बराबर है। १० झील बनवाना एक सुपुत्र प्राप्त करने के समान पुण्यकारक है, किंतु दस पुत्रों का पुण्य केवल एक वृक्ष लगाने से प्राप्त हो जाता है।"

बुद्ध भगवान् को वट वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था। बौद्ध कला और साहित्य में इसका निरंतर उल्लेख आता है। सिकंदर और यूनानियों ने भारत के विशाल वट वृक्षों को देखकर आश्चर्य किया था।

हमारी संस्कृति जो सुंदरतम और श्रेष्ठतम है, उसका उद्‌भव आश्रमों और तपोवनों में हुआ था। हमारे संस्कारों पर नंदनवन के सौंदर्य और सती सीता के कारण अशोक वन के करुणापूर्ण वातावरण की छाप लगी हुई है और वृंदावन को भी हम कैसे भूल सकते हैं, जहाँ कृष्ण भगवान् ने अपना महान् संदेश हमें सुनाया था ? तात्पर्य यह है कि, पर्यावरण संरक्षण में वृक्षों और वनों की उपयोगिता के संदर्भ में जन-सामान्य को कुछ हजार वर्ष

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पूर्व तक अच्छे से ज्ञान था। पिछले दो शताब्दियों में हुई वैज्ञानिक व भौतिक प्रगति की चकाचौंध में हमने वनस्पति जगत् के साथ बहुत अन्याय किया है और प्रतिफल में हम लोग अनेकानेक शारीरिक मानसिक समस्याओं तथा अनिश्चितताओं से ग्रसित हो गए हैं। अपनी विचारक्रांति अभियान—यु० नि० यो०—को प्रारंभ में ही पर्यावरण संतुलन से उठने वाली संभावित विपदाओं की जानकारी थी। यही कारण है कि अपने कार्यक्रमों में वृक्ष-वनस्पति के लगाए जाने पर बहुत जोर दिया गया है तथा इस कार्य के लिए गायत्री परिजनों को सतत प्रेरित किया गया है।

☆ फूल लगाइये, फल उगाइए

भारत एक धार्मिक देश है। यहाँ की जीवन-पद्धति में फूलों और फलों का अत्यधिक महत्त्व रहा है। मनुष्य जीवन की भावनात्मक सुंदरताओं के प्रतीक के रूप में ही नहीं, मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य और पर्यावरण संशोधन की दृष्टि से भी इसका मुख्य स्थान रहा है। ऋग्वेद में फल-फूल संवर्धन का अनेक स्थानों पर वर्णन है। ऋषियों के आश्रम फूलों और फलों से अच्छादित निकुंज कहलाते थे। उन्हें परमात्मा की अनुपम कृति के रूप में इनसे अद्भुत प्यार था। परमात्मा को समर्पित करने वाली वस्तुओं में इन्हें सर्वोत्तम समझा जाता था। आज भी यदि हम फल-फूल के महत्त्व को समझकर अपने घरों में—गमलों में, आस-पास की खाली जमीन में लगाने लगें, छोटी-सी दीखने वाली पर वृहत् पर्यावरण को प्रभावित करने वाली इस प्रक्रिया में स्वयं भागीदार बन दूसरों को भी प्रेरित कर सके, तो निश्चय ही उल्टे को उलटकर सीधा करने के समान युग विभीषिका रूपी प्रदूषण बसंत-बयार, सतयुग में परिवर्तित होता कुछ वर्षों में ही दीख पड़ने लगेगा।

मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की सांस्कृतिक विशेषताओं में फूलों और फलों का प्रमुख स्थान है। मथुरा, कुषाण तथा भरहुत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की मूर्तिकलाओं में अनेक प्रकार के पुष्पों, वृक्षों और लताओं का दिग्दर्शन है। बौद्ध-मठ उद्यानों में स्थापित किए जाते थे। प्राचीनकाल में माली आदि जातियों का यह मुख्य व्यवसाय ही समझा जाता था। राजपूतों और मुगलों के शासनकाल में भी बागवानी का बड़ा महत्त्व रहा है।

संसार के प्रत्येक धर्म और संस्कृति में फूलों के प्रति गहन प्यार प्रदर्शित किया गया है। आज के युग में भी फूल मनुष्य को मानसिक शांति और आरोग्य प्रदान करने में वही महत्त्व रखते हैं। हिंदूधर्म में एक बाग लगाने का पुण्यफल सौ यज्ञों के फल के बराबर माना गया है। इस कथन में आध्यात्मिक अलंकार चाहे कुछ भी हो, पर मनुष्यजीवन में फूल और फलों के पौधे जो प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं, उसे देखते हुये इस कथन को अतिशयोक्ति नहीं मान सकते।

बागवानी जीविकोपार्जन का एक बड़ा सुंदर साधन है। इसे सहायक व्यवसाय या प्रमुख धंधे के रूप में भी अपनाया जा सकता है। नियमित बागवानी से कमाई हुई आमदनी अच्छी खेती से कहीं बढ़कर होती है। ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जिनसे यह बात पूर्णतः सिद्ध भी हो जाती है। बंगलौर शहर को अकेले 'कट फ्लावर' बेचने से प्रतिवर्ष एक करोड़ रुपये की आमदनी हो जाती है। भारतवर्ष प्रतिवर्ष आम और दूसरे फलों का निर्यात करता है और करोड़ों रुपयों की विदेशी मुद्रा पैदा करता है। विदेशों की यह रकम अप्रत्यक्ष रूप से फलोत्पादकों तक पहुँचती है। कृषि-विशेषज्ञों का अनुमान है कि, एक एकड़ नारंगी के बाग से प्रतिवर्ष ४ हजार की बचत और अमरूद-पपीते आदि से एक हजार से लेकर २ हजार रुपये तक की वार्षिक बचत हो सकती है। यह आमदनी अन्य जिन्स उपजाने की अपेक्षा बहुत अधिक है।

इस महत्त्व को दरअसल विदेशों ने हमसे ग्रहण किया और उसका प्रचुर लाभ उठाया, जब कि हमारे देश में बागवानी का निरंतर ह्रास हो रहा है। जंगलों और वृक्षों का यहाँ तेजी से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सफाया किया जा रहा है, जिससे फूलों और फलों का अभाव बढ़ता जा रहा है।

वृक्षों का प्राकृतिक जलवायु से भी गहन संबंध है। वृक्ष वातावरण में मनुष्यों और पशुओं द्वारा पैदा की हुई कार्बन डाइ-ऑक्साइड स्वयं पीकर उनके लिए स्वास्थ्यवर्धक प्राण वायु निष्कासित करते रहते हैं। भारतवर्ष में नीम एक ऐसा वृक्ष है, जो रात में भी ऑक्सीजन छोड़ता है और दिन की तरह रात में भी समीप रहने वालों को प्राण वायु प्रदान करता है। फूलों में चंपा, अमलतास, कचनार, गेंदा, गुलमुहर, सोनमुखी, गुलाब, मोंगरे आदि की सुगंधि और मादकता मनुष्य में एक नई स्फूर्ति, नई ताजगी और नवजीवन भरते रहते हैं। फूलों के बीच पहुँचकर दुःखी मनुष्य के जीवन में भी उत्साह आ जाता है। फूलों और फलों का आध्यात्मिक महत्त्व इतना अधिक है, जिसका वर्णन भी नहीं किया जा सकता।

जलवृष्टि में जंगलों को सर्वोपरि महत्त्व दिया जाता है। जहाँ प्रकृति की सघनता होती है, वहाँ वर्षा भी नियमित होती है। इसके विपरीत जैसे वीरान प्रदेश—जहाँ पेड़-पौधों का अभाव होता है, अनियमित वर्षा होती है, जिससे न तो फसलों को ही लाभ होता है और न सिंचाई के अन्य साधनों के लिए वर्ष भर के लिए पर्याप्त जल की व्यवस्था हो पाती है।

सब्जियाँ, विटामिन, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, चर्बी और खनिज तत्त्वों का महत्त्वपूर्ण स्रोत होती हैं। संतुलित आहार और अच्छे स्वास्थ्य के लिए इनका जितना अधिक उपयोग किया जाए, उतना अच्छा है। पेट को साफ रखने में सब्जियाँ तथा फल अद्वितीय स्थान रखते हैं। वर्तमान खाद्य संकट को दूर करने के लिए भी इनका जितना अधिक से अधिक उपयोग हो सके, उतना ही अच्छा। सब्जी और फलों का उत्पादन जितना बढ़ेगा, अन्न का दबाव और खपत उतनी ही कम होगी, फलस्वरूप विदेशों से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निर्यात होने वाला गेहूँ बंद हो जाएगा और राष्ट्रीय आमदनी की बचत होगी, जिससे विकास आयोजनों के लिए पैसा बचेगा।

एक या अधिक बीघे जमीन में १० गज की दूरी पर एक सीध में गड्ढे खोद लेने चाहिए। यह कार्य बरसात के दिनों में करना चाहिए। पौधों की प्रारंभिक सुरक्षा और आवश्यकताओं की दृष्टि से तथा कम परिश्रम में अधिक काम की दृष्टि से भी यह ऋतु बागवानी के बहुत उपयुक्त पड़ती है। इन महिनों में खाद डालकर नीचे की मिट्टी की कई बार गोड़ाई करके उन्हें पौध लगाने के उपयुक्त बना लेना चाहिए।

खेत के चारों ओर मिट्टी या काँटेदार झाड़ियाँ जैसे नागफनी आदि से घेर देना चाहिए और पहली पंक्ति में चारों ओर घने केले तथा पपीते के पौधे लगा देने चाहिए, फिर बीच के थहलों में संतरे, नींबू, नासपाती, मौसम्मी, अमरूद तथा आम की पौध मँगाकर लगा देनी चाहिए। बरसात के दिनों में यह पौध जड़ पकड़ लेती है, इसके बाद केवल सिंचाई, गोड़ाई और सामान्य सुरक्षा की आवश्यकता रह जाती है, इसे बहुत आसानी से अवकाश के समय में बच्चे तथा स्त्रियाँ भी कर सकती हैं। बच्चों में यह शौक पैदा कर दिया जाए, तो वे बड़ी रुचि लेते हैं।

बीच के खाली स्थानों में तुलसी और विभिन्न फूलों के पौधे लगा देना चाहिए, जिससे वहाँ के वातावरण में चारुता उत्पन्न होती है। फूलों में स्वास्थ्य संवर्धन एवं मानसिक प्रसन्नता देने की प्रचुर शक्ति होती है, इसलिए यह कार्य कष्टकर भी नहीं हो सकता।

यह बात तो उनके लिए रही, जिनको पर्याप्त जमीन उपलब्ध हो, पर जिनके पास जमीन अधिक न हो, शहरों में रहते हों, उन्हें घर के आसपास पड़ी बेकार जमीन, कुएँ के आसपास के स्थान तथा गमलों का प्रयोग करना चाहिए। घर के आसपास फूल लगाए जा सकते हैं। बरसात के दिनों में जहाँ छप्परों से वर्षा का जल टपकता है, उन ओरौतियों के पास छोटे-छोटे गड्ढे खोदकर उसमें लौकी, तोरई, कद्दू, चचीडे, टमाटर आदि सब्जियाँ लगा देनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाहिए और इनकी बेलों को बाँस की लकड़ियों या दीवार के सहारे से छत पर चढ़ा देना चाहिये। वहाँ वे बेलें अपना पूरा फैलाव भी ले लेती हैं, धूप भी लगती है और सब्जियाँ भी सुरक्षित रह सकती हैं। इस प्रकार बहुत-सी सब्जी का उत्पादन कर सहायक धंधा या खाद्य की कमी को दूर किया जा सकता है।

घरेलू उद्यानों में खर्च की लागत भी नहीं आती, सिंचाई भी श्रमसाध्य नहीं होती और आसपास का कूड़ा-करकट खाद का काम कर देता है। प्रत्येक फसल के बीज के लिए एक-दो फल छोड़ रखे जाएँ तो उसकी परेशानी नहीं रहती। धनियाँ, मेथी, अरवी, गोभी, बैंगन, टमाटर आदि प्रत्येक व्यक्ति घर के आस-पास बड़ी आसानी से उगा सकते हैं। मनोरंजन, स्वास्थ्य, वातावरण की सुंदरता, शुद्ध वायु आदि सभी दृष्टियों से इसमें लाभ ही लाभ है।

शहरों में जहाँ स्थान की नितांत कमी होती है, वहाँ भी गमलों में सुंदर-सुंदर फूल उगाकर रखे जा सकते हैं। कुछ हलकी सब्जियाँ तथा तुलसी के पौधे वहाँ भी उगाकर वायु-शुद्धि, कड़ी धूप, लू तथा ठंडक से बचाव के लिए वायु अवरोधक के रूप में लाभ उठाया जा सकता है।

आध्यात्मिक, धार्मिक, आर्थिक तथा नैतिक सभी दृष्टियों से बागवानी करना सभी के लिए अति लाभदायक है। लोग इसे शौक में, सहायक व्यवसाय या प्रमुख व्यवसाय के रूप में भी अपना सकते हैं, इसमें व्यक्तिगत, समाज और राष्ट्र सभी का भला है।

फूलों-फलों एवं हरीतिमा से भरी हुई वृक्षावली मनुष्य की सौंदर्य चेतना को उद्‌बुद्ध करने में सबसे अधिक सफल और सहायक सिद्ध हुई है। संसार का सारा सौंदर्य, प्रकृति की सुंदरता का ही प्रतिबिंब है। जिस समय फली-फूली एवं रंग-बिरंगी प्रकृति पर मनुष्य की दृष्टि पड़ती है, उस समय उसकी आत्मा में जो सात्त्विक सौंदर्यानुभूति होती है, वह आध्यात्मिक अनुभूति ही होती है। उस समय उसके प्राणों में स्वयं परमात्मा ही सौंदर्य बोध में प्रबुद्ध हुआ करता है। निस्संदेह, यदि मनुष्य की वह सौंदर्यानुभूति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्थायी हो जाए, तो उसकी पावन पुलक उसे जीवनमुक्त ही बना दे। प्राकृतिक सौंदर्य जहाँ मनुष्य को प्रसन्न बनाता है, वहाँ उसके मन बुद्धि तथा आत्मा को निर्विकारता भी प्रदान करता है, मनुष्य की यह त्रिविध निर्विकारता आध्यात्मिक उन्नति की आधारभूत भूमिका है।

वृक्षों के इसी अनिर्वचनीय महत्त्व के कारण भारतवर्ष के अध्यात्म प्रणेता ऋषि-मुनियों ने वृक्षारोपण एवं उनके पालन-पोषण को एक धार्मिक पुण्य तथा उनके उन्मूलन एवं विनष्ट करने को भयानक पाप बतलाया है। वृक्षों का महत्त्व बतलाते हुए विष्णुस्मृति में वर्णन किया है—

वृक्षारोपिता एंव परलोके सुतास्मृताः।
वृक्षप्रदो वृक्ष पुष्पै देवीन्प्रीणयति सदा।।
फलैश्च तेऽतिथीन् पूज्य छाययाभ्यागतान्तथा।
देवे वर्षत्युदकेन पितृन् तर्पयति सदा।।
पुष्प दानेन लोकेऽस्मिन् श्रीमान् भवति निश्चितम्।
कूपाराम तडागांश्च देवतायतनानि च।
पुनः संस्कारकर्त्ताऽपि लभते मौलिकं फलम्।।

अर्थात्—जो मनुष्य वृक्ष लगाता है, वे वृक्ष परलोक में उसके पुत्र बनकर जन्म लेते हैं। वृक्षों का दान देने वाला उसके फूलों से देवताओं को प्रसन्न करता है। फलों द्वारा अतिथियों को संतुष्ट करता है और वर्षा में छाया द्वारा पथिकों को सुख देता है तथा जल द्वारा पितरों को प्रसन्न करता है। पुष्पों-फूलों का दान करने वाला श्रीमंत बनता है और कुआँ, तालाब तथा देवस्थानों का संस्कार कराने वाला नया बनवाने के समान पुण्य फल प्राप्त करता है।

इस प्रकार वृक्षारोपण तथा पोषण के आध्यात्मिक महत्त्व को समझते हुए प्रत्येक धर्म-प्रेमी तथा आध्यात्मिक जिज्ञासु को अपने जीवन में अनेक वृक्ष लगाने चाहिए और उन्हें पुत्र की तरह प्रेम से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पालन करना चाहिए। और जहाँ तक संभव हो, किसी लाभ, लोभ अथवा आवश्यकता से कोई हरा वृक्ष तो काटना ही नहीं चाहिए। इन दिनों पर्यावरण प्रदूषण की भीषण समस्या रही है, जिनके लिए संभव हो खाली जमीन पर वृक्ष लगाकर एक श्रेष्ठ पुण्यपरमार्थ उपार्जित करना चाहिए।

☆ प्रदूषण निवारण और तुलसी आरोपण

एक छोटा किंतु अति महत्त्वपूर्ण कार्य प्रबुद्ध लोगों को विशिष्ट रूप से अपने हाथ में लेना चाहिए। वह है—घर-घर में, हर आँगन में तुलसी का बिरवा स्थापित करने का। इसमें घर की सीमा में वायु शोधन का क्रम चल पड़ेगा। कृमि-कीटकों को मक्खी-मच्छरों से लेकर सर्प-बिच्छुओं तक को भगाने का लाभ मिलेगा। सबसे बड़ी बात यह है कि, इस थावले के वृक्ष भगवान् का खुला देवालय बिना किसी खर्च के थोड़े-से परिश्रम भर से सहज ही विनिर्मित किया जा सकेगा। भगवान् की प्रतिमाएँ मात्र धातु-पाषाण की ही नहीं होती, वरन् वृक्ष रूप में भी हो सकती है। प्रयाग का अक्षय वट-बुद्ध का—बोधि वृक्ष साक्षात् भगवान् के प्रतीक माने जाते हैं। घरों में तुलसी का थावला उसी प्रयोजन की पूर्ति कर सकता है। सूर्यार्घ के रूप में जल चढ़ाने, अगरबत्ती-दीपक जलाने, परिक्रमा करने, मानसिक जप ध्यान करने भर से उसकी पूजा आरती हो जाती है। यह उपक्रम ऐसा है, जिसे कोई भी शिक्षित-अशिक्षित भली प्रकार कर सकता है। बाल-वृद्ध, नर-नारी सभी उसमें समान रूप से भाग ले सकते हैं। घर में आस्तिकता का, धार्मिकता का वातावरण बने, तो उसके परिणाम दूरगामी होते हैं। भावश्रद्धा और धर्मनिष्ठा का व्यक्तित्व को पवित्र, प्रखर बनाने में असाधारण योगदान रहता है। तुलसी आरोपण को एक सर्वोपयोगी देवालय के रूप में स्थापित करके प्रकारांतर से सद्भाव संवर्द्धन की आधारशिला रखी और नींव गहरी की जानी चाहिए। इसका पर्यावरण संशोधन के साथ सीधा संबंध है। इस आंदोलन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को अग्रगामी बनाने के लिए प्रज्ञा परिजनों को बीज एकत्र करने चाहिए। पौध उगानी चाहिए और स्थापना के लिए घर-घर टोली बनाकर पहुँचने की योजना बनानी चाहिए।

तुलसी की रोग निवारक शक्ति से तो सभी परिचित हैं। अनुपान भेद से उसे सभी रोगों में घरेलू चिकित्सा की तरह प्रयुक्त किया जा सकता है। तुलसी पत्र की काली मिर्च के साथ गंगाजल में पीसकर गोलियाँ बना ली जाए और उन्हें गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित करके देते रहा जाए, तो इस एक ही औषधि से अनेक रोगों के निवारण करने वाली चिकित्सा पद्धति हाथ लग सकती है। वैसे विभिन्न रोगों में—विभिन्न उपचारों के साथ "तुलसी का प्रयोग करने की विधि-व्यवस्था" नामक पुस्तक में अलग से छपी है। उसे दो चार बार मनोयोगपूर्वक उलट-पुलट लेने भर से शारीरिक ही नहीं, मानसिक रोगों के निवारण में भी आश्चर्यजनक सहायता, सफलता मिल सकती है। स्वस्थ लोग ही पर्यावरण को स्वस्थ बनाने में सहायक हो सकेंगे।

हर व्यक्ति-प्राणी, हर पदार्थ के तीन स्तर होते हैं, स्थूल, सूक्ष्म और कारण। स्थूल में गतिविधियाँ, सूक्ष्म में प्रेरणाएँ और कारण में भावनाओं का समावेश रहता है। यह सिद्धांत वृक्ष, वनस्पतियों पर भी लागू होता है। पशुओं में गाय की जो दिव्यता है, वही नदियों में गंगा, पर्वतों में हिमालय, वृक्षों में पीपल तथा वनस्पतियों में तुलसी में विद्यमान है। फलतः इस कारण शक्ति के साथ जहाँ भी संपर्क सधता है, वहीं उत्कृष्टता का प्रवाह उमड़ता है। श्रेष्ठता का दिव्य वातावरण बनता है, जो उस प्रभावक्षेत्र में आते हैं, 'वरिष्ठता-विशिष्टता' की ओर बढ़ते जाते हैं। तुलसी आरोपण आंदोलन के पीछे इस विशेष रहस्य का समावेश समझा जाना चाहिए।

प्रज्ञा युग में संपदा की, समर्थता की, चतुरता की, उतनी आवश्यकता नहीं पड़ेगी, जितनी आध्यात्मिक दिव्यता की। इसे प्रसुप्त स्थिति से उबारकर जाग्रत्-प्रखर-ज्योतिर्मय बनाने की दृष्टि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से ही प्रज्ञा अभियान की प्रत्यक्ष एवं परोक्ष गतिविधियों का निर्धारण, संचालन एवं क्रियान्वयन किया जा रहा है। इसी प्रसंग परिकर में तुलसी आरोपण को भी सम्मिलित समझा जाना है। हरीतिमा के प्रति जन-जन का आकर्षण, स्नेह एवं संवर्धन के लिए मन मचले, इस दृष्टि से उसे धर्मक्षेत्र की एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया समझा और समझाया जा रहा है।

भारतीय संस्कृति को आरण्यक संस्कृति कह सकते हैं। उसमें गौधन के निर्वाह का, सान्निध्य का—अविच्छिन्न अंग रखे रहने का निर्धारण है। साथ ही यह मान्यता भी है कि, वृक्ष-वनस्पति को कुटुंब-परिवार की तरह साथ लेकर चला जाए। हमारे घर भले ही घास, फूँस, मिट्‍टी, खपरैल के बने हैं, पर उनके चारों ओर हरीतिमा अवश्य लहलहाती दृष्टिगोचर हो। वनस्पति उगाने-बढ़ाने में भी प्रायः उसी भावना की तत्परता का परिचय देना पड़ता है। जिसके आधार पर परिवारों को समुन्नत सुसंस्कृत बनाया जाता है। उसी सद्‍भावसंपन्न दृष्टिकोण का क्रमिक विकास करते हुए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के लक्ष्य तक पहुँच सकना संभव हो सकता है। तुलसी आंदोलन उसी का ध्वजारोहण है।

पिछले कुछ हजार वर्षों में कलियुगीन प्रभाव से भौतिक व वैज्ञानिक प्रगति तो हुई है, परंतु साथ ही जीवन के महत्त्वपूर्ण घटक वायु, जल, मिट्‍टी, सूर्य, अंतरिक्ष तथा वैचारिक जगत् को इतना प्रदूषित कर दिया गया है कि, संसार भर के वैज्ञानिक, विचारक चिंता में पड़ गए हैं।

❒ ❒

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जल प्रदूषण—कारण और निवारण

यूनान के सुप्रसिद्ध दार्शनिक थेल्स से लोगों ने पूछा कि—"संसार की समस्त चीजें किस वस्तु से निर्मित हुई हैं ? तो उनका उत्तर था—"पानी से। पानी के बिना न तो जीव-जंतु जीवित रह सकते हैं और न बड़े से बड़े पेड़-पौधे ही।" विडंबना ही है कि रोजमर्रा की जिंदगी में काम आने वाला पानी जैसा संसाधन जो पीने व सिंचाई तथा अन्यान्य उद्योगों में प्रयुक्त होता है, वह वायु प्रदूषण के समान ही प्रदूषित होकर अति भयावह प्राकृतिक असंतुलन की दशा में पहुँच गया है और संपूर्ण विश्व के समक्ष एक बहुत ही महँगी एवं विकट समस्या बन गया है।

अधिकांश शहर नदियों के तट पर बसे होते हैं। भारी उद्योग शहरों में होते हैं। इन भारी-भरकम औद्योगिक संस्थानों से निःसृत कचरा-गंदगी अन्यान्य अवशिष्ट पदार्थ, यहाँ तक कि लाखों लोगों का मल-मूत्र भी बहकर नदियों में ही प्रवाहित होता है। गंगा आदिकाल से हमारी संस्कृति का अंग है, जिसमें वर्ष की १२ अमावस्याओं के स्नान तो निश्चित ही हैं। पर्व और त्योहारों में आज भी करोड़ों लोग स्नान करते और बरतनों में जल भर ले जाते हैं। आज अधिकांशतः मल-मूत्र का प्रवाह बनकर रह गई है। ऋषिकेश के एंटीबायोटिक क़ारखाने से लेकर कलकत्ते तक उसमें कितना मैला, कूड़ा-कचरा गिरता है, उसकी याद करने मात्र से ही जी सिहर उठता है। लगता है आज सचमुच ही गंदगी की दृष्टि से दुनिया नरक हो गई है। अकेले दिल्ली में दस से भी अधिक गंदे नाले यमुना नदी में गिरते हैं। कनाडा आदि विकसित देशों में तो हाइपीरियन जैसे टैंक भी बनाये गये हैं, जो शहरों का मल और गंदगी साफ कर देते हैं, केवल शुद्ध किया हुआ जल ही नदियों में गिरने देते हैं। नीदरलैंड का एक अन्य सुझाव है कि जहाँ भी बड़े कारखाने खड़े किये जाएँ, वहाँ प्रदूषण की शुद्धि के लिए कम से कम ३% पूँजी अलग से रखी जाय। भारत को भी इस प्रकार को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यवस्था एवं सुझावों को मान्यता देकर ऐसे ही उपाय तुरन्त अपनाने चाहिए।

किसी समय अमेरिका के सुंदर झरने, जो अपनी प्राकृतिक छटा के कारण प्रकृतिप्रेमियों का मन ललचाते थे, अब उनके किनारों पर बड़े-बड़े सूचनापट लगे हुए हैं—डेंजर-पोल्यूटेड वाटर, नो स्वीमिंग, खबरदार ! पानी जहरीला है, इसमें तैरिए मत। औद्योगिक नगरों के निकटवर्ती सरोवर एक प्रकार से मृतक संज्ञा में गिने जाते हैं। उनका पानी किसी भी उपयोग में नहीं आता। नदियाँ अब गंदगी बहाने वाली गटरें भर रह गई हैं। व्हाइन नदी को युरोप की गटर कहा जाता है।

ऐरिजोना के प्रोफेसरों की एक समिति ने जनता की ओर से ताँबा बनाने वाली छह फैक्टरियों पर दो अरब डालर का दावा किया है। वादियों का कहना है कि, इन कंपनियों ने जनता के जान-माल की जो अपार क्षति की है, उसके बदले उन्हें इतना हरजाना तो देना ही चाहिए।

ऐसा ही एक मुकद्मा जनता की ओर से न्यूयार्क की प्रमुख महिलाओं ने डी० डी० टी० बनाने वाली ३०० कंपनियों के विरुद्ध दायर किया है और ३० अरब डालर की इस आधार पर माँग की कि, उनके उत्पादन ने जनस्वास्थ्य को भारी हानि पहुँचाई है। भारतीय प्रबुद्ध नागरिकों को भी इस दिशा में ध्यान देने की जरूरत है। वे भी जनता के जान-माल के लिए घातक उद्योगों पर मुकदमा चलाकर उद्योगपतियों को चुनौती दे सकते हैं। ऐसा करने से आम जनता में जाग्रति आएगी, जिससे उन्हें सहयोग और समर्थन प्राप्त होगा, सरकार को भी ऐसे उद्योगों को बंद करवाने पर मजबूर होना पड़ेगा।

औद्योगिक रसायनों में पारे की भी एक बड़ी मात्रा होती है। शोधों ने बताया कि—जल में पहुँचकर पारे की रासायनिक प्रतिक्रिया होती है। उसकी सूक्ष्म मात्रा जीवकणों में प्रवेश कर जाती है। इन्हें छोटे कीड़े खाते हैं और वे मछलियों की खुराक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बनते हैं। इस प्रकार पारे की रासायनिक प्रतिक्रिया मछली के मांस में एक इकाई बनकर बस जाती है। विश्लेषणकर्ताओं ने बताया है कि, इस प्रकार की पारा प्रभावित मछलियाँ खाने वाले मनुष्य अंधे या पागल हो सकते हैं और विशेष परिस्थितियों में तो वे मर भी सकते हैं। डार्ट माउथ मेडीकल कॉलेज के डॉ० हैनरी श्रुडर ने अमेरिकी प्रशासन को चेतावनी दी है कि, पारे की भाँति सीसा, कैडमियम, निकिल, कार्बोनिल जैसे पदार्थ भी जल प्रदूषण में कम घातक नहीं हैं। इनकी अति सूक्ष्म मात्रा भी रक्तचाप एवं फेफड़े का कैंसर उत्पन्न कर सकती है।

इस वैज्ञानिक निष्कर्ष के उपरांत उद्योगों में पारे के उपयोग पर प्रतिबंध लगाए गए हैं। अमेरिका ने ८६% कमी तत्काल कर दी है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

कारखानों की गंदगी घूम-फिरकर नदी-नालों में होती हुई अंततः समुद्र में जा पहुँचती है। वृक्ष-वनस्पतियों पर छिड़के जाने वाले कृमिनाशक विष भी वर्षा जल के साथ समुद्र में ही जा पहुँचते हैं। अणु-भट्टियों की राख को भी समुद्र में ही आश्रय मिलता है। अमेरिका में लाखों-करोड़ों की संख्या में मोटरें, टायर, डिब्बे, बोतलें कचरा बनने के बाद सब समुद्र में फेंके जाते हैं। अमेरिका अपने यहाँ की रद्दी समुद्र में झोंक रहा है। अभी कुछ ही दिन पूर्व उसने १४४० प्राणघातक नर्व गैसों के रैकेट भर-भर फ्लोरिडा के पास समुद्र में फेंके हैं। यह दूषण जहाँ जल का ऑक्सीजन नष्ट करता है, वहाँ समुद्र का संतुलन बनाए रखने वाले जीव-जंतुओं और पौधों को भी मारता है। इंग्लैंड आदि देशों की भी यही दशा है। इसे रोका जाना चाहिए, अन्यथा समुद्र की शोभा नष्ट होने की हानि उतनी गंभीर नहीं है—जितनी उसके अमर्यादित होने की। कचरे की समस्या से निपटने के लिए अमेरिकावासियों द्वारा इस प्रकार विरोध जाहिर किया गया। वहाँ की इस समस्या से क्षुब्ध जनता ने 'अर्थ डे' मनाया और यह कचरा उनके बनाने वाली फैक्टरियों के दरवाजे पर पटककर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहाड़ लगा दिए और माँग की कि बनाने के साथ-साथ इनके रद्दी होने पर इनका कचरा उठाने की जिम्मेदारी भी वे ही लें। इस तकनीक का प्रयोग भी प्रभावकारी सिद्ध होगा।

वर्तमान परिस्थितियों में देश में आ रहे भयावह, जल संकट को ध्यान में रखते हुए समुद्र में पानी का डिस्टिलाइजेशन या उसमें से नमक निकालने की विधि को काम में ला सकते हैं। आज भी संसार के अन्यान्य हिस्सों में लगभग १८ लाख लीटर पानी इसी विधि से प्राप्त किया जाता है। समुद्र के पानी को जमाकर बरफ में परिवर्तित कर भी पानी को पीने लायक बनाया जा सकता है।

❑ ❑

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन का पर्याय—जल

प्रजागण का प्रश्न था—पितामह हमें आरोग्य रक्षा की सरल विधि बताइये ?

महर्षि ने बताया—

"सर्वेषाम् भेषजम् अप्सु मे"।

"जीवनां जीवनम् जीजोजगत्"। —ऋग्वेद

हे मनुष्यो ! जल प्राणियों का प्राण है। मैंने तुम्हारे लिए सभी प्रकार की ओषधियाँ जल में सुरक्षित रखी हैं।

आपो इद्वां उभेषजोरायो अभीव चातकी।

आपस सर्वस्य भेषजो स्तास्तु कृष्णंतु भेषजः।।

यह जल औषधि है। रोगों को नाश करने वाला उनका शत्रु है। यह तुम्हारे सभी रोग दूर करेगा। **"अप्स्वंतरयमृतमप्सु"** (अथर्ववेद १. ४. ४) अधिक क्या कहना यह जल तो अमृत है।

भारत ही नहीं, विश्व के सभी देश और वैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं कि, जल ऐसी वस्तु है, जिसको किसी भी सभ्यता से अलग नहीं रखा जा सकता। फिनलैंड में हजारों वर्ष से शनिवार के दिन सामूहिक स्नान करने की प्रथा है। बड़े घरों में लोग गृह-वाटिकाओं में तालाब रखते हैं। जर्मनी में कटि स्नान और जल-चिकित्सा को व्यापक महत्त्व दिया गया है। वहाँ के वैज्ञानिक ब्रांड लीभर मीस्टर तथा जीम सीन ने जल-चिकित्सा पर शोध किया और उसे हजार रोगों की एक दवा बताया, जिससे वहाँ जल-चिकित्सा का सर्वत्र प्रसार हुआ। कुछ तो गाँव के गाँव ऐसे हैं—जहाँ घर-घर जल-चिकित्सा होती है। अमेरिका के फिलाडेलफिया, न्यूयार्क, वर्जीनिया, पेंसिलवेनिया में जल-चिकित्सा का बहुत प्रसार हुआ है। वियना के वैज्ञानिक विंटरनीज ने अपने यहाँ जल- चिकित्सा के क्लास चलाए। रोम, जापान, चेकोस्लोवाकिया में प्राकृतिक झरनों आदि में स्नान का प्रचलन है, वहाँ स्नान पर वैज्ञानिक खोजें हुई हैं। भारतवर्ष में तीर्थों के महत्त्व के साथ वहाँ स्नान का महत्त्व अनिवार्य रूप से जुड़ा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गंगाजी का जल तो अमृत की तरह पूज्य माना गया है। यह सब देखते हुए उसे प्राणियों का प्राण कहा जाए, तो उसमें जरा भी अत्युक्ति नहीं। आयुर्वेद का कथन है—"प्रातःकाल सोकर उठते ही एक गिलास शीतल जल पीने वाला सदैव नीरोग रहता है, मस्तिष्क शीतल, पेट का पाचन संस्थान मजबूत, आँखों में चमक रहती है, शुद्ध जल मनुष्य का जीवन है, उसके बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। इस तथ्य के अनेक ऐतिहासिक अभिलेख जगह-जगह मिलते हैं कि, कैसे बड़े-बड़े और प्रमुख नगरों का, यहाँ तक कि बड़ी-बड़ी राजसत्ताओं का एकमात्र इस अमूल्य निधि के अभाव से पूर्णतः उन्मूलन हो गया।

खेद है कि, जल को इतना अधिक महत्त्व देने और उसकी शुद्धता को अनिवार्य मानने वाली मनुष्य जाति ही आज उसे गंदा करके स्वयं भी नष्ट होने, बीमार और चिररोगी होने के सरंजाम जुटा रही है। अमेरिका के प्रसिद्ध विचारक श्री आर्थर गाडफ्रे एक संस्मरण में लिखते हैं—"मैं उन दिनों हैसब्राडक हाइट्स पढ़ने जाता था। उन दिनों न्यूजर्सी में सैडिल नदी के तट पर पहला कारखाना लगा था। कारखाने की कीचड़-बदबू इस तरह से उस पर गिरती थी कि, हम लोग स्नान नहीं कर सकते थे। स्वार्थी और पेटार्थी लोगों ने हमारे निवेदन को नहीं सुना था और अब तो पैसाइक, हैकेनसैक खाड़ी, हडसन आदि सारी नदियाँ नरक कुंड बन गई हैं। सारा जल दूषित हो गया है।" पं० मोतीलाल जी शास्त्री के अनुसार—"भारत में भी सन् १९३५ के बाद नदियों के जल में प्रदूषण आने लगा, तब से कोई भी नदी, यहाँ तक कि गंगा भी उतनी पावन नहीं रह गई, जितनी कि पूर्व में थी।" आशय यही है कि, तब नदियों में गटर पड़ने लगे थे या कारखानों की स्थापना के साथ उनका दूषित जल भी नदियों की ओर मोड़ दिया गया और तभी से औद्योगीकरण की तूफानी श्रृंखला के चलते आज जल प्रदूषण का जो मर्मांतक एवं भयावह दृश्य उपस्थित हुआ है, उसे संभवतः हम सभी अपनी खुली आँखों से देख रहे हैं, किंतु उसके प्रति सचेत नहीं हो रहे। भारत में भी मनुष्य जाति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जल को दूषित कर आत्मघात की तरह स्वयं रोगी बनने जा रही है। इसे उसकी भूल नहीं मूर्खता ही कहा जा सकता है, जिसका समाधान उथले एवं छिटपुट प्रयासों से नहीं, बल्कि संपूर्ण जनमानस की जागरुकता से ही संभव है।

☆ शुद्ध जल की महत्ता, प्राप्ति के साधन

(१) एक कहावत है—"पानी पीजे छान के, गुरु कीजे जान के" छने हुए स्वच्छ पानी की बड़ी महत्ता है। अस्वच्छ, गंदे पानी के उपयोग से ढेर सारे रोगाणु, विषैली चीजें भी शरीर के अंदर चली जाती हैं और अनेकानेक प्रकार के रोगों का कारण बनती हैं। कृमि, वर्म अमीबियसिस, टायफायड, जांडिस, पीतज्वर, मलेरिया जैसे जानलेवा रोगों का कारण प्रदूषणयुक्त जल सेवन ही है।

(२) मनुष्य शरीर में जल का अंश ६५ प्रतिशत है, ३५% अन्य तत्त्व। इससे स्पष्ट है कि, अन्य तत्त्वों की अपेक्षा जल तत्त्व की आवश्यकता सर्वोपरि है। इसके कम होने पर देह सूखने लगती है, नाड़ियाँ जकड़ने लगती हैं, खून गाढ़ा हो जाता है, दाह-प्यास-खुश्की आदि अनेक उपद्रव शुरु हो जाते हैं।" पर प्रदूषित जल तो इससे भी कहीं अधिक हानि पहुँचाता है। जल को जीवन औषधि के रूप में देखा जाता है। शरीर के भीतरी अंगों में जो विकृतियाँ उत्पन्न होती हैं—वे मल, मूत्र तथा पसीने के रूप में जल तत्त्व द्वारा ही निष्कासित की जाती हैं, पर अगर इस जीवन औषधि में प्रदूषण रूपी विष मिला हो तब लाभ की जगह हानि होना ही संभव है।

(३) किसी समय छानने मात्र से जल की अशुद्धि दूर हो जाया करती होगी, पर औद्योगिक क्रांति से निकले कई रासायनिक पदार्थ जल में ऐसे घुल-मिल जाते हैं, जैसे शक्कर या नमक। प्रदूषणयुक्त जल में नए-नए प्रकार के जीवाणु भी पैदा हो जाते हैं। ये बैक्टीरिया और रासायनिक पदार्थ सूक्ष्मदर्शी से तो देखे जा सकते हैं, पर आँखों से देखना या कपड़ों से छानकर उन्हें अलग करना संभव नहीं। रिएक्टरों, प्रयोगशालाओं, अस्पताल आदि के रेडियोएक्टिव अवशिष्टों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तथा नाभिकीय परीक्षणों की राख और फैक्टरियों के कई रासायनिक मल तो ऐसे भी हैं, जो शुद्धिकरण संयंत्रों द्वारा अपनाई गई परीक्षण विधि से भी पकड़ में नहीं आते हैं।

(४) कीटों, चूहों अन्य जीवों तथा बेकार वनस्पति के नियंत्रण के लिए छिड़के जाने वाली कीटनाशी दवाइयाँ घुल-मिलकर जल को निरंतर विषैला बनाती ही रहती हैं। भय की बात तो यह है कि, भूमिगत जल भी अब निरापद नहीं रह गया है।

(५) निरंतर बहते जल प्रदूषण को नियंत्रण करने के लिए सरकार द्वारा केंद्रीय व राजकीय जल प्रदूषण नियंत्रण संस्थानों की स्थापना की गई है। ऐसे कानून बनाए गए हैं, जिसमें नदी, भूमिगत जल को दूषित करने वालों पर जुर्माना और दंड का प्रावधान है। नगरपालिकाओं तथा सरकारी स्वास्थ्य सेवा-संगठनों को जल को प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए अनेकानेक कारगर उपायों को अपनाने के निर्देश भी दिए गए हैं। शहरों, कस्बों में सीवेज, waste जल निकासन-शुद्धिकरण की नई विधियों के प्रयोग पर भी जोर दिया जा रहा है। इन सबके बावजूद जब तक जनचेतना को जाग्रत् नहीं किया जाता, तब तक प्रदूषण निवारण का कारगर, स्थायी उपाय प्राप्त न हो सकेगा।

(६) संसार में सबसे अधिक वर्षा ब्राजील में होती है। भारत दूसरे नंबर पर आता है। दुर्भाग्य कहा जाना चाहिए कि, समुचित व्यवस्था के अभाव में वर्षा के जल का मात्र १५-२०% पानी ही देश में रह पाता है, शेष वापस समुद्र में बह जाता है। लगातार जंगलों के कटने से जहाँ बाढ़ की समस्या बढ़ी है—मिट्टी की जल-शोषण शक्ति घटी है, जिससे वर्षा के जल अवशोषण में निरंतर ह्रास हो रहा है तथा भूगर्भ जल का स्तर घटता जा रहा है।

आज भी विश्व में जल संसाधन का मुख्य स्त्रोत भूमिगत जल ही है। मनुष्य की आवश्यकता का लगभग ६०% भाग उसी से प्राप्त किया जाता है, पर जिस गति से इसके स्तर में गिरावट आ रही है वह तो चिंताजनक है ही, उसमें प्रदूषण की मात्रा में वृद्धि और भी खतरनाक है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वयंसेवी संस्थान तथा सरकार की मिली-जुली भागीदारी से वर्षा के जल के अधिकतम उपयोग हेतु विभिन्न प्रयास चल रहे हैं। राजीव गाँधी जल ग्रहण मिशन तथा राष्ट्रीय जलागम योजना आदि की स्थापना इसी उद्देश्य से की गई है।

इन सबके बावजूद जब तक जनचेतना को जाग्रत् नहीं किया जाता, तब तक प्रदूषण पर्यावरण का कारगर—स्थायी उपाय प्राप्त नहीं हो सकता है।

(७) इजराइल में सरकार तथा नागरिकों के सम्मिलित प्रयास से घरेलू कार्यों में प्रयुक्त जल का लगभग ३०% भाग पुनर्उपयोग में लिया जाने लगा है। २००० के अंत तक ८०% पानी को प्रदूषण मुक्त बनाकर वापस प्रयोग में लाने का है।

जल की शुद्धता-स्वच्छता के महत्त्व को न समझने के कारण भारत में अनपढ़ तो क्या समझदार समझे जाने वाले लोगों से ही तालाब तथा अन्य भूगर्भ स्रोत जितने गंदे किए जाते हैं, वह उद्योग-धंधे द्वारा होने वाले प्रदूषण से कम नहीं होगा। कच्ची सीवेज प्रणाली, नदी, तालाब में कचरा डालना, जानवरों को स्नान कराना, साबुन का प्रयोग अधिक मात्रा में, कृषि में प्रयुक्त होने वाले विषैले रसायन के पदार्थों के उपयोग द्वारा जल को दूषित करना, यहाँ-वहाँ थूकना, टट्टी-पेशाब करना आदि ऐसे कारण हैं, जिन पर रोक थाम द्वारा प्रदूषण की मात्रा में काफी कमी की जा सकती है।

स्वयंसेवी संस्थानों, सामाजिक प्रतिष्ठानों तथा समझदारों को चाहिए कि वे अपने क्षेत्रों के जल संसाधन की सुरक्षा तथा प्रदूषण नियंत्रण हेतु सावधानी के लिए जन-जाग्रति पैदा करने का प्रयास करें। जलस्रोतों के निकट बोर्ड लगाए जाने चाहिए, जिसमें इन्हें शुद्ध और पवित्र बनाए रखने के आवश्यक निर्देश हों। जल के उपयोग-महत्त्व पर संगोष्ठियों का आयोजन, स्कूल-कॉलेज के बच्चों का पर्यावरणीय चेतना से जोड़ने के कार्यक्रमों आदि द्वारा पर्यावरण संरक्षण को प्रभावी बनाया जा सकता है।

❑ ❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वास्थ्य समस्या और पर्यावरण

वैज्ञानिक प्रगति ने मनुष्य को साधन सुविधाएँ दी हैं, उसे अपेक्षाकृत समृद्ध बनाया है। पिछले कुछ वर्षों में मानव ने जो भौतिक प्रगति की है, उसकी उपलब्धियाँ तो अनेक हैं, पर इस प्रगति से उपजी विभीषिकाएँ भी छोटी या कम नहीं हैं। उनमें से एक है—अंधाधुंध विकास-साधन-सुविधा के नाम पर उत्पन्न हुआ प्रदूषण। विश्व के मूर्द्धन्य विचारक और मनीषी अब इस समस्या पर गंभीरता से विचार कर रहे हैं और मान रहे हैं कि, आधुनिक सभ्यता और औद्योगीकरण द्वारा मशीनी ढाँचे में ढाली जा रही मनुष्य की जिंदगी जिन अभिशापों से त्रस्त हुई है, प्रदूषण उसमें सबसे प्रमुख है। आज यह प्रदूषण हवा, पानी और खाद्य वस्तुओं को विषाक्त कर मानव अस्तित्व के लिए ही चुनौती के रूप में आ खड़ा है।

यह सर्वविदित है कि मानवजीवन के लिए वायु, जल और अन्न की निरंतर आवश्यकता रहती है। सामान्य बुद्धि से ही समझा जा सकता है कि, अच्छे स्वास्थ्य के लिए इन तत्त्वों का स्वस्थ और स्वच्छ होना भी आवश्यक है, पर इन तत्त्वों को स्वस्थ और स्वच्छ करना तो दूर की बात है, आज तो वे इतने जहरीले कर दिए गए हैं कि स्वास्थ्य सेवाओं में निरंतर विस्तार के बावजूद भी बीमारियाँ बढ़ रही हैं।

स्वास्थ्य की योजना बनाने वाले अब समझने लगे हैं कि, लोगों का स्वास्थ्य डॉक्टरों तथा अस्पतालों की संख्या में वृद्धि होने पर निर्भर नहीं है। गवेषणा करने पर ज्ञात हुआ है कि, संसार में ६०% से अधिक बीमारियाँ प्रदूषणयुक्त पर्यावरण और अप्राकृतिक खाद्य पदार्थों के उपयोग से ही उत्पन्न हो रही हैं।

इन विपरीत परिस्थितियों में भी समझदार व्यक्ति अपने खान-पान, रहन-सहन तथा चिंतन में कुछ परिवर्तन लाकर पर्यावरण विक्षोभ से पैदा होने वाली अनेक बीमारियों से अपना

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org
Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बचाव कर अच्छे स्वास्थ्य की प्राप्ति तथा आनंद का जीवन जी सकता है।

☆ अपने जीवन में प्रकृति का प्रवेश होने दीजिए

"मैं एक गरीब किसान हूँ। हमारी दुनिया हमारा गाँव, हमारे खेत हैं। मैंने अपनी सारी जिंदगी खेतों में ही बिताई है। मुझे छत के नीचे नींद नहीं आती। बरसात में भी कभी-कभी ही मैं छप्पर के नीचे सोता हूँ। हजारों की कमाई मैंने कठोर श्रम द्वारा कमाई है। बचपन में पका भोजन नहीं नसीब हुआ, तो कच्चा अन्न खाने की मेरी आदत पड़ गई है। आज भी सभी चीजें कच्ची ही खाता हूँ। जानवरों से मुझे प्रेम है। मैं मांस नहीं खाता। कुरान में शराब की मनाही है। मैंने भी कभी शराब नहीं पी। बकरी का दूध पीता हूँ। आठ घंटे परिश्रम करता हूँ। पहाड़ियों पर चढ़ने, तैरने, कुएँ खोदने में मुझे आनंद आता है। ६ घंटे की नींद मुझे पर्याप्त है। दोनों समय नहाता हूँ। भगवान् का भजन करता हूँ। मेरा जीवन पूर्ण सुखी है।"

उपर्युक्त शब्द मिश्र के गाजियाना गाँव के व्यक्ति श्री "रजा बका" के हैं, जिनके स्वास्थ्य को इस युग में आश्चर्य की दृष्टि से देखा जाता है। स्वीडन से लेकर केलीफोर्निया तक के अनेक स्वास्थ्य विशेषज्ञ पिछले कई वर्षों से उनके स्वास्थ्य का गंभीर अध्ययन करने में लगे हुए हैं। डॉ० लेसरनेस, फ्रांसीसी सरजन जनरल वेताँ रोशे तथा अनेक स्वीडिश आरोग्यशास्त्रियों ने बका के स्वास्थ्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। रजा-बका का वजन १२३ पौंड, ऊँचाई ५ फुट ८ इंच, उम्र १०७ वर्ष। शरीर में कहीं झुर्री नहीं, पूरे दाँत, सीधी कमर, तीव्र नेत्र दृष्टि। १०७ वर्ष की आयु में वह पूरे नवयुवक से दिखाई देते हैं। स्वास्थ्य की दुर्बलता, रोग या बुढ़ापे का कोई चिह्न इस व्यक्ति के शरीर में नहीं है।

इस "स्वास्थ्य-वैचित्र्य" पर स्वास्थ्य विशेषज्ञ व आरोग्य-शास्त्रियों ने अपने-अपने ढंग के अनेक मंतव्य निकाले हैं, पर प्रायः

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सबके सब इस बात पर एक मत हैं कि रजा–बका के स्वास्थ्य को चिरस्थायी रखने वाली वस्तु है—प्राकृतिक जीवन पद्धति। बका के उपर्युक्त कथन से भी यह बात प्रकट हो जाती है कि उन्होंने अपने जीवन के प्रत्येक अंग में प्रकृति को प्रवेश होने दिया है। सौ वर्ष तक पूर्ण स्वस्थ्य और बलिष्ठ बनाए रखने की क्षमता प्रकृति में है। प्रकृति के बीच रहने, प्राकृतिक आहार–विहार रखने, प्राकृतिक जीवन जीने से मनुष्य अपनी पूर्ण आयु प्राप्त कर सकता है। मृत्युपर्यंत स्वास्थ्य और आरोग्य का सुखोपभोग कर सकता है। इसमें राई–रत्ती भर भी शंका की बात नहीं है।

विचारपूर्वक देखा जाए, तो प्रकृति हमारा पालन–पोषण ठीक ऐसे ही करती है—जैसे कोई माता अपने बेटे का। आहार जुटाने से लेकर शारीरिक सफाई तक का प्रत्येक कार्य प्रकृति पूरी तत्परता के साथ निभाती है। वह इस कार्य में गुमराह बन जाए, तो मनुष्य का जीना भी कठिन हो जाए। प्रकृति से अलग रहने, बनावटी जीवन जीने में मनुष्य का कल्याण नहीं है। स्वास्थ्य तथा आरोग्य का वरदान भी वह प्रकृति माता की गोद में रहकर ही प्राप्त कर सकता है। हम अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए पेड़–पौधों, वनस्पतियों, वायु, जल, आकाश आदि प्राकृतिक साधनों पर निर्भर हैं। इनकी समीपता में रहने से स्वास्थ्य की मौलिकता बनाए रख सकते हैं, पर लापरवाही के साथ उनकी बरबादी करने में अपने भविष्य या वंशजों का जरा भी ख्याल नहीं करते। प्राकृतिक जीवन तथा प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन करने के कारण रोग और शारीरिक दुर्बलता का शिकार होना पड़ता है। आश्चर्य होता है कि यह रोग आया कहाँ से? किसी–न–किसी वस्तु पर दोषारोपण कर या दैव को दोषी ठहराकर संतोष भले ही कर लिया जाए, पर सच यही है कि नितांत अप्राकृतिक जीवन पद्धति के कारण ही मनुष्य के स्वास्थ्य की यह विषम समस्या खड़ी हुई और पर्यावरण को भी भारी क्षति पहुँची है। इस प्रक्रिया में व्यक्ति न केवल स्वयं के लिए बल्कि समस्त प्राणि जगत के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिये संकट उत्पन्न करता जाता है। इसका उपचार भी एक ही है और वह यह है कि प्राकृतिक जीवन की ओर पुनः लौटा जाए, उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समाविष्ट होने दिया जाए।

पेड़-पौधे हमारे जीवन की रक्षा करते हैं। मनुष्य की पैदा की हुई गंदी वायु, कार्बन-डाइ-ऑक्साइड आदि दूषित तत्त्व बेचारे वृक्ष ही खाते हैं और बदले में ऑक्सीजन तत्त्व जो जीवन रक्षा का प्रमुख साधन है, हमारे लिए बराबर देते रहते हैं। फल, तरकारियाँ, फूल, औषधियाँ आदि भी प्रकृति से ही उपलब्ध हैं। वर्षा का कारण तथा वायु की तीव्रता आदि से बचाव भी यही करते हैं। प्रकृति हमारी जीवन-रक्षक है, उसकी सान्निध्य में रहकर हम यह जीवन स्वर्ग तुल्य बना सकते हैं।

पर मनुष्य अब इस सिद्धांत से दूर हटता जा रहा है। पेड़-पौधे, बाग आदि लगाने का शौक घट रहा है, उलटे वनों का निर्ममता से सफाया किया जा रहा है। मकानों की दूषित वायु में, शहरों की गंदगी में ही रहने का जितना मनुष्य आदी होता जा रहा है, उतना ही उसकी उम्र भी कम होती जा रही है। इसके विपरीत अभी भी ऐसे उदाहरण हैं, जबकि लोग प्रकृति के संपर्क में रहने के कारण अधिक आयु, स्वस्थ शरीर तथा आरोग्य रक्षा के पूर्ण लाभ प्राप्त करते हैं। मनुष्य इस संसार में अन्योन्याश्रित जीवों के एक अंग के रूप में ही रह सकता है। भिन्न रूपधारी प्राणियों के साथ एक भाग में ही रहने में उसकी कुशल है। प्रकृति पर नियंत्रण करने, उसे नष्ट कर डालने से उसका जीवन खतरे में पड़ सकता है, इसके ठोस प्रमाण बढ़ती हुई बीमारियों के रूप में सर्वत्र दिखाई पड़ रहे हैं।

प्रकृति के अनुकूल चलने में मनुष्य सुखी, स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त रह सकता है। प्रतिकूल चलने में अनेक शारीरिक तथा मानसिक रोगों का प्रादुर्भाव होता है। जीवन की सरसता के लिए प्रकृति प्रेम अत्यंत उपयोगी है। इससे जीवन में संतोष, उत्साह, उमंग, शांति एवं तेजस्विता प्राप्त होती है। प्रातःकाल उन्मुक्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकृति में परिभ्रमण से शारीरिक और मानसिक बल बढ़ता है, चैतन्यता आती है, स्फूर्ति बढ़ती है। प्रकृति मन को प्रफुल्लित, रखने और शांति प्रदान करने में बड़ी सहायक है। ऋषियों का आवास इसी दृष्टि से सदैव घने जंगलों में रहा है। पक्षियों के कलरव, झरनों की कलकल, फूलों की महक से शरीर और मन को बड़ा सुख मिलता है। प्राण और जीवन-तत्त्व बढ़ता है। सद्प्रवृत्तियों का अंतःकरण में विकास होता है।

पं० जवाहरलाल जी ने लिखा है—'प्रकृति के इस सुनसान रूप में मुझे अजीब संतोष मिला है। एक ऐसा उत्साह और उमंग का तूफान दिल में आया, जो पहले कभी नहीं आया था। प्रकृति में दिमागी बल देने की ताकत है।"

प्रकृति का सामीप्य उदासीनता, मानसिक परेशानी तथा नीरसता को दूर करता है। इससे मनुष्य के मस्तिष्क में सुव्यवस्थित जीवन जीने की सूझ पैदा होती है। घर के रहन-सहन में सफाई तथा सजावट की प्रेरणा प्रकृति प्रेम पर आधारित है। कला विकास व चारित्रिक दृढ़ता को प्रभावित करने की अलौकिक शक्ति प्रकृति में है।

रहन-सहन की तरह आहार भी प्राकृतिक रहना स्वस्थ जीवन का मूलमंत्र है। कच्चे-फल, तरकारियाँ, गाजर, मूली, सकरकंद जैसे पदार्थों में शरीर सुरक्षा तथा अभिवृद्धि के सब तत्त्व मौजूद होते हैं। रोग बाहर से नहीं आते, वरन् वे शरीर के भीतर अप्राकृतिक ढंग के आहार से उत्पन्न विजातीय द्रव्य के कारण ही पैदा होते हैं। प्राकृतिक पद्धति का बुनियादी सिद्धांत यह है कि, रोग अपने को नीरोग करने का शरीर की ओर से किया हुआ प्रयत्न है। शरीर अपने को स्वस्थ रखने के लिए ही रोग प्रस्तुत करता है। विजातीय पदार्थ का बढ़ना कम हो, तो रोग के आघात भी कम हों, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्राकृतिक आहार ही लाभदायक होता है। शरीर में मल की मात्रा बढ़ाने का एक मात्र कारण अप्राकृतिक आहार व पर्यावरण प्रदूषण है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वास्थ्य और आनंद का जीवन जीने का यह अचूक सिद्धांत है कि, हमारे जीवन की प्रत्येक गतिविधि में प्रकृति का समावेश हो। गाजियाना के रजा-बका की घटना इस देश के लिए सामान्य बात रही है, किंतु वह तब थी, जब प्रकृति हमारे जीवन का आधार थी। आज उसे भुला देने से स्वास्थ्य की समस्या ने इतना विकराल रूप बनाया है। हम पुनः प्रकृति का आश्रय ग्रहण करें, तो कोई कारण नहीं कि हमारा भी जीवन सौ वर्ष से कम हो। प्रकृति हमारी जीवन रक्षा का आधार है, हमें उसकी गोद में से हटना नहीं चाहिए। उसकी शरण में बने रहकर सुख, स्वास्थ्य और बल प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए।

☆ सूर्य किरणों से जीवन तत्त्व

www.vicharkrantibooks.org

सूर्य की किरणें पर्यावरण पर बहुत गहरा प्रभाव डालती हैं। एक समय में 'सोने की चिड़िया' कहा जाने वाला यह देश, भौतिक तथा वैज्ञानिक प्रगति तथा वस्तुकला में विश्व का सिरमौर होने पर भी सूर्य के महत्त्व को समझता था, यहाँ के निवासी सूर्य किरणों से जीवनीशक्ति के पयपान के लिए ज्यादा से ज्यादा खुली जगह में रहते थे। गगनचुंबी अट्टालिकाएँ, बड़ी-बड़ी इमारतों से सूर्य किरणों के मार्ग में बाधा उत्पन्न होगी, इसलिए बिना आवश्यकता के उनका निर्माण न करके छोटे घरों तथा कुटियाओं में रहना ही पसंद करते थे।

सूर्य किरणों में जीवन तत्त्व भरा पड़ा है, जीवनीशक्ति खुली हवा में, सूर्य के प्रकाश में रहकर, हम पौष्टिक आहार की तुलना में कुछ अधिक ही प्राप्त कर लेते हैं, कम नहीं।

बंद कमरे, पंखे की हवा, बिजली की रोशनी से भी लोग काम चलाते हैं और उसे संपन्नता, सभ्यता तथा सौभाग्य का चिह्न भी मानते हैं, पर सच बात यह है कि सूर्य का प्रकाश और उससे उत्पन्न हरितिमा दोनों ही हमारे स्वास्थ्य संरक्षण, बल, वीर्य और दीर्घ जीवन के लिए आवश्यक हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वनस्पति का विकास हरे रंग को अपनाने के कारण होता है। वनस्पतियाँ हरी होने के कारण शोभायमान ही नहीं, जीवित भी हैं। हरा रंग अपने भीतर स्वतः जीवन तत्त्व की प्रचुर मात्रा भरे हुए है।

सूर्य किरणों में उपलब्ध सात रंगों में से एक हरा रंग ही ऐसा है, जिसमें जीवन के मूल तत्त्व का पोषण करने की शक्ति है। पौधे इसी रंग के माध्यम से सूर्य से अपने लिए आवश्यक तत्त्व प्राप्त करते और कार्बन डाइ ऑक्साइड का सृजन करते हैं। इस क्रिया के बीच उनका ऑक्सीजन छोड़ने का काम भी चलता रहता है, यही मनुष्यों की साँस के काम आती है।

यदि वनस्पति में हरा रंग न हो, तो वह क्लोरोफिल के अभाव में सूर्य से अपनी खुराक प्राप्त न कर सके, तब फिर इस संसार में वनस्पति रहेगी भी या नहीं, यह संदिग्ध है। यदि वह रही भी तो इस योग्य होगी कि शाकाहारी प्राणी उसे खाकर जीवित रहें। क्लोरोफिल के रूप में हरा रंग इस विशाल विश्व में शोभा और शांति भरी हरितिमा ही नहीं फैलाता, प्राणियों का जीवन आधार भी सिद्ध होता है।

हम हरी वनस्पतियों के संपर्क में रहें। खेतों और बगीचों में काम करें, सघन वनों की सैर करें, अपने घरों को फूल-पौधों और बेलों से हरा-भरा रखें, तो हरितिमा का यह संपर्क हमें अधिक जीवनतत्त्व प्रदान कर सकता है और स्वास्थ्य संवर्धन में लाभ मिल सकता है।

सूर्य के प्रकाश का संपर्क हमारी सुदृढ़ता, स्फूर्ति को बढ़ाता है और प्रजनन में समर्थ बल-वीर्य की वृद्धि होती है। संतानरहित और दुर्बल संतान वाले व्यक्ति सूर्य के संपर्क में रहें तो वे कष्ट मुक्त हो सकते हैं। दिलीप को संतान प्राप्ति के लिए गुरु वशिष्ठ ने उन्हें खुली हरितिमा में दिन भर घूमते हुए गायें चराने का उपचार बताया था। किसान और बनवासी लोग अपेक्षाकृत कम ही बीमार पड़ते हैं और उन्हें प्रजनन संबंधी कष्ट-अवरोध भी नहीं होता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिल्ली विश्वविद्यालय के प्राणिशास्त्री डॉक्टर बी० आई० सुंदराज ने मछली पर प्रजनन संबंधी प्रयोग करके यह सिद्ध किया है कि, उसे वर्ष में पाँच बार गर्भ धारण के लिए उत्तेजित किया जा सकता है, जबकि वह सामान्यतः वर्ष में एक बार ही—जुलाई-अगस्त के बीच प्रसव करती है।

उपर्युक्त विज्ञानी ने अध्ययन किया कि, अधिक प्रकाश प्राप्त करने का अवसर जब भी मछली को मिलता है, तभी वह ऋतुमती होती है। ग्रीष्मऋतु में दिन भी लंबे होते हैं और सूर्य का प्रकाश भी तेज रहता है, इसलिए मछली का शरीर प्रकाश का प्रभाव अधिक मात्रा में ग्रहण कर लेता है और उन हारमोनों को उत्तेजित करता है, जो प्रजनन की स्थिति उत्पन्न करने में सहायक होते हैं।

इस आधार पर उन्होंने सूर्य जैसी विशेषताओं से संपन्न विद्युत् प्रकाश की व्यवस्था की और अनुपयुक्त ऋतुओं में भी मछली को उसके अंतर्गत रखा। परिणाम यह हुआ कि, उन्होंने गर्भ धारण किए और साल में एक बार की अपेक्षा पाँच बार प्रसव करने के लिए तत्पर हो गईं। शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन और पौरुष को सुदृढ़ रखने की दृष्टि से सूर्य प्रकाश और हरितिमा का संपर्क रखा जाना आवश्यक है। जीवन तत्त्व के अधिक संचय का यह सरल उपाय है।

☆ असंतुलित पर्यावरण में (कैसे हो) वातानुकूलित जीवन !

वातानुकूलित कमरे या रेल के डिब्बे इसलिए बनाए जाते हैं कि उनमें काम या निवास करने वालों पर सरदी-गरमी का अनावश्यक दबाव न पड़े। उत्तेजना चाहे ऋतु के कारण हो या किसी अन्य के कारण से, एक सीमा तक ही सहन होती है। अति की स्थिति में भी किसी प्रकार जिया तो जा सकता है, किंतु उत्साहपूर्वक उतना काम नहीं हो सकता—जितना कि होना चाहिए। बेचैनी सदा हैरान ही करती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बेचैनी मात्र ऋतु के कारण ही नहीं, पर्यावरण विक्षोभ आदि अन्य कारणों से भी होती है। तापमान बढ़ने पर ज्वर चढ़ बैठता है और शीत रोग में शरीर का स्वाभाविक ताप घट जाता है। रक्तचाप का अधिक बढ़ना या घटना भी एक विपत्ति है। इसी प्रकार मन पर आवेश का छा जाना अथवा अवसाद के कारण निराश हो जाना ऐसी स्थिति है, जिसमें व्यक्ति असंतुलित हो जाता है, जिसे तनाव भी कहते हैं। तनाव दो प्रकार के होते हैं, एक आवेशजन्य, दूसरे अवसादजन्य। क्रोध जैसी स्थिति को आवेश कहते हैं और निराशा, निष्क्रियता को अवसाद। दोनों ही असंतुलन के पीछे पर्यावरण प्रदूषण एक प्रमुख कारण है, जिससे व्यक्ति का शारीरिक ही नहीं—मानसिक स्वास्थ्य भी गड़बड़ा जाता है और ऐसी अस्वाभाविक स्थिति बन जाती है, जिसमें कुछ सोचते-समझते, करते-धरते नहीं बनता। ऐसों की गणना एक प्रकार के मरीजों में होती है, जो स्वयं भी हैरान रहते हैं और संपर्क वालों को भी हैरान करते हैं।

संतुलन बनाए रहना वातानुकूलित मकान में रहने जैसा है, जिसमें अपेक्षाकृत व्यक्ति सुखी और संतुष्ट रहता है। प्रसन्नता में काम का अनुपात एवं स्तर भी बढ़ जाता है। दूसरी ओर असंतुलन एक ऐसा रोग है, जो प्रत्यक्षतः तो नहीं दीख पड़ता, पर भीतर-ही-भीतर मरोड़कर रख देता है।

संसार की बनावट ऐसी है कि परिस्थितियों का क्रम ज्वार-भाटे जैसा चलता है। कभी अनुकूलता आ जाती है, तो कभी प्रतिकूलता का सामना करना पड़ता है। ऐसे अवसरों पर हलके, उथले, ओछे, बचकाने लोग उखड़ जाते हैं; पर जो भारी-भरकम हैं, वे चट्टान की तरह अपनी जगह पर जमे रहते हैं। वे उतार-चढ़ावों को खिलाड़ी की दृष्टि से देखते रहते हैं, जिसमें कभी जीतना, कभी हारना पड़ता है।

विकृत पर्यावरण का प्रभाव न केवल स्वास्थ्य एवं मन पर वरन् क्रियाकलापों पर भी पड़ता है। वे अस्त-व्यस्त हो जाते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सोचना और करना यदि मनोयोगपूर्वक न हो, तो उसके सही होने की आशा नहीं की जा सकती। जो मन से उद्विग्न है, वह आज नहीं तो कल रुग्ण होकर रहेगा। तब प्रश्न उठता है कि इस असंतुलित पर्यावरण में स्वस्थ और संतुलित रहना कैसे संभव है ?

परिस्थितिकी सदा अनुकूल ही रहें, यह नहीं हो सकता। जब संसार में सर्वत्र परिवर्तन का ही दौर है, तो अनुकूलता ही स्थिर रहेगी, ऐसी आशा करना व्यर्थ है। यह हो सकता है कि कटीली राह पर चलना पड़े, तो जूते का प्रबंध करें और तेज धूप पड़ रही हो, तो छाता लगाकर चलें। मनःस्थिति गड़बड़ाने से पूर्व हमें ऐसा अभ्यास कर लेना चाहिए कि कुसमय आने पर अपना बचाव हो सके।

अनुपयुक्त स्थिति के दवाब को कम करने के लिए, हमें शिथिलीकरण का अभ्यास करना चाहिए। यह साधना अर्धनिद्रा का काम दे जाती है और थकान को घटाती है। यों चिंता से मुक्ति तो सर्वथा तभी मिलती है, जब गहरी नींद आए या मौत इस संसार से उठाए।

हमारे दैनिक व्यायामों, योगाभ्यासों में एक शिथिलीकरण भी सम्मिलित रहना चाहिए। शरीर को शिथिल और मन को उनींदा कर लेने की क्रिया कठिन नहीं है। कोमल बिस्तर पर लेटकर अपने को रुई जैसा हलका या उनींदा अनुभव करने से यह स्थिति कुछ दिन के अभ्यास से बन जाती है कि, अपने को संकल्प बल के सहारे अर्धनिद्रित स्थिति में ले जाया जाए।

एक दूसरा अभ्यास यह है कि—मन, वचन और शरीर को एक ही काम पर एकाग्र किया जाए। इन तीनों प्रमुख शक्तियों को बिखरने न दिया जाए। एकाग्रता की महिमा सभी बताते हैं और उसके प्रयोग भी सुझाते हैं, पर सबसे सरल और उपयोगी तरीका यह है कि, सामने के काम को सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाए और उसे सही रीति से करने की प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाया जाए। जो पूरे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मन और पूरे श्रम से काम करता है, उसकी वाणी भी इधर-उधर की बकवास नहीं करती। शक्तियों को बखेरने में इधर-उधर की बेतुकी बकवास भी एक बड़ा दुर्गुण है। इसके कारण हर काम अधूरा रह जाता है। भोजन के अथवा पूजा के समय जिस प्रकार मौन रखा जाता है, उसी प्रकार अपने हर छोटे-बड़े काम में तत्परता और तन्मयता बरतनी चाहिए और वाचालता पर अंकुश रखना चाहिए।

कई बार मनुष्य की असहिष्णुता और अतिवादिता भी तिल का ताड़ बनाती है और छोटी-सी कठिनाई-हानि या असफलता को राई से पर्वत बनाकर मनुष्य को उद्विग्न कर देती है। उस कुटेव का उपचार यह है कि, सदा हँसने-मुस्कराने की आदत डाली जाए। मुसकान सबसे बड़ा सौंदर्य प्रसाधन है, इसको अपनाते ही कुरूप भी सुंदर लगने लगता है। मन का बोझ उतर जाता है। हलकी-फुलकी, हँसती-हँसाती जिंदगी जीना एक उच्चस्तरीय कलाकारिता है। इसे नित्यप्रति के अभ्यास में सम्मिलित करके अपने को निश्चित, निर्द्वंद्व रहने का आदी बनाना चाहिए। उतार-चढ़ावों को कम से कम महत्त्व देना चाहिए।

कुछ लोग कुविचारों, कुकर्मों और मनोरोगों से ग्रसित होते हैं। फलतः उन्हें पग-पग पर असहयोग और अपमान का सामना करना पड़ता है। ऐसे लोगों के लिए उचित है कि सफल व सम्मानित मनुष्यों के गुण, कर्म, स्वभाव की उत्कृष्टता का चिंतन किया करें और अपने को उसी ढाँचे में ढालने का प्रयत्न किया करें। आत्मसुधार-आत्मनिरीक्षण का क्रम चल पड़ने पर व्यक्तित्व निखरने और सुधरने लगता है। गुण, कर्म, स्वभाव में शालीनता की अभिवृद्धि करते चलने वाला व्यक्ति आमतौर से मनस्वी होता है। संतुष्ट रहता और सम्मान पाता है।

कुछ व्यक्ति लोभ व मोह में अत्यधिक व्यस्त रहते हैं और ठाट-बाट बनाने की सनक में इतने डूबे रहते हैं कि, आत्मिक आवश्यकता और मानवी गरिमाओं और सामयिक कर्तव्यों को एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकार से भुला ही देते हैं। ऐसे लोगों को आत्मा और शरीर की भिन्नता का अभ्यास करना चाहिए।

प्रातःकाल उठते ही एक दिन की जिंदगी वाला जन्म मिलने की भावना करनी चाहिए और साथ ही सोचना चाहिए कि स्रष्टा की सर्वोपरि महत्त्व की यह मानव कलाकृति उसे किस शर्त पर मिली है ? जीवन का स्वरूप, लक्ष्य और सदुपयोग क्या है ? इसी निष्कर्ष के आधार पर ऐसी दिनचर्या बनानी चाहिए, जिसमें शरीर यात्रा के अतिरिक्त आत्मा के उत्कर्ष और लोकमंगल में प्रवृत्ति की ईश्वरीय इच्छा की पूर्ति होती रहे।

रात को सोते समय निद्रा को मरण का रिहर्सल मानते हुए सोचना चाहिए कि जो भूलें शरीर ,के साथ पक्षपात और आत्मा के साथ अन्याय के रूप में आज हुई, ये भविष्य में न होने पाएँगी। इस संध्यावंदन का निश्चित प्रभाव यह होता है कि, जीवनसंपदा के दुरुपयोग पर अंकुश लगता है और वह प्रयास चल पड़ता है— जिससे जीवन को सार्थक बनाया जा सके।

हर दिन किसी सुविधा के समय आत्मनिरीक्षण, आत्मसुधार, आत्मनिर्माण और आत्मविकास के चारों विषयों पर गंभीर विचार करना चाहिए और भौतिक क्षेत्र में आगे बढ़ने और आत्मिक क्षेत्र में ऊँचा उठने की योजना बनानी चाहिए।

महानता के पक्षधर कार्य इसलिए नहीं हो पाते, क्योंकि शक्तियों का अधिकांश भाग असंयम के छिद्रों में होकर बह जाता है और कुछ उत्कृष्ट कर सकने लायक सामर्थ्य ही नहीं बचती। आवश्यक है कि इंद्रियसंयम, अर्थसंयम, समयसंयम और विचारसंयम पर निरंतर ध्यान रखा जाए और इस प्रकार बचे हुए वैभव को उन कार्यों में लगाया जाए, जिनसे आत्मकल्याण और लोकमंगल के दोनों प्रयोजन सधते हैं। यहीं जीवन को वातानुकूलित बनाने की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया को अपनाने पर भौगोलिक पर्यावरण में आई विकृति का प्रभाव भी व्यक्ति पर या तो पड़ता ही नहीं, अगर पड़ता भी है, तो बहुत ही कम।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

☆ यज्ञीय वातावरण का स्वास्थ्य पर प्रभाव

"शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं
हेमन्ताञ्छतमु वसन्तान्।
तमिन्द्राग्नी सविता बृहस्पतिः
शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः।" (ऋ० १०.१६१.४)

—हे रोगी ! तू शत शरद, शत हेमंत और शत बसंतों तक दिन-दिन वृद्धि पाता हुआ जीवित रह। इंद्र, अग्नि, सूर्य और बृहस्पति आदि सारे देव तेरे इस शरीर को सौ वर्षों तक जीवन धारण करने के लिए आहुतियों के बल पर मृत्यु-मुख से वापस ले आवें।

ऋग्वेद की इस ऋचा पर ऋषि ने सूक्ति द्वारा रोगी को यज्ञ के आधार पर नीरोग एवं शतायु होने का निर्देश किया है।

यह निर्देश केवल यज्ञ की महिमा स्थापित करने अथवा यज्ञ-धर्म को प्रोत्साहित करने के लिए यों ही नहीं कर दिया गया है, बल्कि इसके पीछे एक आयुर्वेदिक तथ्य निहित है, जो कि आधुनिक प्रयोगों पर खरा उतरकर विज्ञानसम्मत सिद्ध हो चुका है।

शरीर रोगों पर यज्ञीय वातावरण का क्या प्रभाव हो सकता है और यह रोगों को रोकने अथवा उनका निराकरण करने में कहाँ तक सफल हो सकता है ? इसे देखने के लिए एक प्रयोग किया गया—

काँच की बारह शीशियों को वैज्ञानिक ढंग से शुद्ध एवं स्वच्छ करके दो-दो शीशियों में दूध, मांस, फलों का रस आदि छह प्रकार की वस्तुएँ भरकर छह शीशियाँ उद्यान के उन्मुक्त वायुमंडल में और छह शीशियाँ यज्ञीय वातावरण में रख दी गईं। कुछ समय बाद उद्यान के वायुमंडल में रखी शीशियों की चीजों में सड़न पैदा होने लगी, जबकि यज्ञीय वातावरण की शीशियों की वस्तुएँ शुद्ध बनी रहीं। उनमें सड़न तब प्रारंभ हुई, जब उद्यानीय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वातावरण में रखी शीशियों की सारी चीजें में सड़-गल गईं। इस प्रयोग का परिणाम प्रकट करता है कि, शुद्ध ऑक्सीजन युक्त वायुं की अपेक्षा, यज्ञीय वायु में रोग-रोधक शक्ति अधिक होती है।

प्रायः देखा जा सकता है कि, जो व्यक्ति नियमपूर्वक नित्य-प्रति हवन किया करते हैं, वे दूसरों की अपेक्षा अधिक नीरोग रहा करते हैं। इसका एक कारण जहाँ जीवन की नियमितता एवं भावना की पवित्रता है, वहाँ एक वैज्ञानिक कारण यह भी है कि, हवनकर्ता को नियमित रूप से यज्ञपूत वायु भी मिलती रहती है; जो अपनी शक्ति से शरीरस्थ रोगाणुओं को नष्ट कर और नए जीवाणुओं को प्रवेश करने से रोकती रहती है। इन प्रयोगों तथा अनुभवों के आधार पर विश्वास किया जा सकता है कि, अन्य उपचारों के साथ-साथ यदि यक्ष्मा आदि असह्य अथवा किसी अन्य प्रकार के जीर्ण रोगों से ग्रस्त व्यक्ति उपयुक्त औषधियों द्वारा नित्य प्रति हवन भी करते रहें, तो निश्चय ही वे रोगमुक्त होकर आरोग्य लाभ कर सकते हैं।

प्रायः जीर्ण रोगों से ग्रस्त लोग जल्दी ठीक नहीं होते। बहुत कुछ उपचार करने के बाद भी कोई लाभ नहीं होता। डॉक्टर लोग जवाब दे देते हैं और कोई उपाय न देखकर रोगी जीवन से निराश हो जाते है। पुराने रोगों के ठीक न होने का एक विशेष कारण है कि, रोग के सूक्ष्म कीटाणु शरीर के किसी अंग की भीतरी पर्त में स्थायी रूप से बस जाते हैं और धीरे-धीरे रोगी की जीवनीशक्ति नष्ट करते रहते हैं। इन रोगाणुओं की सूक्ष्मता का इससे ही अनुमान लगाया जा सकता है कि, एक खस-खस के दाने पर बीस अरब कृमि चढ़ जाते हैं। ऐसे सूक्ष्म कीटाणु शरीर की किसी भीतरी पर्त में निर्लिप्त घर बनाए अपना काम किया करते हैं। शरीर के उन भीतरी भागों में रक्त के भी बहुत ही सूक्ष्म कण कठिनता से पहुँच पाते हैं, किंतु दवा दी जाती है—स्थूल रूप में। इससे उनका उन भीतरी भागों में सूक्ष्म कीटाणुओं तक पहुँच पाना संभव नहीं होता। रोगी दवा पीता-खाता रहता है परंतु कोई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लाभ नहीं होता। निदान-उसे विवश होकर जीवन से निराश हो जाना पड़ता है।

यह निश्चित है कि, किसी स्थूल वस्तु की अपेक्षा उसके सूक्ष्म रूप का प्रभाव सैकड़ों गुना बढ़ जाता है। इंजेक्शन औषधि का सूक्ष्म रूप है। यही कारण है कि पुराने और असाध्य रोगों में डॉक्टर अधिकतर इंजेक्शनों की ही व्यवस्था किया करते हैं। इंजेक्शन स्थूल औषधि की अपेक्षा अधिक प्रभाव उत्पन्न करता है। वैद्य लोग औषधि की शक्ति बढ़ाने के लिए उसे महीनों खरल में घुटवाते अथवा उसको भस्म रूप में परिणत करवाया करते हैं। आयुर्वेद में इसी उद्देश्य से औषधियों को फूँककर भस्म बनाने का नियम है। होमियोपैथी के आविष्कर्ताओं ने औषधि की शक्ति बढ़ाने के लिए ही उनकी "पोटेंसी" तैयार करने का नियम बनाया है। उनका कहना है कि 'शुगर ऑफ मिल्क' अथवा 'स्प्रिट' में घोटने अथवा झटका देने से किसी औषधि का जितना सूक्ष्म भाग किया जाएगा उसकी शक्ति उतनी ही बढ़ जाएगी। कारण यह है कि, इस विधि से औषधि की गुप्त शक्तियाँ उभर आती हैं। सभी जानते हैं कि, ऊँची पोटेंसी की होमियोपैथिक दवा की एक मात्रा कई-कई महीने अपना प्रभाव करती रहती है, जबकि कम पोटेंसी की दवा की कई मात्राएँ एक दिन में दी जाती हैं। जीर्ण अथवा असाध्य रोगों में होमियोपैथिक की दवा ऊँची पोटेंसी में ही दिए जाने का विधान है। यह तो रही औषधियों को घोटने की बात। हम सब नित्य प्रति के व्यवहार में देख सकते हैं कि, जिस भोजन को खूब चबाकर खाया जाता है, वह अधिक लाभकर होता है। डॉक्टरों का कहना है कि, अच्छी तरह चबाने से जहाँ भोजन अन्य अनेक प्रकार के लाभ करता है, वहाँ उसकी गुप्त प्राण शक्ति उभर आती है, जिससे थोड़ी मात्रा में किया हुआ भोजन भी अधिक बलदायक होता है। उसका अधिकांश भाग तत्त्व रूप में परिणत हो जाने से मल कम बनता है, जिसके कारण शरीर स्वस्थ तथा नीरोग रहता है। इस प्रकार जिस वस्तु को जितना ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सूक्ष्म किया जाता है, उसकी शक्ति भी उतनी ही बढ़ जाती है। अणुओं की शक्ति इसी सूक्ष्मता के सिद्धांत पर अमोघ एवं अपरमित हो जाया करती है।

कोई भी औषधि कितनी ही खरल में क्यों न घोंटी-पीसी जाए या कितनी देर ही क्यों न उबाली जाए, उसके परमाणु उतने सूक्ष्म नहीं हो सकते—जितने कि हवन द्वारा अग्नि में जलाने से। उदाहरण के लिए एक मिर्च को ले लीजिए। एक पूरी मिर्च एक आदमी आसानी से खा सकता है। उसका प्रभाव जो कुछ थोड़ा-बहुत होगा, वह उस एक खाने वाले पर ही होगा किंतु जब उसी मिर्च को किसी चीज में कूटकर महीन किया जाता है, तब उसका प्रभाव बढ़ जाता है और आस-पास के चार-छह आदमी प्रभावित हो उठते हैं, पर जब उसी मिर्च को आग में जलाया जाता है, तो उसका प्रभाव इतना बढ़ जाता है कि आस-पास के घरों तक के लोग प्रभावित हो जाते हैं। इसी प्रकार जो औषधि अग्नि में हवन की जाती है, उसके तत्त्व सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होकर बहुत अधिक प्रभावशाली हो जाते हैं। अग्नि में जलाये जाने से औषधि के सूक्ष्म परमाणु न केवल रोगों के सूक्ष्म जीवाणुओं को ही नष्ट कर सकते हैं, बल्कि वे हर उस स्थान पर पहुँचकर अपना प्रभाव डाल सकते हैं, जहाँ पर रोगाणु शरीर के गुप्त से गुप्त भागों में अपना स्थान बनाकर मनुष्य को असाध्य रोगी बना दिया करते हैं। रोगों के कृमि कितने ही सूक्ष्म क्यों न हों, पर वे वायु से सूक्ष्म कदापि नहीं हो सकते। शरीर के जिस भीतरी भाग में रोग के कीटाणु पहुँच सकते हैं, उसमें वायु तो बिना किसी बाधा के जा ही सकती है। हवन की हुई औषधियों के सूक्ष्मतत्त्व उसी की तरह सूक्ष्म होकर वायु में मिल जाते हैं, जो श्वांस द्वारा शरीर में पहुँचकर रोगों का नाश करते हैं। यज्ञ से उत्पन्न औषधियों के लाभकारी तत्त्व प्रभाव रूप में ही वायु के साथ शरीर में जाते और लाभ करते हैं। यही कारण है कि, नित्य-नियमित यज्ञ करने वाले लोग अन्यों की अपेक्षा अधिक स्वस्थ एवं नीरोग रहते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्षय रोग का रोगी जब असाध्य हो जाता है, उस पर कोई भी औषधि किसी रूप में लाभ नहीं करती, तो डॉक्टर उसे पहाड़ पर जाने का परामर्श दिया करते हैं। इसका कारण यही होता है कि, औषधियों के प्रभाव से भरी हुई पहाड़ों की ओषजन वायु इतनी सूक्ष्म होती है कि, वह शरीर के किसी भी सूक्ष्म से सूक्ष्म भाग में जाकर रोगी को लाभ करती है। उद्यानों अथवा पहाड़ों की उन्मुक्त वायु को इसीलिए स्वास्थ्यदायक माना जाता है कि, उसमें वनस्पतियों तथा औषधियों का सूक्ष्म प्रभाव विद्यमान रहता है।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के आधार पर सिद्ध हो चुका है कि, क्षय जैसे अनेक घातक रोगों की सर्वोत्तम औषधि ओषजन युक्त शुद्ध वायु ही है। ओषजन वायु में जहाँ अन्य अनेक स्वास्थ्यदायक गुण होते हैं, वहाँ उसमें एक सुखाने का भी गुण होता है। यह वायु रोगी के शरीर में जाकर जहाँ रोगाणुओं का नाश करती है, वहाँ फेफड़ों आदि में पड़ गए घावों को सुखाती भी है।

प्रकृति की उन्मुक्त वायु में दिशाओं की गति के अनुसार भिन्नता भी होती है। पूर्व से आने वाली वायु जहाँ क्षत को सुखाती है, वहाँ पश्चिमीय वायु उसे हरा कर देती हैं। बरसाती वायु तो हर प्रकार के क्षत के लिए हानिकारक मानी जाती है। इस भिन्नता तथा ऋतु वैभिन्य के कारण प्रकृति की ओषजन युक्त वायु भी हर समय हर प्रकार से लाभकारी नहीं हो सकती। उसके लाभ के लिये उसकी गति तथा ऋतुओं पर निर्भर रहना पड़ता है। एक यज्ञीय वातावरण ऐसा होता है, जिस पर ऋतु अथवा दिशा का कोई प्रतिबंध नहीं रहता। वह हर समय-हर प्रकार से लाभकारी ही होता है।

साथ ही एक विशेषता और भी होती है—वह यह कि, यज्ञ में हवन की हुई एक ही औषधि अनेक रोगों पर लाभकारी सिद्ध होती है। ईश्वर ने एक औषधि में एक ही गुण नहीं रखा, उसमें अनेक गुण होते हैं। होमियोपैथिक के जानकार जानते हैं कि,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसकी एक ही औषधि अनेक रोगों की अवस्था विशेष में दी जाती है और वह लाभ करती है। पीसने-कूटने अथवा उबालने से औषधि का एक स्थूल तत्त्व ही प्राप्त होता है, बाकी सब फोकट अथवा छिलकों के रूप में बेकार चला जाता है। हवन की हुई किसी औषधि का कोई भी तत्त्व किसी प्रकार भी नष्ट नहीं होता। वे सारे के सारे अपनी पूरी शक्ति के साथ विस्फुरित होकर वायुमंडल में मिल जाते हैं।

इस प्रकार किसी भी रोग के रोगी यदि नित्य प्रति विशुद्ध औषधियों के साथ यज्ञ करें, तो कोई कारण नहीं कि वे शीघ्र ही स्वस्थ न हो जाएँ। कैंसर, तपेदिक अथवा कारबंकल जैसे रोगों के रोगियों को चाहिए कि, वे अन्य हवन सामग्री के साथ-इन रोगों की आयुर्वेदिक औषधि विशेष के साथ नित्य प्रति यज्ञ किया करें। इससे उनके रोग के सदा-सर्वदा के लिए अच्छे हो जाने की संभावना रह सकती है। इसीलिए ऋषि ने नीरोग होने, स्वस्थ रहने तथा सौ साल तक जीवित रहने के लिए यज्ञ करने का निर्देश किया है।

□ □

www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यज्ञ और पर्यावरण

पर्यावरण संशोधन में वृक्ष-वनस्पति का महत्त्वपूर्ण योगदान तो हो ही सकता है। इसके अतिरिक्त एक उपचार और भी है—अग्निहोत्र की प्रक्रिया का अभिनव पुनरुत्थान प्रचलन। विषाणुओं को मारने के लिए जिस प्रकार एंटी बायोटिक्स रसायनों का प्रयोग होता है, उसी प्रकार वायु प्रदूषण के निराकरण में अग्निहोत्र-प्रक्रिया की अपनी विशिष्ट भूमिका है। जिस प्रकार बड़े कारखानों की छोटे कुटीर उद्योगों में विकेंद्रीकरण करने की बात सोची जा रही है, उसी प्रकार बड़े यज्ञ आयोजनों के स्थान पर छोटे, घर-घर में चलने वाले दीपयज्ञ, युगयज्ञ और बलिवैश्व जैसे प्रचलनों को पुनर्जीवित किया जा रहा है। प्रज्ञा पुरश्चरण के अंतर्गत प्रज्ञायज्ञों की प्रक्रिया को अतीव सरल एवं सस्ता बना दिया गया है। दीपयज्ञ में पांच घृत-दीपक, पाँच-पाँच अगरबत्तियों के पांच गुच्छक जलाने एवं २४ बार गायत्री मंत्र का सामूहिक पाठ करने भर से ही इस महान् प्रयोजन की संक्षिप्त प्रतीक पूजा हो जाती है। जहाँ जिस प्रकार जिस स्तर का यज्ञोपचार संभव हो, वहाँ उसके लिए तदनरूप प्रयत्न चलने चाहिए।

☆ प्रदूषण निवारण का विशुद्ध वैज्ञानिक प्रयोग है—यज्ञ

शहरी इलाकों में व्यक्ति संपूर्ण सुविधा, समुचित साधन और उपयुक्त उपचार के बावजूद देरी से स्वस्थ होते देखे जाते हें, जबकि सैनिटोरियमों में आवश्यक वस्तुओं के अभाव में भी स्वास्थ्य लाभ तीव्रता से होता है। ग्रामीण वातावरण में आरोग्यता शीघ्रता से प्राप्त होती है, जबकि औद्योगिक क्षेत्रों में इसमें विलंब होता दृष्टिगोचर होता है। इसका कारण क्या है ?

विशेषज्ञों का इस संबंध में सुनिश्चित मत है कि, यह पर्यावरण ही है, जो व्यक्ति को सबल-स्वस्थ बनाता अथवा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निर्बल-निरीह बनाकर बीमार कर देता है। यहाँ यह प्रश्न उठ सकता है कि, आखिर पर्यावरण में ऐसी क्या विशेषता है कि, कहीं वह स्वास्थ्य के लिए अनुकूल और आरोग्यवर्धक साबित होता है, तो कहीं प्रतिकूल ? विज्ञानवेत्ता इसके लिए "आयन" को जिम्मेदार बताते हैं। उल्लेखनीय है कि हम हवा के विशाल समुद्र में रहते हैं। सर्वसाधारण जिसे हवा के नाम से पुकारता है, वह वस्तुतः कई गैसों का सम्मिश्रण है। इन गैसों का जब कभी अत्यधिक ऊर्जा से आमना-सामना होता है, तो उनके अणु-परमाणु आयनीकृत हो जाते हैं और ऋण एवं धन प्रकृति के कणों को जन्म देते हैं। यही कण अपनी संख्या एवं स्वभाव के आधार पर भली-बुरी जलवायु का निर्माण करते हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि धनायन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं, जबकि ऋणायन लाभकारी। जहाँ धनायनों की संख्या किन्हीं कारणों से सामान्य से अधिक हो जाती है, उन-उन स्थानों में रहने वाले लोगों का स्वास्थ्य इनसे प्रभावित होता और लड़खड़ाने लगता है, अथवा दूसरे शब्दों में कहें, तो वहाँ की आबोहवा स्वस्थता की दृष्टि से प्रतिकूल बन जाती है। विश्व में ऐसी कितनी ही हवाएँ अनेक स्थानों पर बहती पाई गई हैं, जो अपने दुष्प्रभाव के लिए कुख्यात हैं। इनमें दक्षिणी कैलिफोर्निया की "सांता एना विंड्स" कनाडा की "चिनुक विंड्स" फ्राँस की 'मिस्ट्रल विंड्स' अर्जेंटीना की "जोंडा विंड्स" इटली की "सिरोक्को विंड्स" एवं इजराइल और आस-पास के क्षेत्रों की "शाराव अथवा चैमसिन विंड्स" प्रमुख हैं। इन स्थानों में जब ये हवाएँ चलती हैं, तो वहाँ के निवासियों का शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य बुरी तरह बिगड़ने लगता है। उदाहरण के लिए इजराइल से होकर बहने वाली हवा 'चैमसिन विंड्स' को लिया जा सकता है। इस हवा के चलने से ठीक दो दिन पूर्व उस क्षेत्र के लोगों के मूत्र में सेरोटोनिन स्राव अचानक बहुत बढ़ जाता है। स्राव का अकस्मात् बढ़ जाना इस बात का स्पष्ट संकेत है कि—व्यक्ति मानसिक रूप से अत्यधिक तनाव से गुजर रहा है। इसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अतिरिक्त जो प्रकट लक्षण दिखाई पड़ते हैं, वे हैं—उन्माद, अनिद्रा, आधासीसी, मिचली, उलटी, दृष्टिक्षीणता एवं सूजन। हवा बहने से पूर्व ही ऐसे प्रतिकूल शारीरिक, मानसिक लक्षण क्यों परिलक्षित होने लगते हैं ? जब इस संदर्भ में वैज्ञानिकों ने अध्ययन किया, तो पता चला कि उस दौरान किन्हीं अज्ञात कारणों से उक्त क्षेत्र में धनायनों की संख्या असाधारण रूप से बढ़ जाती है। इसी की परिणति शरीर-मन की असामान्यता के रूप में सामने आती है।

परिणामों को और अधिक सुनिश्चित एवं परिपुष्ट करने के लिए मूर्द्धन्य विज्ञानी अल्बर्ट क्रुजर एवं सहयोगियों ने चूहों पर एक प्रयोग किया। उन्होंने जब उन्हें धनाययुक्त वातावरण में रखा, तो रक्त सेरोटोनिन में स्पष्ट अभिवृद्धि देखी गई। इसके विपरीत ऋणायनों की अधिकता वाले परिवेश में सेरोटोनिन स्तर में गिरावट आती पाई गई। इतना ही नहीं, इसमें घाव एवं दूसरे प्रकार की शारीरिक व्यथाओं से जल्दी छुटकारा पाते देखा गया। इस प्रकार आयनों का शारीरिक-मानसिक प्रभाव ज्ञात हो जाने के उपरांत इस प्रश्न का भी संतोषजनक उत्तर ढूँढ़ लिया गया कि, क्यों जल-प्रपातों, समुद्री किनारों एवं वन्य प्रांतों का वातावरण स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभकारी होता है ? शोध-अनुसंधानों के दौरान इन स्थानों में ऋणायनों की संख्या सामान्य से काफी अधिक पाई गई। इस प्रकार स्वास्थ्य संबंधी ऋणायनों के सत्परिणामों की सुनिश्चित पुष्टि हो जाने के पश्चात् वैज्ञानिक अपनी प्रयोगशालाओं एवं घरों में ऐसे प्राकृतिक वातावरण विनिर्मित करने में सफल हो गए, जो उन्हें शरीर-मन से स्वस्थ और शांत बनाए रख सकें। ऐसे वैज्ञानिकों में अग्रणी हैं, युनिवर्सिटी ऑफ कैलीफोर्निया-बर्कले के डॉ० अल्बर्ट क्रूजर। उनने अपनी यूनिवर्सिटी की अनुसंधानशाला में ऐसे अनेक फिल्टर लगा रखे हैं, जो हवा को धूल कणों और प्रदूषण कारक तत्त्वों से मुक्त करते रहते हैं। इसके अतिरिक्त ऐसे जेनरेटर भी हैं, जो प्रयोगशाला के अंदर की हवा को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आवश्यक परिमाण में ऋणायनों की आपूर्ति करते रहें। इन विशेषताओं के कारण उनकी शोधशाला के भीतर प्रवेश करते ही ऐसा महसूस होता है, जैसे व्यक्ति किसी वन्य प्रदेश के स्वच्छ, शांतिदायक वातावरण में पहुँच गया हो।

यह आधुनिक विज्ञान के अभिनव प्रयोग हैं। उपलब्धि की दृष्टि से इन्हें सराहनीय तो कहा जा सकता है, पर ऐसा नहीं—जो बड़े प्रदेश को व्यापक स्तर पर प्रभावित-परिष्कृत कर सकें। वस्तुतः यह वैयक्तिक प्रयोग हैं। इनका असर घर-परिवार के छोटे क्षेत्र तक सीमित रहता है और अर्थ की दृष्टि से खर्चीला भी है। ऐसी स्थिति में आज के विश्वव्यापी पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने के लिए इनकी उपयोगिता न सिर्फ समाप्त हो जाती है, वरन् विवेक की दृष्टि से असंगत भी साबित होती है। रोग जब हिमालय जितना विशाल व व्यापक हो और उपचार किसी एक अवयव का किया जा रहा हो, तो इसे बुद्धि का दिवालियापन ही कहना चाहिए। जहाँ लक्ष्य संपूर्ण भूमंडल के पर्यावरण को परिशोधित करना हो, वहाँ उपाय भी उसी स्तर का विस्तृत-विराट् और प्रभावकारी होना चाहिए, जिसे सस्ते में हर कोई सरलतापूर्वक संपन्न कर सके। ऐसे में ध्यान ऋषियों के जिस सूक्ष्म वैज्ञानिक प्रयोग की ओर बरबस जाता है, वह है—अग्निहोत्र अथवा यज्ञ।

यों पिछले दिनों तक यज्ञ को एक धार्मिक कर्मकांड भर माना जाता रहा था, पर अब जैसे-जैसे विज्ञान का ध्यान इस ओर जा रहा है, इसकी वैज्ञानिकता उसे सुस्पष्ट नजर आने लगी है। वैज्ञानिक ज्यों-ज्यों इसकी गहराई में प्रवेश करने की कोशिश कर रहे हैं, त्यों-त्यों नित नए तथ्यों का उद्घाटन होता जा रहा है। इन्हीं में से एक नवीन तथ्य है—ऋणायनों का उत्पादन और संकेंद्रण। ज्ञातव्य है कि जहाँ नियमित रूप से बराबर यज्ञ होता है, वहाँ ऋणायनों की संख्या उसी सीमा में पाई गई, जो समुद्र तटीय अथवा वन प्रांतरों में रहती है, अर्थात् २००-४०० आयन प्रति घन से० मी० हवा में। उपरोक्त स्थलों में इसकी घनीभूत संख्या से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संबंधित प्रक्रिया के बारे मे तो सही-सही कुछ भी नहीं जाना जा सका, पर यज्ञीय स्थलों में इनके निर्माण का समुचित कारण विद्यमान है।

यज्ञ के दौरान आयन-उत्पादन निष्पन्न होता है और आस-पास के इलाकों में घनीभूत होकर वहाँ के वातावरण को परिशोधित करता एवं स्वास्थ्यवर्धक बनाता है। इसके अतिरिक्त यज्ञ प्रक्रिया से ऐसे सूक्ष्म तत्त्वों का भी निर्माण संपादित होता रहता है, जो उक्त क्षेत्र में संव्याप्त विषैले कणों से प्रतिक्रिया कर उन्हें निरस्त करते हैं। इसकी पुष्टि इस बात से सुनिश्चित हो जाती है कि, ऐसे आवेशित कणों की रचना नैसर्गिक रूप से सदा सर्वत्र होती तो रहती है, किंतु अन्य स्थानों में वे स्थानीय विषैले तत्त्वों से प्रतिक्रिया कर निष्क्रिय बड़े आयनों में परिवर्तित हो जाते है और आरोग्यकारी लघु आयन अत्यल्प संख्या में ही रह जाते हैं।

प्रख्यात मौसम विज्ञानी बी० मैक्जिन्सकी ने सन् १९७१ में—(इंटरनेशनल जरनल ऑफ बायोमिटियरोलॉजी खंड १५ पृ. ११), एक ऐसे ऑफिस का चौदह दिवसीय सर्वेक्षण किया था, जिसमें मात्र चार कर्मचारी थे। जॉच से विदित हुआ कि दिन ढलने के साथ-साथ छोटे आयनों की सघनता घटती जाती है। चौदह दिनों में इनकी औसतन संख्या शाम के समय ३४ धनायन एवं २० ऋणायन प्रतिघन सेमी० पाई गई। जे० सी० बेकेट द्वारा सेन फ्रांसिस्को के औद्योगिक क्षेत्र में जाँच-पड़ताल के दौरान आवेशित लघु कणों की संख्या ८० आयन घन से० मी० से भी कम देखी गई। इन दोनों ही अध्ययनों में निष्क्रिय एवं बड़े आयनों की तादाद असाधारण रूप से बढ़ी-चढ़ी प्राप्त हुई, जबकि यज्ञीय वातावरण में तथ्य सर्वथा विपरीत दृष्टिगोचर होता है। वहाँ छोटे सक्रिय ऋणायनों की सघनता ही सर्वाधिक थी। इससे उपरोक्त दोनों ही बातें प्रमाणित हो जाती हैं। प्रथम यह कि, यज्ञ से आरोग्यवर्धक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऋणावेशित कणों का निश्चित निर्माण होता है, दूसरे इससे प्रदूषण का भी सतत शमन होता रहता है।

इतना जान लेने के उपरांत यज्ञ की वैज्ञानिकता में संदेह करने का कोई कारण शेष नहीं रह जाता। संभव है अगले दिनों इससे संबंधित और नवीन तथ्यों की जानकारी मिले। जड़ी-बूटियों का यजन अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। इससे स्थानीय पर्यावरण औषधियुक्त बनता है और उसका अनायास लाभ वहाँ के निवासियों को सुगंधि, स्फूर्ति और शांति के रूप में मिलता रहता है। इतने पर भी जो इस सूक्ष्म विज्ञान के संबंध में यह आक्षेप लगाते हैं कि—इससे प्रदूषण बढ़ता है, उनके लिए इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि, इससे अदृश्य परिशोधन कई गुना बड़ा होता है—इतना बड़ा, जिसे अतुलनीय कहा जा सके। शांतिकुंज के तत्त्वाधान में आयोजित होने वाली महायज्ञों की श्रृंखला इसी प्रयोजन की पूर्ति हेतु है। इसका एकमेव उद्देश्य बड़े स्तर पर विश्वव्यापी पर्यावरण प्रदूषण-निवारण और जन-जागरण है। इसे किसी मत-मतांतर या संप्रदाय से नहीं जोड़ा जाना चाहिए। यह एक विशुद्ध वैज्ञानिक प्रयोग है, जिसे संप्रति अपनाया ही जाना चाहिए।

✰ यज्ञ ऊर्जा के बहुआयामी लाभ

भौतिक ऊर्जा और प्राण ऊर्जा के समन्वय से एक तीसरी शक्ति के आविर्भाव में प्राचीनकाल के वैज्ञानिक 'ऋषियों' ने एक अद्‌भुत सफलता प्राप्त की और उसे 'यज्ञाग्नि' के नाम से संबोधित किया। यज्ञ भारतीय धर्म परंपरा में उपासनात्मक अनुष्ठानों में भी सम्मिलित रखा गया है और उसका प्रयोग सृष्टि एवं समाज के असंतुलन को सँभालने में एक सामर्थ्य विशेष के रूप में भी हुआ है।

यज्ञ का भारतीय संस्कृति में अविच्छिन्न स्थान है। उसे यज्ञ-संस्कृति भी कहा जाता रहा । जन्म से लेकर मरण पर्यंत षोडश संस्कारों के रूप में इस प्रक्रिया का सोलह बार प्रयोग करके उसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवनक्रम में से पशु प्रवृत्तियों के निराकरण और देवप्रवृत्तियों के अविवर्धन की अपेक्षा की जाती रही है। प्रत्येक पर्व और शुभारंभ में यज्ञ कृत्य की अनिवार्यता मानी गई है। होली वार्षिक सर्वजनीन यज्ञ है। पाँच आहुतियों का बलिवैश्व यज्ञ दैनिक नित्य कर्म में सम्मिलित रखा गया है। भारतीय धर्मानुयायी का विवाह विधान दो आत्माओं को वेल्डिंग की तरह जोड़ने वाले यज्ञ कृत्य के साथ ही संपन्न होता है। पार्थिव शरीर की पूर्णाहुति चिता जलाकर अंत्येष्टि-यज्ञ के रूप में ही संपन्न होती है। इन परंपराओं पर दृष्टिपात करने से प्रतीत होता है कि, भारतीय जीवनचर्या में यज्ञ को कितनी गहराई तक घुला-मिलाकर रखा गया है।

यज्ञ के भी गायत्री की तरह दो पक्ष हैं—एक दार्शनिक, दूसरा वैज्ञानिक। जीवन यज्ञ अथवा यज्ञीय जीवन एक दार्शनिक दृष्टिकोण है, जिसके अनुसार पवित्रता और उदारता की रीति-नीति अपनाकर जिया जाना चाहिए। प्रथम और प्रमुख धर्मशास्त्र ऋग्वेद के प्रथम मंत्र के प्रथम चरण में यज्ञाग्नि को पुरोहित कहा गया है। पुरोहित अर्थात् मार्गदर्शक, यहाँ मार्गदर्शक का तात्पर्य जीवन की दिशा-धारा का निर्धारक है। यज्ञाग्नि की पाँच विशेषताएँ बताई गई हैं—(१) सदा गरम अर्थात् सक्रिय रहना। (२) ज्योतित अर्थात् अनुकरणीय बनकर रहना (३) संपर्क में आने वाले को अपने जैसा बना लेना (४) उपलब्धियों का संग्रह न करके वितरित करते रहना (५) लौ ऊँची रखना अर्थात् चिंतन, चरित्र और स्वाभिमान को नीचे न गिरने देना। इन्हीं आदर्शों को पंचशील कहा गया है, जो विभिन्न अवसरों पर विभिन्न प्रयोजनों के लिए विभिन्न प्रकार से प्रयुक्त होते हैं। पंचशील ही पंच देव हैं। उपासना में इन्हीं पाँचों को मूर्द्धन्य माना गया है।

यज्ञाग्नि का वैज्ञानिक रूप वह है, जिसमें प्राण ऊर्जा से लेकर ब्रह्म ऊर्जा तक की प्रमुख पाँच अग्नियों को ज्वलंत किया जाता है। कठोपनिषद् के यम-नचिकेता संवाद में पंचाग्नि विद्या का सुविस्तृत उल्लेख है। उस प्रक्रिया के सहारे शरीर के आधारभूत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पंचतत्त्वों का नये सिरे से परिमार्जन करके कायाकल्प जैसी स्थिति उत्पन्न की जा सकती है। चेतना के भी पाँच आधार हैं, जिन्हें पाँच प्राण कहते हैं। इन पाँच घटकों का स्तर बढ़ाकर साधक की प्राण संज्ञा को किस प्रकार उच्चस्तरीय बनाया जा सकता है ? यह भी एक रहस्य है, जिसका आभास यम निर्देशित पंचाग्नि विद्या में मिलता है।

जीव सत्ता को प्राण कहते हैं, उसमें भौतिक और आत्मिक दोनों ही स्तर की ऊर्जा का समावेश है। इस प्राण को प्रखर एवं प्रचंड बनाकर प्राणाग्नि स्तर तक पहुँचाने की विद्या प्राणायाम कहलाती है। इसके अतिरिक्त अंतर्जगत् में सन्निहित दिव्यता को आवश्यक ऊर्जा प्रदान करने और सुसुप्ति को जाग्रति में परिणत करने के लिए अंतराल को प्रभावित करने वाली अनेक साधनाओं का भी अवलंबन अपनाना पड़ता है। गीता में "प्राण को अपान में और अपान को प्राण में यजन करने" का संकेत है। यह अंतर्क्षेत्र की प्राणाग्नि का यज्ञाग्नि का प्रज्वलन है। कुंडलिनी जागरण, षटचक्र वेधन, ग्रंथि वियोजन, ध्यान, धारणा समेत समाधि प्रकरण जैसी अनेक साधनाएँ इसी परिधि में आती हैं। आत्म यज्ञ में बाहरी वस्तुओं की आवश्यकता नहीं पड़ती। कायसत्ता में विद्यमान साधन-सामग्री से ही योगाग्नि उत्पन्न कर ली जाती है और वह प्रतिफल हस्तगत किया जाता है, जिसका माहात्म्य-विस्तार अध्यात्म विज्ञान की अनेकों साधनात्मक दिशाधाराओं में किया गया है। यज्ञाग्नि और प्राणाग्नि के परस्पर संबंध में प्रश्नोपनिषद् में सुविस्तृत प्रकाश डाला गया।

अध्यात्म विज्ञान के अनुसार कायसत्ता की पाँच परतें हैं, जिन्हें पंचकोश कहते हैं। अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनंदमय कोश के नाम से इन्हें जाना जाता है। इन्हें आत्मिक प्रगति के पाँच सोपान एवं पाँच दिव्यलोक भी कहते हैं। यह सब कुछ अपने ही शरीर हैं, परंतु अभीष्ट ऊर्जा के अभाव में सब कुछ प्रसुप्त स्थिति में पड़ा रहता है। जागरण के लिए उसे ऊर्जा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चाहिए। पक्षियों के अंडे निजी गरमी से नहीं, बाहरी गरमी से पकते हैं। काया के पाँच तत्त्वों और चेतना के पाँच प्राणों को प्रखर बनाने के लिए जिस आंतरिक ऊर्जा की आवश्यकता पड़ती है, उसे पंचाग्नि विद्या–प्राणाग्नि विद्या के सहारे संपन्न किया जाता है। मनुस्मृति के अनुसार सामान्य काया को यज्ञ विद्या के सहारे ब्राह्मीय–देवत्व संपन्न बनाया जाता है। कहा गया है कि ब्राह्मण वंश नहीं, वरन आत्मविकास का एक सोपान है, उसमें यज्ञोपचार का आश्रय लेना पड़ता है। यहाँ अध्यात्म यज्ञ का 'प्राण–से–प्राण के यजन' का संकेत है, फिर भी उस प्रक्रिया में अग्निहोत्र की अत्यधिक उपयोगिता मानी गई है। संक्षेप में व्यक्तित्व में, अंतरंग और बहिरंग क्षेत्रों में प्रखरता भर देने के लिए योगाग्नि और यज्ञाग्नि की आवश्यकता तत्वदर्शियों ने समझी है।

अग्निहोत्र, यज्ञ विधान का तीसरा सोपान है। आमतौर से यज्ञ शब्द से अग्निपूजा का ही अर्थ लिया जाता है। यह देखने में भौतिक विज्ञान की प्रक्रिया प्रतीत होती है, पर वस्तुतः उसमें चेतन और पदार्थ की विशिष्टताओं का समान रूप से उपयोग होता है। अग्निहोत्र का माहात्म्य भौतिक उपलब्धियों के रूप में किया जाता है, फिर भी उसके साथ जुड़े हुए दिव्य परिणाम कम नहीं हैं।

अग्निहोत्र का प्रचलन भारत में छोटे–बड़े सही–गलत रूप में सर्वत्र पाया जाता है। देवता के नाम पर ज्योति जलाने और गूगल चढ़ाने की परंपरा से पिछड़े वर्ग भी परिचित हैं। होली जलाने में बच्चों तक को उत्साह रहता है। अगरबत्ती, धूप–दीप–जलाने में इसी प्रयोजन की चिह्न पूजा है। अन्य धर्मावलंबी भी इस प्रक्रिया को किसी–न–किसी रूप में धर्म प्रयोजनों के अवसर पर प्रयुक्त करते हैं। प्रश्न उठता है कि इतने व्यापक प्रचलन के पीछे कोई विशेष उद्देश्य है या ऐसे ही सुगंधित धुआँ फैलाने जैसे छोटे प्रयोजन के लिए सब किया जाता है।

मनुष्य शारीरिक एवं मानसिक रूप से निरंतर गंदगी निकालता रहता है। सामूहिक रूप से भी आए दिन गंदगी एवं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कचरा उत्पन्न होता है। यह सभी निरंतर वायुमंडल में सम्मिलित होता और बढ़ता जाता है। यों तो इस गंदगी की शोधन वाली बात का भी महत्त्व है, पर समझा जाना चाहिए कि, यज्ञ जैसा उच्चस्तरीय अनुष्ठान एवं अनुशासित विधि-विधान मात्र इतने भर के लिए नहीं बना है। आज पर्यावरण प्रदूषण एक विकराल समस्या बन गई है और अंतरिक्ष के विषाक्तता से भरते जाने के कारण उत्पन्न संकट की विभीषिका ने सभी को चिंतित किया है। कल-कारखाने, परमाणु भट्ठियाँ एवं परिवहन के साधन जैसे—मोटर-गाड़ियाँ और वायुयान आदि को बंद करने की भी किसी की हिम्मत नहीं पड़ती और प्रदूषण से निपटने की कोई तरकीब भी हाथ नहीं लगती। इस संदर्भ में यज्ञाग्नि द्वारा निस्सृत ऊर्जा से कचरे को माचिस से नष्ट करने की तरह नई आशा का नया केंद्र बिंदु मानकर इसे ब्रह्मवर्चस् की शोध श्रृंखला में सम्मिलित किया गया है।

यज्ञ के फलस्वरूप 'पर्जन्य' बरसने का प्रतिफल बताया गया है। पर्जन्य का मोटा अर्थ बादल भी है और उससे अभीष्ट वर्षा होने का तुक बिठाया गया है, पर वास्तविकता यह है नहीं। पर्जन्य अनंत अंतरिक्ष में घुमड़ने वाली प्राण परतों को कहते हैं, जो जल ही नहीं, पवन, अन्न एवं वनस्पतियों में सम्मिलित होकर प्राणियों की क्षमता एवं पदार्थों की उपयोगिता की अभिवृद्धि करता है। यज्ञ से इसी पर्जन्य की वर्षा होने और उससे सुखद परिस्थितियाँ विनिर्मित होने की बात कही है। विश्व वैभव के संवर्धन में यज्ञ-प्रक्रिया का कितना बड़ा योगदान हो सकता है, इस तथ्य को अतीत के अध्यात्म विज्ञानी ऋषि-मनीषियों ने भली प्रकार जाना था और इस उपचार से विश्वकल्याण का व्यापक वातावरण बनाया था। विषाक्तता भरे आज के पर्यावरण में इस महाविज्ञान की खोई हुई कड़ियों को फिर से ढूँढ़ निकालने की आवश्यकता आ पड़ी है और तदनुरूप ही उसकी व्यवस्था बनायी जानी चाहिए। यों तो चिह्नपूजा के रूप में जो आधी-अधूरी लकीर पिटती रहती है, उससे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यज्ञ परंपरा का परिचय भर मिलता है, पर वह प्रयोजन पूरा नहीं होता, जिसके कारण इस पुण्य प्रक्रिया को उच्चस्तरीय ऊर्जा शक्ति के रूप में मान्यता मिली थी।

यज्ञीय ऊर्जा का सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है—पर्यावरण परिशोधन। दूसरा लाभ है—शारीरिक और मानसिक रुग्णता से जूझना और स्वास्थ्य संवर्धन का पथ प्रशस्त करना। प्राणी जगत् और पर्यावरण परस्पर अन्योन्याश्रित हैं। अतः इस दृष्टि से भी कि यज्ञ से प्राणियों में स्वास्थ्य संवर्द्धन होता है, पर्यावरण संरक्षण का उद्देश्य ही पूर्ण होता है। प्राचीनकाल से ही मनुष्य के शारीरिक और मानसिक रोगों की निवृत्ति में यज्ञाग्नि का उपयोग होता रहा है। दोनों क्षेत्रों की समर्थता बढ़ाने में भी इस प्रक्रिया की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसका परिचय इतिहास-पुराणों की अनेक आख्यायिकाएँ प्रस्तुत करती हैं। यज्ञोपचार से राजा दशरथ के चार पुत्र, अश्वत्थामा, द्रौपदी आदि विशिष्ट आत्माओं के जन्म धारण करने की गाथाएँ बताती हैं कि, इस ऊर्जा का प्रभाव मानवी सत्ता की कितनी गहरी परतों तक पहुँचता है। बात इससे कहीं अधिक बढ़ी-चढ़ी है। यह समस्त संसार एक विश्व पुरुष है, उसे विराट् भी कहा गया है। इस विराट् के घटकों-अवयवों में समस्त प्राणी और पदार्थ सम्मिलित हैं। यज्ञोपचार को इस विराट् का प्राणोपचार माना गया है और **"यज्ञेन यज्ञमयजन्तः देवाः"**—मंत्र में विभूतियों के अजस्र अभिवर्धन की बात कही गयी। इसमें सृष्टि की सामान्य संपदा को असामान्य बना देने और प्राणियों तथा पदार्थों का स्तर ऊँचा उठा देने का संकेत है।

सर्वविदित है कि पदार्थ के तीन स्वरूप होते हैं—ठोस, द्रव और गैस। कोई पदार्थ नष्ट नहीं होता, वरन् परिस्थिति के अनुरूप इन्हीं तीन स्थितियों में अदलता-बदलता रहता है। वायुभूत हुआ पदार्थ सृष्टि के कण-कण में फैल जाता है। वही सूक्ष्मीकृत पदार्थ श्वास के माध्यम से, सरलतापूर्वक काया के कण-कण में भी अति शीघ्र पहुँचाया जा सकता है, जबकि उसे उदरस्थ करने और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पचाने के लिए प्रभावी बनाने में विलंब ही नहीं लगता, वरन् अंश भी बहुत थोड़ा ही हाथ लगता है। इंजेक्शन में सरलता मानी गई है और उस माध्यम से उपचार सामग्री भीतर पहुँचाने का उपाय खोजा गया है, किंतु यह पद्धति भी आंशिक रूप से ही सफल हुई है। कई बार तो शरीर के श्वेत रक्त कण उसके प्रति विद्रोह तक खड़ा कर देते हैं और लाभ के स्थान पर हानि उठानी पड़ती है। किंतु यज्ञाग्नि द्वारा पदार्थ को वायुभूत बनाकर उसे शरीर में प्रवेश कराने की पद्धति ऐसी है जिसे निरापद, सरल और सफल होने का अपेक्षाकृत अधिक अवसर है। कारण सूक्ष्म होने पर पदार्थ की सामर्थ्य और व्यापकता बढ़ती है। यज्ञ में यजन किए गए पदार्थ नष्ट नहीं होते, वरन् अदृश्य होकर अपेक्षाकृत अधिक सशक्त और व्यापक बन जाते हैं और साँस के सहारे अंदर पहुँचकर अपना अधिक प्रभाव छोड़ते हैं। इस माध्यम से रोग निवारक और परिपोषक पदार्थ वायुभूत होकर जब भीतर पहुँचते हैं, तो अपनी सूक्ष्मता के कारण स्वभावतः अधिक प्रभावी होते हैं। इस प्रक्रिया की एक और विशेषता है कि, साँस नाक द्वारा ली जाती है और वह मस्तिष्क मार्ग से फेफड़ों में होती हुई समूचे शरीर में वितरित होती है। अतः यज्ञ प्रक्रिया द्वारा निःसृत गैस का प्रमुख लाभ मस्तिष्क को मिलता है। इस तरह यज्ञ से शारीरिक ही नहीं, मानसिक उपचार भी बन पड़ता है।

यज्ञ में मात्र अमुक पदार्थों का वायुभूत बनाना ही एक प्रसंग नहीं है, वरन् याजकों की श्रद्धा, विशेष स्थिति, मंत्रों की स्वर-शक्ति व्यक्तियों की संयुक्त ऊर्जा जैसे अनेक कारणों के मिलने से एक विशिष्ट वातावरण बनता है। ऐसा विशिष्ट जिसमें देवसत्ता की उपस्थिति का अनुभव किया जा सके। इस उत्पादन का न केवल उस प्रयोजन में भाग लेने वालों पर प्रभाव पड़ता है, वरन् व्यापक वातावरण पर उसकी उपयोगी प्रतिक्रिया होती है। पर्जन्य के रूप में—प्राणऊर्जा, प्राणियों की समर्थता का संवर्धन, ऋतुओं की अनुकूलता, वनस्पतियों का विशिष्ट परिपोषण, रोग कीटाणुओं का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शमन जैसे कितने ही भौतिक लाभ प्राचीनकाल में यज्ञों से मिलते रहे हैं। प्राण और पदार्थ की संयुक्त ऊर्जा से जिस यज्ञाग्नि का आविर्भाव होता है, उसकी सामर्थ्य एवं परिणति तो असाधारण है। पर्यावरण एवं समाज के बिगड़ते संतुलन को सँभालने में समय-समय पर इस तरह राजसूय, वाजपेय और अश्वमेघ यज्ञों के विराट् आयोजन होते रहे हैं। इन दिनों इक्कीसवीं सदी की गंगोत्री शांतिकुंज द्वारा विश्व-स्तर आयोजित अश्वमेध यज्ञों को उसी पुरातन श्रृंखला की कड़ी माना जाना चाहिए। इसमें सतयुग की, देवलोक की संभावनाओं का मानवी प्रयत्नों द्वारा अवतरित, विनिर्मित, सुनिश्चित तथ्य सन्निहित हैं।

☆ धुआँ—एक मारता है; एक जिंदगी देता है

www.vicharkrantibooks.org

"मेरी सोचने की शक्ति समाप्त हो गई। यह क्या हो रहा है ? इस पर चकित होने तक के लिए बुद्धि शेष नहीं थी। कार चलाना कठिन हो गया, किसी तरह कार से उतरा, तो लगा कि सीने पर कोई दैत्य चढ़ बैठा है और उसने भीतर से जकड़ लिया है। खाँसी आने लगी, मुश्किल से कार्यालय मिला, टेलीफोन की घंटियाँ बज रही थीं और मुरदे के जैसे पास में कूड़े के ढेर की तरह पड़ा रहा, उस दिन एक भी टेलीफोन का उत्तर नहीं दे सका।"

यह बयान एक डॉक्टर के हैं, जो अमेरिका के डोनोरा नगर में एकाएक वायु में धुएँ और विषैले तत्त्वों के अधिक बढ़ जाने के परिणामस्वरूप उसके साथ घटित हुआ। उस दिन दस बजे तक भी सूर्य के दर्शन न हुए, तब लोग घरों से बाहर निकले। उनकी साँसें घुटने लगीं थीं, बाहर आकर देखा तो धुएँ का कुहरा (स्मोक) बुरी तरह छाया हुआ था। यह स्थिति पाँच दिन बनी रही। इस बीच भी कल-कारखाने, कार-मोटरें भट्ठियाँ १००० टन प्रति घंटे के औसत से धुआँ बराबर उड़ेलती रहीं। सारा शहर लगभग मृत्यु की अवस्था में पहुँच गया। लोगों की ऐसी दशाएँ हो गईं—जैसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऊपर के डॉक्टर के निजी बयान से व्यक्त है। वे बेचारे स्वयं भी मरीज थे, प्रकृति के आगे आज वे भी बेवश थे और सोच रहे थे कि, मानवीय सुख-शांति का आधार यांत्रिक सभ्यता नहीं हो सकती। नैसर्गिक तत्त्वों के प्रति श्रद्धा और सान्निध्य स्थापित किए बिना मनुष्य कभी सुखी नहीं रह सकता। भौतिक विज्ञान की प्रगति तो वैसी ही गले की फाँसी बन सकती है, जैसी आज सारे नगर की हो रही है।

इन ५-६ दिनों में डोनोरा नगर की १८ हजार की आबादी में ६ हजार अर्थात् एक-तिहाई व्यक्ति बीमार पड़ गये थे, सैकड़ों की मृत्यु हो गई। भगवान् कृपा न करते और ३१ को भारी वर्षा न होती, तो कौन जाने डोनोरा शहर पूरी तरह लाशों से पट जाता।

१९६६ में "थेंक्सगिविंग" दिवस पर न्यूयार्क में आस-पास के देहाती क्षेत्रों से भी सैकड़ों लोग आ पहुँचे। उस दिन भी यही दशा हुई। कुछ घंटों के धुएँ के दबाव से ही १७० व्यक्तियों की मृत्यु तत्काल हो गई। हजारों लोगों को पार्टियाँ, नृत्य और सिनेमा घरों की मौज छोड़कर अस्पतालों के बिस्तर पकड़ने पड़े। ऐसी दुर्घटना वहाँ १९५२ में भी हो चुकी थी, उसमें २०० से भी अधिक लोगों की मृत्यु हुई थीं।

सन् १९५६ में यही स्थिति एक बार लंदन की हुई थी, उसमें १००० व्यक्ति मरे थे। सरकार ने करोड़ों रुपयों की लागत से रोकथाम के प्रयत्न किए थे, तो भी १९६२ में दुबारा फिर वैसी ही स्थिति बनी और ४०० से अधिक व्यक्तियों की मृत्यु कुछ ही घंटों में दम घुटकर हो गई। कुछ लोगों ने तो इसे प्राकृतिक आत्महत्या कहा और चेतावनी दी कि, यदि धुएँ की समस्या को हल न किया गया, तो एक दिन सारा वायुमंडल विष से भर जाएगा। जिस दिन यह स्थिति होगी—उस दिन पृथ्वी की सामूहिक हत्या होगी। उस दिन पृथ्वी पर मनुष्य तो क्या कोई छोटा-सा जीव और वनस्पति के नाम पर एक पौधा भी न बचेगा। पृथ्वी की स्थिति शुक्र ग्रह जैसी विषैली हो जायेगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संसार के विचारशील लोगों का इधर ध्यान न हो, ऐसा तो नहीं है, किंतु परिस्थितियों के मुकाबले प्रयत्न नगण्य जैसे हैं। एक ओर जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हो रही है, उसी अनुपात से कल-कारखाने और शहरों की संख्या भी बढ़ेगी। अनुमान है कि, कुछ ही वर्षों में अमेरिका की ३२० बिलियन जनसंख्या होगी। इस आबादी का ८५ प्रतिशत शहरों में रहेगा। इस अवधि में कारों और मोटरों की संख्या इतनी अधिक हो जाएगी कि, उनको रखने की जगह न मिलेगी। अमेरिका में १ बच्चा पैदा होता है, तब तक कारें २ जन्म ले चुकी होती हैं।

"यूनिवर्सिटी स्टेटवाइड एअर पॉल्यूशन रिसर्च सेंटर (यह संस्था अमेरिका में वायु प्रदूषण से होने वाली हानियों और उनसे बचने के उपायों की शोध करती है) के डाइरेक्टर श्री जी० टी० मिडिल्टन के अनुसार एक कार सामान्य रूप से ६०० मील प्रतिमाह चलती है। एक दिन में २५ मील तो वह अनिवार्य रूप से चलती ही है, उससे ६ ½ पौंड वायुदूषण होता है। १९६० में इस राज्य में अकेले कारों से ३७ मिलियन पौंड (अर्थात् ४६२५०० मन से भी अधिक) वायु-प्रदूषण निकला। १९६३ में ५६ मिलियन पौंड, १९७० में ८१ मिलयन पौंड तथा १९८० में ११२ मिलियन पौंड्स से भी अधिक वायु दूषण, अकेली कार-मोटरों से पैदा हुआ।

कल-कारखानों से निकल रहे धुएँ की हानियों और भविष्य में हो सकने वाली भयंकरता का चित्रण करते हुए कैलीफोर्निया के टेक्नालॉजी संस्थान के भू-रसायनशास्त्री डॉ० क्लेअर-सी-पैटरसन और जन-स्वास्थ्य सेवा के निर्देशक डॉ० राबर्ट ई० कैराल ने लिखा है कि, टेक्नालॉजी के विस्तार से वायु में कार्बन और सीसे के कणों की मात्रा इतनी अधिक बढ़ जाएगी कि अमेरिका का हर व्यक्ति हृदय-तंत्रिका संस्थान (नर्वस सिस्टम) के रोग से पीड़ित अर्थात् लोग लगभग पागलों जैसी स्थिति में पहुँच जाएँगे।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

२००० के अंत तक विद्युत् का उपयोग ५ गुना बढ़ जाएगा, जिसके कारण वायु प्रदूषण ५ गुना बढ़ जाएगा। जनसंख्या वृद्धि का अर्थ रहन-सहन की वस्तुओं में वृद्धि होगी और उससे कूड़े की मात्रा भी निःसंदेह बढ़ेगी। उस बढ़ोत्तरी को न तो ऑक्सीजन का उत्पादन रोक सकेगा न पेड़-पौधे, क्योंकि यह स्वयं भी तो विषैले तत्त्वों के संपर्क में आकर विषैले होंगे और दूसरे नए-नए विष पैदा करने में मदद करेंगे। ऐसी स्थिति में यांत्रिक सभ्यता को रोकने और वायु शुद्ध करने के लिए सारे विश्व में यज्ञ-परंपरा चलाने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं रह जाता। यज्ञों में ही वह सामर्थ्य है, जो वायु प्रदूषण को समानांतर गति से रोक सकती है।

अभी इस गंदगी को दूर करने के लिए अमेरिका प्रति वर्ष एक अरब बीस करोड़ डालर्स (एक डालर का मूल्य प्रायः ४३ रुपये से कुछ अधिक होता है) खर्च करता है। ओजोन, सल्फर फ्लोराइड्स से शाक-सब्जी तथा फूल-फसलों की क्षति रोकने के लिए ५०० मिलियन डालर्स खर्च होता है। धातुओं पर जंग लगने, रंग उड़ने, सफाई व घर खर्च आदि बढ़ जाने, जानवरों के मरने, खाने की वस्तुएँ क्षतिग्रस्त होती हैं, नाइलोन, टायर और ईंधन नष्ट होता है। इन सबको रोकने और रख-रखाव में ३०० मिलियन डालर्स तथा सूर्य प्रकाश के मंद पड़ जाने के कारण जो अतिरिक्त प्रकाश की व्यवस्था करनी पड़ती है, उसमें ४० मिलियन डालर्स का खर्च वहन करना पड़ता है।

वायु-प्रदूषण बढ़ने के अनुपात से सुरक्षात्मक प्रयत्नों में खर्च की वृद्धि भी होगी, तो भी उसे रोक सकना संभव नहीं होगा। कैलीफोर्निया के कृषि-विभाग, सेवा योजन विभाग के प्रोग्राम लीडर डॉ० पी० ओस्टरली ने भविष्यवाणी की है कि, अमेरिका में वायु गंदगी के कारण जो नुकसान होने वाला है, वह बहुत भयंकर है। उसमें सुधार की कोई संभावना नहीं है। अगले कुछ दिनों में धुआँ इतना अधिक हो जाएगा कि प्रातःकाल चिड़ियों का चहचहाना तक बंद हो जाएगा, क्योंकि उन्हें सवेरे-सवेरे सामान्य साँस लेने में ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कठिनाई होने लगेगी, चहचहाने में तो श्वास-प्रश्वास की क्रिया बढ़ जाती है। इस स्थिति में उन्हें चुप रहने में ही सुविधा होगी।

न्यूयार्क का हिल्टन होटल औद्योगिक बस्ती के बीच बना हुआ है, इस होटल की दीवारों, शीशों और फर्नीचर आदि पर धुएँ और कार्बन कणों का ३ ½ वर्ष की अवधि में ही इतना बुरा प्रभाव पड़ा कि उसका सारा रंग उड़ गया। दीवारें खस्ता पड़ गईं, उसकी दुबारा ओवरहॉलिंग करानी पड़ी, जिसमें पचास हजार डालर्स का खर्च आया। यह तो रही एक सामान्य बिल्डिंग की बात। सारे विश्व के जनस्वास्थ्य, कृषि में सहयोगी पशुओं, धातुओं, भवनों आदि पर हुए इसके दुष्प्रभाव की हानि की कुल लागत की कल्पना भी नहीं की जा सकती। न्यूयार्क के सेंट ल्यूकस अस्पताल का गुंबद संगरमर और टेराकोटा का बना हुआ है। सल्फर डाइ-ऑक्साइड युक्त विषैले धुएँ ने उसे इस तरह कमजोर किया कि कोई भी लड़का वहाँ पहुँचकर उसे चुटकियों से ऐसे खोद लेता है जैसे गीली मिट्टी। उसकी तहें हाथ से मसल दी जातीं तो आटे की तरह चूर-चूर हो जातीं। गुंबद इतना खस्ता हो गया कि उसे बदलना पड़ा और उस पर सीधी छत डालनी पड़ी। पत्थर और क्रांकीट की बिल्डिगों का यह हाल हो, तो मनुष्य और प्रकृति के कोमल भागों पर उसके दुष्प्रभाव की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती।

यह हानियाँ तभी सुधार और नियंत्रण में आ सकती हैं, जब धुएँ को आकाश में नष्ट करने वाली प्रणाली का विस्तार हो। आज की स्थिति में कल-कारखाने रुकें, ऐसा नितांत संभव नहीं दिखाई देता। कल-कारखाने रुकेंगे नहीं, तो धुआँ पैदा होने से बंद नहीं होगा। धुआँ होगा, तो मानवजाति पर संकट की छाया घिरी ही रहेगी। यह धुआँ कभी भी मनुष्यजाति को गंभीर संकट में डाल सकता है, अतएव एक बार फिर से आकाश की शुद्धता के लिए भारतीय प्रयत्न व शोध-यज्ञों का अध्ययन-अनुसंधान व तीव्र प्रसार करना होगा।

एक कहावत है—"लोहे को लोहा काटता है।" शरीर में चेचक के कीटाणु बढ़ने की संभावना हो, तो इंजेक्शन द्वारा चेचक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के ही कीटाणु शरीर में प्रविष्ट कराए जाते हैं। यह कीटाणु रक्त के श्वेत कीटाणुओं के साथ मिल जाते हैं। श्वेत-कणों में चेचक के कीटाणुओं से लड़ने की शक्ति नहीं होती है। बंदूकधारी को बंदूकधारी ही मार सकता है। डाकू को पकड़ना हो तो बंदूक चलाने से लेकर खंदक में छुपकर बचाव आदि का समानांतर ज्ञान रखने वाला सिपाही ही लगाया जा सकता है। उसमें गाँव का निहत्था किसान सफल नहीं हो सकता। इंजेक्शन में दिए गए चेचक के कीटाणु अच्छे कीटाणुओं के साथ आगे बढ़कर अपने ही तरह के द्रोही कीटाणुओं को मार डालते हैं। उसी तरह हवन में जलाई गई औषधियाँ भी धुएँ के रूप में, प्रकाश-वर्षा के रूप में उठती और धुएँ के विषैले प्रभाव को नष्ट करती हुई मनुष्य शरीर, पशु-पक्षियों, वनस्पति सबको जीवन देती चली जाती हैं।

फ्रांस के विज्ञान वेत्ता प्रो० टिलबर्ट का कथन है कि, खाँड़ के धुएँ में वायु को शुद्ध करने की विलक्षण शक्ति है। चेचक के टीके के आविष्कारक डॉ० हेफकिन (फ्रांस) ने घी जलाकर परीक्षण किया और बताया कि—उससे रोग के कीटाणु नष्ट होते हैं। डॉ० टाइलिट ने किशमिश, मुनक्के इत्यादि सुखे मेवों के धुएँ के परीक्षण के बाद बताया कि—उस धुएँ में टाइफाइड के कीटाणु नष्ट करने की क्षमता होती है। जायफल जलाने से उसके तेल परमाणु १/१०००० से १/०००००००० से० मी० के व्यास तक के सूक्ष्म पाए गए, इनमें कार्बन के धुएँ के कणों में घुसकर उन्हें शुद्ध तत्त्वों में बदलने की क्षमता पाई गई। अँग्रेजी पत्र लीडर में "न्यू क्योर फॉर टी० बी० शीर्षक से हवन के धुएँ को बहुमूल्य औषधोचार के रूप में मानकर अमेरिकी वैज्ञानिकों को उस पर अनुसंधान करने का आवाहन किया गया है।

यज्ञ के लाभ अनंत हैं। उसके द्वारा मन और आत्मा पर पड़ने वाले प्रभाव को न भी मानें, तो भी अनुसंधान से यह तथ्य तो प्रकाश में लाए ही जा चुके हैं कि, यज्ञीय धूम्र में वायु के विषैले तत्त्वों को नष्ट करने की विलक्षण क्षमता है। इस विज्ञान की अब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपेक्षा नहीं की जा सकती। धुआँ जो मारता है उससे यह धुआँ ही मनुष्य जाति को बचा सकता है।

☆ अग्निहोत्र थेरेपी : अमेरिका में

अमेरिका के वाशिंगटन शहर में एक विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है। इसे वसंत वी० परांजपे ने स्थापित किया है। वे यज्ञ द्वारा खेतों में फसल के बढ़ने का प्रतिपादन करते हैं। रासायनिक खाद एवं कीटनाशक दवाओं से ऊबे अमेरिकनों को वे विकल्प के रूप में मंत्रोच्चार से दी गयी घी की आहुतियों का मार्ग सुझाते हैं। विश्वविद्यालय की यह मान्यता है कि, फसलों के सभी रोगों का रामबाण इलाज यज्ञ है। यज्ञ से फसल उत्पादन में वृद्धि की इस पद्धति को उन्होंने 'होम-थेरेपी-फार्मिंग' नाम दिया है।

खेतों में नियमित किए गए यज्ञ से पर्यावरण शुद्ध होता है एवं इससे पौधों में तेजी से बढ़ने व जमीन से अधिक शक्ति खींचने की सामर्थ्य आती है। इससे जो फसल होती है, वह स्वादिष्ट होती है। २०० एकड़ तक के खेतों में बीचों-बीच किए गए यज्ञ से पौधों की जड़ों का स्वरूप ही बदल जाता है। लंबाई में भले ही कोई फर्क न आए, उनकी जमीन से पोषक तत्त्व खींचने की सामर्थ्य में निश्चित ही वृद्धि होती है।

इसके लिए विश्वविद्यालय ने अपने खेतों पर ही प्रयोग किए हैं। निष्कर्ष यह निकाले गए हैं कि, यज्ञ करने से जमीन में नमी ज्यादा बनी रहती है। यदि पानी की सिंचाई के साथ स्नेह, श्रद्धा का पुट हो एवं मंत्रोच्चार भी किया जाए तो परिणाम और भी अच्छे होते हैं। श्री परांजपे के अनुसार पौधे भी स्नेह के भूखे हैं। यदि किसान अपनी फसल से प्यार करे, उन्हें पुचकारे, तो वे बीमार नहीं होते, अच्छा उत्पादन देते हैं।

यह सभी का अनुभव है कि, पौधों की बीमारियों के लिए प्रयुक्त कीटनाशक दवाओं से जमीन कमजोर होती है एवं फसल का उत्पादन भले ही बढ़ जाए, गुणवत्ता की दृष्टि से वह गौण ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होती है। इसी कारण कीटनाशक दवाओं के उपयोग पर अब पुनर्विचार किया जा रहा है। अग्निहोत्र विश्वविद्यालय कीटाणुओं के नाश के लिए यज्ञ की राख एवं गोबर की खाद का प्रचार कर रहा है। पानी में राख मिलाकर उसकी सिंचाई से पौधों की जीवनी शक्ति में वृद्धि होती है, जिससे वे कीटाणुओं से ठीक तरह लड़ पाते हैं। मंत्रोच्चार के साथ की गई सिंचाई पौधों की सामर्थ्य में और भी वृद्धि कर देती है। अग्निहोत्र विश्वविद्यालय के अनुसार ये मंत्र पौधों के लिए टॉनिक का काम करते हैं।

आज की फसलों की गिरती गुणवत्ता के पीछे वे पर्यावरण प्रदूषण को मुख्य कारण मानते हैं। इसीलिए यज्ञ की महत्ता भी प्रतिपादित करते हैं, जो पर्यावरण को शुद्ध करता है। धूमीकृत औषधियाँ, घी, धान हवा में मिलकर उसे शुद्ध करती हैं एवं फिर वर्षा के माध्यम से जमीन में पहुँचकर जड़ों का पोषण करती हैं। उनके अनुसार यज्ञ का धुआँ पहले पूरब की ओर उड़ता है व फिर घड़ी की तरह घूमता है। इसका प्रभाव आठ किलोमीटर की परिधि में होता है। इससे उन्हें विश्वास है कि, वे अमेरिका के दक्षिणी भाग में लगने वाले "अल्बीनो" नामक फसल नाशक कीड़े को समाप्त कर सकेंगे।

❒ ❒

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ध्वनि प्रदूषण और उसका समाधान

साधारण ध्वनि-तरंगें जो दिन भर लोग बोलते रहते हैं, वह अपने सूक्ष्म प्रभाव सहित तरंगित होती हुई हमारे मस्तिष्क को प्रभावित करती हैं और कोई कारण न होते हुए भी व्यग्रता, चिंता, व्यथा और परेशानी बढ़ती है, पर उससे भी अधिक विस्फोटक अब शोर की समस्या हो गई है। शोर ध्वनि-तरंगों से विलग वह वस्तु है, जो स्पष्ट प्रतिस्वन की सृष्टि करती है, उससे तत्काल मस्तिष्क में अप्रियता बढ़ती है। वैज्ञानिकों के अनुसार इन दिनों पृथ्वी पर जनसंख्या, शहर और सबसे अधिक यंत्रीकरण के कारण शोर की मात्रा इतनी अधिक बढ़ गई है कि प्रति व्यक्ति कई टन वजन इसी का बोझ डाले रहता है, उससे कोई शांत और शीतल प्रकृति का व्यक्ति भी प्रसन्न नहीं रह सकता।

डॉ० फेचनर ने ४० वर्ष तक ध्वनियों का गहन अध्ययन किया और यह पाया कि अब जो शोर बढ़ रहा है, उससे उत्तेजना बढ़ती है और शरीर के कोमलतम तंतुओं पर तीक्ष्ण प्रभाव पड़ता है। ध्वनि की उत्तेजना को उन्होंने 'डेसीबिल' नाम की इकाई से नापा भी और यह बताया कि शांत सड़कों में ५० डेसीबिल उत्तेजत्व रहता है, जबकि शोर-युक्त सड़कों में ७७.८० डेसीबिल। मोटरगाड़ियों में ब्रेक लगाने की ध्वनि से ७६, ध्वनि निरोधक यंत्र से सज्जित मोटर-साइकिलों में ६० और ऐसी ही मोटरों से १२० डेसीबिल शोर का प्रभाव श्रवण प्रणाली पर पड़ता है, उससे मस्तिष्क का विभ्रांत और अशांत रहना तो आवश्यक है ही, यह भी सिद्ध हो चुका है कि १६० डेसीबिल वाले शोर के कारण कान का परदा तक फट सकता है। १२०-१३० डेसीबिल शोर से आंशिक और यदि कुछ दिन तक यह क्रम बराबर बना रहे, तो व्यक्ति स्थायी रूप से भी बधिर हो सकता है। प्रत्येक अवस्था में ८०-१०० डेसीबिल से अधिक मात्रा का शोर श्रवण प्रणाली और मानसिक संवेदना के लिये घातक हो सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नोबल पुरस्कार प्राप्त जर्मन वैज्ञानिक ने ८८ वर्ष पूर्व ही शोर के खतरे के प्रति आगाह करते हुए कहा था—"एक समय ऐसा आएगा, जब शोर इंसान के स्वास्थ्य का सबसे बड़ा शत्रु बन जाएगा और बढ़ते शोर के विरुद्ध वैसा ही संघर्ष छेड़ना पड़ेगा जैसा चेचक और प्लेग जैसी बीमारियों के विरुद्ध छेड़ना पड़ा है।" वर्षों पूर्व की गई उनकी भविष्यवाणी सही सिद्ध हो रही है। आज वायु, जल तथा अन्य प्रदूषण के मुकाबले शोर को ज्यादा खतरनाक माना जा रहा है।

☆ कोलाहल से दूर—शांत एकांत की ओर

एक समय था जब दुनिया की जनसंख्या बहुत थोड़ी थी। शहर तब नाम मात्र को थे, अधिकांश लोग किसी जलाशय के किनारे कोई पर्णकुटीर बना लेते थे। उसी के आस-पास एक दो खेत तैयार कर लेते थे। बस उतने से ही मस्ती का जीवन बीतता था। तब के जीवन में बड़ी शांति और सरलता थी।

आबादी बढ़ी और छोटे-छोटे घर गाँव बन गए। शहरों की तो गणना में ही काफी दिन लग सकते हैं, फिर कई शहरों की जनसंख्या तो किसी-किसी जिले के बराबर होती है। सघन आबादी से पर्यावरण प्रदूषित होता ही है और उसका जनस्वास्थ्य और शांति-व्यवस्था पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता।

प्रारंभिक और विकासशील बाल्यावस्था को इन बुराइयों से, जो बहुलजन क्षेत्र में संभव है, बचाने के लिए ही प्राचीनकाल में गुरुकुलों की स्थापना हुई थी, लेकिन तब लोगों के जीवन लक्ष्य महान् आध्यात्मिक हुआ करते थे, इसलिए भी लोग एकांत की व्यवस्था बनाया करते थे। एकांत में न केवल आत्मशांति मिलती है, वरन् सात्त्विक विचार उठते हैं, आत्मचिंतन होता है। वाणी संयम के कारण चित्तवृत्ति अंतर्मुखी हो जाती है और आध्यात्मिक लक्ष्य और सरल हो जाता है। इसलिए तब एक समय निश्चित रूप से लोग एकांतवास किया करते थे, गृहस्थ आश्रम के बाद

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

थोड़ा–थोड़ा एकांत का अभ्यास किया जाता था, पर चौथे चरण में तो नितांत एकांतवासी हो जाया जाता था।

यह व्यवस्था प्राचीनकाल में जितनी उपयोगी थी, आज उससे दो गुना अधिक आवश्यक हो गई है, क्योंकि अब न तो ग्रामीण, न शहरी क्षेत्र इस योग्य रहे कि मनुष्य शांति से रह सके।

प्रसिद्ध मनोविज्ञानशास्त्री पास्कल का कथन है कि शोर श्रवणप्रणाली को ही नहीं प्रभावित करता, वरन वह मस्तिष्क में भी कुप्रभाव छोड़ता है, जिससे सारे शरीर पर दूषित तत्त्व सक्रिय हो उठते हैं। हमारी चिंतन–धारा में मुख्य बाधा भी यह शहरी शोर है, जिसके कारण मनुष्य अपने कल्याण की भी बात अच्छी तरह सोच नहीं पाता।

यंत्रीकरण के कारण आज जन–जीवन में शोर का जो दबाव पड़ रहा है, उसकी सियेना विश्वविद्यालय इटली के इंस्टीट्यूट ऑफ हाइजिन के प्रोफेसर टिजानो ने विस्तृत व्याख्या की है। शोर के प्राणिशास्त्रीय प्रभाव की उन्होंने बहुत आवश्यक विवेचना की और लोगों को सावधान किया है कि यदि आज के यांत्रिक मनुष्य ने एकांत–शांति की व्यवस्था न की, तो उसका भावी प्रजा पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। बड़ी चिड़चिड़ी, क्रोधी, अशिष्ट, फूहड़ और दुराचारी आत्माएँ जन्म लेंगी या यों कह सकते हैं कि इस दुष्प्रभाव के कारण आने वाली पीढ़ी में इन दुर्गुणों का स्वयमेव विकास होता जाएगा।

उनका कहना है–"यही नहीं कि शोर केवल श्रवण यंत्रों को ही खराब करते हैं, वरन मस्तिष्क जिससे सारा शरीर का क्रिया–व्यापार चलता है, प्रभावित होता है। उसका ही परिणाम है कि लोगों की कार्यक्षमता तेजी से घट रही है। स्नायविक तनाव और रक्तचाप बढ़ रहा है।"

उन्होंने कई औद्योगिक प्रतिष्ठानों के श्रमिकों का मानसिक अध्ययन किया और यह निष्कर्ष पाया कि मिल–कारखानों में काम करने वाला प्रत्येक मजदूर जब प्रातःकाल सोकर उठता है, तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

काम में कठिनाई अनुभव करता है। उसके कानों में २० मिनट तक भनभनाहट गूँजती रहती है। मानसिक और शारीरिक थकान अनुभव होती है। उसे लगता है, मस्तिष्क में कुछ भर गया है। कुछ दिन में यद्यपि वह अभ्यास में आ जाता है, किंतु श्रवण प्रणाली को क्रमिक क्षति पहुँचती रहती है। मानसिक उद्वेग के कारण पारिवारिक झंझट, क्लेश, चिंता और वासनाएँ भड़कती हैं। फिर वह शांति की खोज के लिए भटकता है, पर जो साधन हाथ लगते हैं, जैसे सिनेमा, शराब, संभोग वह और भी उसकी दुर्दशा करने वाले सिद्ध होते हैं।

जिन शहरों में यांत्रिक शोर की अधिकता है, वहाँ श्रवण-शक्ति की कमजोरी और इस तरह से व्यग्र व्यक्तियों की अधिकता होती है। वहाँ अपराध भी बहुत अधिक होते हैं, क्योंकि आत्म शांति के लिये जिस कोलाहल से उन्मुक्त वातावरण की आवश्यकता होती है, वह उन्हें बिलकुल नहीं मिल पाता। कुछ बड़े आदमियों के बँगले और बगीचे ऐसे होते हैं कि, वे कुछ समय एकांत का लाभ पा लेते हैं और अपनी कार्यक्षमता और स्नायविक तेजस्विता को बनाए रखते हैं, पर मानसिक प्रभाव से वे भी मुक्त नहीं रह सकते, क्योंकि ध्वनि-तरंगों की तरह यह शोरगुल भी महापुरुषों के मुखमंडल पर व्याप्त औरों की तरह उस शहर के बाहरी क्षेत्र तक को भी कई-कई मील तक प्रभावित किए रहता है।

ऐसी अवस्था में उस युग की याद आती है, जब लोगों की जीवनव्यवस्था ऐसी रहती थी कि, कुछ समय एकांत सेवन के लिए निकल आता था। ऐसे पीठ, संस्थान तथा क्षेत्र होते थे, जहाँ जाकर लोग कम से कम जीवन के अंतिम चरण में तो मुक्त चिंतन और आत्म शांति पाते थे। आज उसकी सर्वाधिक आवश्यकता अनुभव हो रही है। विद्यालय और शिक्षण संस्थानों को तो शहर से हटाकर वन्य-प्रदेशों में रखना ही चाहिए, साथ ही कुछ क्षण निकालकर ऐसे स्थानों की यात्रा भी करनी चाहिए, जहाँ कुछ समय मानसिक शांति पाई जा सके। तीर्थयात्रा का यह महत्त्व अब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पहले की अपेक्षा बहुत अधिक हैं, यदि ऐसे सुरम्य और सुरक्षित एकांत स्थान उपलब्ध हो सकें।

ऐसे स्थानों में हिमालय के उत्तराखंड भाग का महत्त्व सर्वाधिक है। यह आदिकाल से भारतवर्ष की साधना स्थली रही है। ऋषि-महर्षियों से लेकर अनेक साधु-वानप्रस्थों ने यहाँ आकर तपस्याएँ की और साधना के तेजस्वी कण बिखेरे। उनका लाभ वहाँ पहुँचने वाले को अनायास ही मिल जाता है।

प्राकृतिक दृष्टि से यह स्थान अत्यंत शीतल, सुरम्य और मनोहर दृश्यों से परिपूर्ण है। यही एक स्थान ऐसा शेष बचा है, जो अभी तक जन-कोलाहल से पर्याप्त अंश में बचा हुआ है। दूसरे वहाँ पर उठने वाली युग-युगांतरों की प्रबल आध्यात्मिक विचार-तरंगे, इतनी शक्तिशाली हैं कि, वे बाहर से पहुँचने वाले शोर और ध्वनि-तरंगों को दबा देती हैं और अपने प्रभाव को निरंतर बनाए रखती हैं।

हरिद्वार से आरंभ 'हिमालय हृदय' का यह सौ कोस लंबा और तीस कोस चौड़ा स्थान तमसा नदी के बौद्धांचल तक फैला है, पंच-केदार, पंच-बदरी, यमुनोत्री और गंगोत्री आदि प्रमुख तीर्थस्थल हैं, अनेकों हिम स्रोत, तप्तकुंड और गरम जलधाराओं से युक्त यह स्थान मन को अत्यंत शीतलता और शरीर को ताजगी प्रदान करने वाला है। पर्वत-शिखरों, नदियों, घाटियों, प्रपातों-स्रोतों, वनों से आच्छादित बद्री क्षेत्र को 'पुष्पों की घाटी' कहते हैं। उसकी प्राकृतिक सुषमा की तुलना विश्व का कोई भी पुष्प-उद्यान नहीं कर सकता। जो भी उस सुरम्य तपोभूमि के एक बार दर्शन कर लेता है, उस पर जादू का-सा प्रभाव पड़ता है, वहाँ से लौटने का मन नहीं करता।

स्वास्थ्य की दृष्टि से इस स्थान का महत्त्व बहुत अधिक है। यहाँ की प्रत्येक लता-वनस्पति मानों प्राण और शक्तिदायक औषधियाँ हैं। गंगा तो अमृत ही है। महर्षि चरक ने—**'हिमवत्प्रभवा पथ्या'** हिम से आया हुआ जल पथ्य है, कहकर उसकी प्रशंसा की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। महाभारत अनुशासन पर्व में गंगा माता को 'पयस्विनीं घृतिनीं मृत्युदारा'—(२६।८२) कहा। अर्थात्—गंगा दुग्ध के समान उज्ज्वल, घृत के समान स्निग्ध जल से भरी है। गंगा का जल स्वादयुक्त, स्वच्छ, पथ्य, भोजन पचाने योग्य पाचक, प्यास, शामक, क्षुधा और बुद्धिवर्द्धक माना गया है।

शीतं स्वादु स्वच्छमत्यंतरुच्यं
पथ्यं पाच्यं पाचनं पापहारी।
तृष्णामोहध्वंसनं दीपनं च
प्रज्ञां धत्ते वारि भागीरथीयम्।

इसके अतिरिक्त—

शरीरे जर्जरीभूते व्याधिग्रस्ते कलेवरे।
औषधं जाह्नवीतोयं वैद्यो नारायणो हरिः।।

अर्थात्—गंगा का उक्त गुणों वाला जल तारुण्य को बनाए रखने वाला है, वृद्धावस्था के रोगों का नाश करने वाला साक्षात् औषधि की तरह है।

ऋषियों की तपोभूमि यह गंगा तटवर्ती क्षेत्र हिमालय की मर्मस्थली ही रही है। यहाँ रहकर आत्मिक तत्त्वज्ञान और वर्चस् का अनुसंधान उन्होंने किया है। आज भी उस भूमि का अपना महत्त्व है। आज के इस कोलाहल और अशांति भरे वातावरण में शांत-एकांत स्थलों का महत्त्व है। शहरी शोर से बचकर इस दिव्य वातावरण में रहकर शारीरिक उत्साह, मानसिक उल्लास और आध्यात्मिक विकास के मार्ग पर अधिक सुविधापूर्वक चला जा सकता है।

☆ शब्द शक्ति में निहित अपरिमित संभावनाएँ

शब्द के बारे में सर्वजनीन जानकारी बहुत ही कम है। पर्यावरण को शब्द शक्ति जितना प्रभावित करती है—संभवतः अन्य कोई घटक इतना ज्यादा प्रभावित नहीं करता, पर सामान्यतः

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इतना ही समझा जाता है कि, परस्पर विचारों का आदान-प्रदान करने में वार्तालाप के रूप में शब्द का उपयोग होता है या फिर प्रकृति की, प्राणियों की, यंत्र वाहनों की हलचलों से शोर कोलाहल होता रहता है।

सृष्टि का आरंभ कैसे हुआ ? इस संबंध में तत्त्वज्ञान का प्रतिपादन है कि सर्वप्रथम प्रकृति और पुरुष के मिलन में घड़ियाल पर हथौड़ी की चोट पड़ने पर उत्पन्न होने वाली झनझनाहट सहित ॐकार जैसा ध्वनि प्रवाह उत्पन्न हुआ। उससे प्रकृति में हलचल उत्पन्न हुई। गतिशीलता ने छोटे-बड़े पिंड गोलक बनाए और फिर उत्पादन, अभिवर्द्धन और परिवर्तन का चक्र चल पड़ा। इस प्रकार सृष्टि की उत्पत्ति शब्द से ठहरी।

वैज्ञानिक पदार्थ की गहरी खोजबीन करते हुए अब बहुत आगे बढ़ गए हैं। कभी पदार्थ की सबसे छोटी इकाई परमाणु थी। फिर परिवार परिकर का मध्यवर्ती 'नाभिक' को वह श्रेय मिला। बाद में शक्ति तरंगें प्रमुख मानी गईं और कहा गया कि, इन तरंगों का समुच्चय ही परमाणु है। अस्तु, तरंगें प्रमुख हैं। तरंगों में शब्द, प्रकाश और ताप को तीन विभागों में विभाजित किया। अंततः अब उन तीनों में प्रमुख शब्द होने की मान्यता अग्रणी है और इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा रहा है कि, यह प्रकृति विस्तार फलतः शब्द तत्त्व की परिणति है।

योगाभ्यास में नाद ब्रह्म, शब्द ब्रह्म, सुरति योग, स्वरयोग, मंत्रयोग, लययोग आदि के माध्यम से शब्दसाधना की प्रमुखता दी गई है। मंत्र-विज्ञान का समूचा आधार ही ध्वनि-शक्ति के विभिन्न उपयोगों, उपचारों, निर्धारणों पर ही ठहरा हुआ है। मंत्रों की संरचना में भाषा विज्ञान और व्याकरण अनुबंधों का उतना ध्यान नहीं रखा गया है, जितना कि अक्षरों के पारस्परिक गुंथन-क्रम के आधार पर उत्पन्न होने वाले ध्वनि प्रवाह के स्तर एवं प्रभाव का। गायत्री मंत्र की प्रमुखता न उसके अर्थ पर निर्भर है और न व्याकरणशास्त्र की दृष्टि से उसकी परख की गई है, बल्कि उसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उच्चारण क्रम में ही वह विशेषता है, जिसके आधार पर अंतराल के प्रसुप्त चक्रों-उपत्यकाओं को जगाने का उद्देश्य पूरा होता है। अदृश्य जगत् की हलचलों पर भी उसका प्रभाव पड़ता है। ऐसे-ऐसे रहस्यमय कारण ही मंत्र-विज्ञान की आधारशिला हैं।

शब्द-शक्ति का उपयोग अब विज्ञान के क्षेत्र में बढ़-चढ़कर होने लगा है। यंत्र मानव (रोबोट) शब्द को समझता है, उसका उत्तर देता है तथा आदेशानुसार हलचल करने लगता है। कंप्यूटर्स अब शब्दों के द्वारा संचालित किए जा सकते हैं। अंतरिक्ष को सबसे अधिक प्रभावित करने वाली रेडियो तरंगों तथा लैसर किरणों के मूल तत्त्व को अब शल्यपरक माना गया है। उनकी प्रत्यक्ष क्षमता, शब्द मूलक मानी गई है। भले ही वे अपन्न-प्रभाव ऊर्जा के रूप में प्रकट करती हो।

प्राचीन काल में मंत्र-शक्ति का शब्द-शक्ति का प्रयोग विभिन्न प्रकार की ऊर्जाएँ उत्पन्न करने तथा प्रकृति प्रयोजनों के लिए उपयुक्त माध्यम माना गया था। यह उत्पादन में सरल-सस्ती होने के कारण प्रभावक्षेत्र में भी अद्‌भुत-अद्वितीय है। अन्य प्रकार की ऊर्जाएँ उत्पन्न करने के लिए महँगे उपकरण चाहिए, साथ ही बहुमूल्य ईंधन भी प्रचुर परिणाम में हो। ईंधन चुक सकता है। उपकरण घिसते-बिगड़ते रहते हैं, जबकि शब्द मानव शरीर की प्रयोगशाला में ही अभीष्ट स्तर एवं क्षमता के उत्पन्न किए जा सकते हैं। समझा जाना चाहिए कि—मनुष्य शरीर ऐसा अद्‌भुत यंत्र उपकरण है, जिसमें प्रकृति जगत् और चेतना जगत् से प्रभावित करने, संपर्क साधने और आदान-प्रदान के लिए आवश्यक क्षमता अभीष्ट परिणाम में विद्यमान है। यही कारण है कि योग और तप द्वारा शरीरयंत्र और मनःतंत्र का इस प्रकार परिशोधन—परिष्कार किया जाता है कि, उससे उपयुक्त ध्वनि प्रवाह उत्पन्न किए जा सकें और मंत्र-विद्या से प्रतिपादित लाभ उठाए जा सकें।

शब्द-विद्या का सामान्य उपयोग भी कम नहीं है। उसमें पदार्थों और प्राणियों को प्रभावित करने की अद्‌भुत क्षमता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विद्यमान है। गद्य का उपयोग प्रवचन-परामर्श, वार्तालाप आदि में होता ही रहता है। पद्य की क्षमता उससे भी बढ़कर है।

संगीत में ताल और लय का उपयोग होता है। इन दोनों के समुच्चय को ही स्वरविज्ञान कहते हैं। थपकी ताल कहलाती है और अलाप को स्वर कहते हैं। यों दोनों के मिलन से, समान संगीत बनता है, पर उनका पृथक्-पृथक् उपयोग भी है। यह बात सामान्य गायन-वादन के संबंध में प्रत्यक्ष है। संगीत के द्वारा रोग निवारण, भावनात्मक अभ्युदय, उत्साह संवर्द्धन, प्राणि विकास, वनस्पति उन्नयन, जैसे काम लिए जाने लगे हैं। संगीत मात्र मनोविनोद की सीमा तक ही सीमित नहीं है। उसके माध्यम से मनःक्षेत्र में आनंद-उल्लास उत्पन्न किया और संवेदनाओं को भाव तरंगों के साथ जोड़ते हुए, मनुष्य को आनंद विभोर किया जा सकता है। अन्य प्राणियों पर तथा प्रवृत्ति-प्रवाह पर भी यह उपचार अपना असाधारण प्रभाव छोड़ता है।

संगीत-शास्त्र में ध्वनि-प्रवाह के अनेकानेक प्रभावों का उल्लेख है। बुझे हुए दीपकों को जला देने वाला दीपक-राग, बादलों को बरसने के लिए विवश करने वाला मेघ-मल्हार, हिरन को स्तब्ध कर देने वाली गजगति, साँपों को लहरा देने वाला मोहन राग, मदोन्मत्त हाथियों को वश में करने वाला राग शंकर, सूखे पेड़ों को हरा करने वाला श्री राग—किस प्रकार अपना प्रभाव उत्पन्न करता है, इसका वर्णन मिलता है। लोक व्यवहार में मधुर वचनों की अनुकूल और कटुवचनों की प्रतिकूल प्रतिक्रिया का प्रत्यक्ष प्रमाण, हर किसी को अपने इर्द-गिर्द ही मिल सकता है। अब विज्ञान ने इस ओर ध्यान देना आरंभ किया है, तो यह संभावना अधिकाधिक स्पष्ट होती जा रही है कि—संगीत का, शब्द-शक्ति का महत्त्व प्रकृति की अन्यान्य सामर्थ्यों से किसी भी प्रकार कम नहीं है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ध्वनि विज्ञानियों का कहना है कि—यदि किसी नर्तकी की पायल की ध्वनि, लय-ताल से बंधकर एक प्रवाह में बहने लगे, तो इतने भर से नृत्य का बड़ा हाल नीचे ढह सकता है।

स्नायविक रोगों तथा मानसिक विक्षेपों में संगीत के विशेष ध्वनि-प्रवाहों के माध्यम से चिकित्सा का एक नया प्रचलन इन्हीं दिनों चला है और बहुत सफल हुआ है। शोक, क्रोध, उद्वेग, तनाव, रक्तचाप आदि को शांत करने में भी उससे बड़ी सहायता मिलती देखी गई है। संभावना व्यक्त की जा रही है कि—अन्यान्य चिकित्सा पद्धतियों की तरह अगले दिनों संगीत उपचार भी उभरकर आवेगा और जन स्वास्थ्य के संरक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका संपन्न करेगा।

इसके अतिरिक्त उसका प्रभाव पशु-पक्षियों को उल्लसित एवं वृक्ष-वनस्पतियों को अधिक विकसित करने की दृष्टि से भी बहुत लाभदायक पाया गया है। दुधारू पशु अधिक दूध देने लगे। बैल, घोड़े बिना थके अधिक परिश्रम करने में समर्थ रहे। मुर्गियों और मछलियों ने अधिक अंडे-बच्चे दिए। डरते रहने और असहयोग करने वाले अन्य प्राणी इस आधार पर नरम पड़े और मनुष्य के अधिक निकट आए। इस आधार पर हिंस्र पशुओं को भी किसी हद तक सौम्य बनाने में सफलता मिली है। सरकस वाले अब पशुओं को कलाकार बनाने के लिए साधने में मात्र हंटर या लालच का ही उपयोग नहीं करते, वरन् संगीत का सम्मोहन चलाकर भी चक्रवर्ती बनाने का एक नया उपाय अपनाने लगे हैं। यह प्रयोग वृक्ष-वनस्पतियों पर भी बहुत प्रभावकारी सिद्ध हुआ है।

वेस्टविल अमेरिका की कृषि प्रयोगशाला में ऐसे परीक्षण हुए हैं, जिनमें संगीत के प्रभाव से खेती की फसलों को अधिक फैलने तथा फूलने-फलने वाली बनाने में सफलता प्राप्त की गई है। इस संबंध में विस्कोन्सिन के आर्थर लाके के प्रयोगों की उस देश के वनस्पति विशेषज्ञों में बहुत चर्चा है। उसने फूलों को जल्दी तथा भारी बनाने में इसी आधार पर सफलता पाई। जिन खेतों को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संगीत सुनाए गए, वे अधिक समुन्नत हुए और जिन्हें इससे वंचित रखा गया, वे खाद-पानी की दृष्टि से समान लाभ प्राप्त करने पर भी पिछड़े रह गए।

संगीत मनुष्यों की तरह पेड़-पौधों को भी पसंद है। सुनियोजित संगीत-तरंगों से वे प्रसन्न व पुलकित होते हैं और उत्साह भरे वातावरण में अधिक जल्दी अच्छा विकास करने लगते हैं। ब्रिटिश विज्ञानी जार्ज मिलसटान इस संदर्भ में अधिक रुचि लेते रहे हैं। उन्होंने सिद्ध किया है कि, संगीत में पौधों को भी उल्लसित करने की क्षमता है। न्यूयार्क के डॉक्टर डारोवो रेटालक ने रुग्ण वृक्षों की चिकित्सा में संगीत की ध्वनि लहरों का उपयोग किया है और कहा है कि—जिनका भविष्य संदिग्ध हो रहा था, जिन्हें रुग्ण समझा जा रहा था, ऐसे पौधों को भी संगीत चिकित्सा के माध्यम से रोग मुक्त किया और नया जीवन दिया गया।

वनस्पतियों पर संगीत के प्रभाव के संबंध में महाकौशल महाविद्यालय के रसायन शास्त्री प्रो० गोरे ने लंबे समय तक परीक्षण करने के बाद अपना मत यही बनाया है कि, जिस प्रकार मनुष्यों को संगीत प्रिय है, उसी प्रकार उसके द्वारा वनस्पति को भी उल्लसित ही नहीं, बल्कि विकसित भी किया जा सकता है।

लंदन विश्वविद्यालय के एक वनस्पति इंजीनियर जेम्स स्मिथ ने पौधों के साथ किए गए दुर्व्यवहार और सद्व्यवहार की प्रतिक्रियाओं को जानने के लिए लंबी अवधि तक अनेक क्षेत्र-उद्यानों में विभिन्न प्रकार के पर्यवेक्षण किए हैं। उनने पाया है कि—वनस्पतियाँ प्रताड़ना तथा प्रतिकूलता उत्पन्न करने से खिन्न होती हैं। उनके यह मनोभाव कुम्हलाने, मुरझाने के रूप में देखा गया। इसी प्रकार खाद, पानी, ऋतु प्रभाव की तरह वे सज्जनोचित व्यवहार से भी पोषण प्राप्त करती, बढ़ती और सुखी रहती पाई गई हैं। हँसी-खुशी का वातावरण जिस प्रकार मनुष्यों को पसंद है, वैसा ही अनुभव पेड़-पौधे भी करते हैं। शोक-संताप जहाँ छाया रहता है, वहाँ पौधे भी दुःखी, निराश एवं कुरूप-कठोर स्थिति में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहते हैं। श्मशानों, कसाईघरों के नए और तेजी से बढ़ने वाले पौधों की विकास-गति अपेक्षाकृत अधिक मंद और असंतोषजनक पाई गई है।

वनस्पति विज्ञानियों का यह मत बनता जाता है कि, संगीत की प्रतिक्रिया पौधों पर स्नेह, सद्भाव जैसी होती है। वे गायन-वादन से प्रसन्न होते, उत्साहित रहते और जल्दी बढ़ते तथा फूलते-फलते हैं।

शब्द तत्त्व असाधारण क्षमताओं एवं संभावनाओं से भरापूरा है, उसका रहस्य समझा जा सके और उपयोग सीखा जा सके, तो मनुष्य के हाथ सामर्थ्य का विशिष्ट स्रोत हाथ लग सकता है। प्राचीन काल की तरह इस सामर्थ्य की शोध में संलग्न होकर उज्ज्वल भविष्य की एक नई संभावना को हस्तगत किया जा सकता है।

शब्द-शक्ति के अनेकों प्रयोग हैं। जिह्वा से उच्चारण से लेकर वक्तृता तक, संगीत से लेकर नादयोग तक ऐसे अनेकों पक्ष इसके हैं, जिनका सुनियोजित उपयोग कर स्वयं को, वातावरण को एवं अन्यान्य प्राणियों को लाभान्वित किया जा सकता है। यही नहीं, शब्द-शक्ति में जिस सूक्ष्मीकृत वाक् ऊर्जा का प्रयोग होता है, वह तथा यज्ञाग्नि में प्रयुक्त ऊर्जा दोनों मिलकर एक और समर्थ शक्ति को जन्म देते हैं। इस सारे ज्ञान-विज्ञान का ऊहापोह इस छोटे-से लेख में संभव नहीं है।

❑ ❑

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्यात्म उपचार द्वारा पर्यावरण परिशोधन

वातावरण जिसमें हम रहते हैं, चेतनात्मक है। मनोविज्ञानी, पाश्चात्य मनीषी भी स्वीकारने लगे हैं कि—पर्यावरण का प्रभाव न केवल स्वास्थ्य पर, बल्कि मानव के मन-विचारों तक को प्रभावित करता है। भारतीय ऋषियों का तो कहना है कि परिस्थिति ही मनःस्थिति को प्रभावित नहीं करती बल्कि मनःस्थिति भी परिस्थिति को प्रभावित करती है। तात्पर्य यह है कि, लोकचिंतन व विचार प्रवाह न केवल अदृश्य वातावरण को प्रभावित करता है बल्कि स्थूल पर्यावरण पर भी उसका कम प्रभाव नहीं होता। अध्यात्म प्रयोगों द्वारा अदृश्य का अनुकूलन संभव है। सूक्ष्मदर्शियों का कहना है कि, स्वतंत्रता संग्राम में न केवल नरम-गरम दल के नेता और शहीदों का योगदान रहा है, बल्कि महर्षि रमण, अरविंद, विवेकानंद आदि के आध्यात्मिक प्रयास भी उतने ही महत्त्वपूर्ण रहे थे।

वास्तव में देखा जाए, तो आज तक की गई भौतिक प्रगति, सुख-सुविधाओं, साधनों से भरे पूरे संसार के लिए केवल और केवल मानव समुदाय द्वारा इस क्षेत्र में किया गया कठोर श्रम ही जिम्मेदार है। मनुष्य ही है—वह संसार का सिरमौर प्राणी, जिसने जब भी—जिस किसी क्षेत्र में अपने सोचने-समझने और काम करने की क्षमता का उपयोग किया, तो उसे सफलता मिलकर रही। उसकी संकल्प भरी साहसिकता के सामने न कभी कोई अवरोध टिक सका और न कभी टिक सकेगा।

परंतु आज वर्तमान में पर्यावरण पर नजर डालें, तो पता चलेगा कि, हमारे अपने ही अग्रजों ने ज्यादा पाने-बटोरने की हवस में मुरगी का पेट ही फाड़ दिया। अपनी माँ जैसी प्रकृति के चीथड़े कर दिए। उन्हें मालूम है कि, हम अपने बच्चों को कूड़े-कचरे और गंदगी से भरी पृथ्वी माँ की गोद देने वाले हैं, फिर भी क्या करें ? लाचार हैं—अपनी वहसियत से, हैवानियत से, स्वार्थ से, ज्यादा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बटोरने की आदत से, आरामतलबी से। उन्हें मालूम है कि—वे तो 'पी' के मरेंगे ही, साथ ही अपनों को—अपने बच्चों, पत्नी, माँ, पिता, परिवार के सभी को बिना 'पिये' मरने पर आलीशान घर छोड़ जाएँगे—पर करें क्या ? अपने हाथों ही अपने परिजनों को मौत की नींद सुला देने के लिए जिम्मेदार "हम मनुष्य" संभलें तो कैसे ? चेतें तो कैसे ?

उपाय है, जिसे हम सभी जानते तो हैं, पर आज तक उपयोग में, अभ्यास में लाए नहीं हैं। हर परिस्थिति और मनःस्थिति के लिए जिम्मेदार यदि हम ही हैं—यदि मनुष्य ही है, तो क्यों न इस मूल कारण का ही वास्तविक समाधान कर लिया जाए। कैसे ? मानवीय व्यक्तित्व से संबंधित विज्ञान और अध्यात्म-विज्ञान के प्रयोग द्वारा।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

☆ पर्यावरण संरक्षण में आस्तिकता का योगदान

जन्म-जन्मांतरों के संचित कुसंस्कारों का प्रभाव, अभ्यास मनुष्य जीवन में भी बना रहता है, निम्न योनियों का स्वभाव जड़ जमाए बैठा रहता है और मानवी प्रवृत्तियों को अभ्यास में सम्मिलित करने के मार्ग में अनेकांनेक बाधाएँ उपस्थित करता है। पानी का स्वभाव नीचे की ओर बहना है। गुरुत्वाकर्षण शक्ति किसी भी वस्तु को अवसर मिलते ही नीचे खींच लेती है। ठोस पदार्थों को नीचे की ओर गिरने और प्रवाहों की ओर बहने में तनिक भी कठिनाई नहीं होती, पर जब उन्हें ऊपर उठाना या बहाना होता है, तो साधन जुटाने और प्रयत्न करने पड़ते हैं। मन की प्रवृत्ति भी ऐसी ही है। उसकी मरजी चलने दी जाए, तो फिर नर-पशुओं और नर-कीटकों से अधिक उपयुक्त चिंतन और आचरण बन पड़ना संभव नहीं हो सकता। क्रोध सहज है, स्नेह कठिन। क्रोध बिना किसी प्रशिक्षण के आरंभ से ही प्रकट होने लगता है; पर प्रेम को स्वभाव का अंग बनाने के लिए सुसंस्कारी वातावरण और तद्नुरूप अभ्यास की आवश्यकता पड़ती है। ईर्ष्या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और अपहरण, अहंता और आक्रमण, वासना और आधिपत्य का आचरण करते हुए सभी प्राणी पाए जाते हैं, मनुष्य भी। किंतु संयम और सद्भाव को जीवन-क्रम में सम्मिलित करने के लिए सभ्यता और संस्कृति को, धर्म और अध्यात्म को गले उतारना कितना कठिन पड़ता है, यह किसी से छिपा नहीं है। यौनाचार की पूर्ति हर प्राणी बिना किसी प्रशिक्षण के संचित अभ्यास के आधार पर स्वयमेव करने लगता है, किंतु ब्रह्मचर्यपालन के तत्त्व ज्ञान को हृदयंगम कराने से लेकर तपसाधन करने तक के उपाय-अभ्यास अपनाने होते हैं। वस्तुस्थिति देखते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचने में किसी को कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए कि—पतन सरल और उत्थान कठिन है। इस कठिनाई को पार करना ही परम पुरुषार्थ कहलाता है। अनेकानेक साधन-विधानों का आविर्भाव इसी दृष्टि से हुआ है।

उत्कृष्टता की धुरी आस्तिकता है। यों विकृतियों के घुस पड़ने से मध्यकाल के अंधकार युग में इस क्षेत्र की दुर्गति भी कम नहीं हुई है। इतने पर भी तथ्य और सत्य अपने स्थान पर अडिग है। आस्तिकता को आस्था में सम्मिलित किए बिना आत्मिक प्रगति का आधार बनता नहीं। दार्शनिक पर्यवेक्षण करने पर आदर्शवादिता और आस्तिकता एक ही तथ्य के दो पक्ष हैं। उच्चस्तरीय आदर्शों का समुच्चय ही ईश्वर का वह स्वरूप है, जिसकी उपासना की जाती है। परब्रह्म तो नियामक सत्ता भी है, सृष्टि प्रवाह को सुव्यवस्थित रीति से चलाने के अतिरिक्त मानवीय चेतना को वह उच्चस्तरीय चिंतन और चरित्र अपनाने के लिए बाधित करती है। इसी को अंतःप्रेरणा या ईश्वर की वाणी कहते हैं। कर्मफल के दंड-पुरस्कार की विधि-व्यवस्था परब्रह्म के द्वारा संचालित होती है, किंतु मानवीय गरिमा विशुद्ध रूप से आस्तिकता के तत्त्व ज्ञान से जुड़ी हुई है। आस्तिकता के अनेक स्वरूप हैं। उनमें से एक ईश्वर-उपासना का अवलंबन लेकर पर्यावरण में व्याप्त चेतना के दिव्य परतों को सुविकसित और सशक्त बनाना भी है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आस्तिकता एक आस्था-दर्शन है और उपासना उसे परिपक्व करने का प्रयोग-अभ्यास। दोनों का परस्पर अन्योन्याश्रय संबंध है। दर्शन एक कल्पना है। उसका परिणाम तभी निकलता है—जब वह अभ्यास में उतरे। आस्तिकता में मात्र ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार कर लेने जितना छोटा उद्देश्य सन्निहित नहीं है, वरन् तथ्य यह है कि ईश्वर को उत्कृष्टता एवं आदर्शवादिता का समुच्चय मानना होता है और उसे चिंतन एवं चरित्र का अविच्छिन्न अंग बनाकर तादात्म्य स्थापित करना ही होता है।

भक्ति का अर्थ है—प्यार भरी सेवा। संक्षेप में इसे आत्मीयता एवं उदारता का समन्वय कह सकते हैं। ईश्वर भक्ति का अर्थ होता है—आदर्शों के प्रति असीम प्यार। असीम का तात्पर्य है इतना प्रबल कि उसे क्रियान्वित किए बिना रहा न जा सके। ईश्वर भक्ति को समर्पण योग भी कहते हैं। शरणागति, लय आदि कई नामों से इस स्थिति का उल्लेख किया जाता है। इसका व्यावहारिक स्वरूप है—अहंता को, स्वार्थपरता को भूल जाना। वैयक्तिक महत्त्वाकांक्षाओं को विसर्जित करके आदर्शवादी, सामूहिक महत्वाकांक्षाओं में रस लेना। इसी तत्त्व दर्शन को आस्था क्षेत्र में गहराई तक प्रतिस्थापित करने के लिए उपासना परक अभ्यास किए जा सकते हैं। यह आत्मोत्कर्ष के, भाव-विज्ञान के अनुरूप अत्यंत महत्त्वपूर्ण प्रयोग तो है ही, साथ ही पर्यावरण संरक्षण में भी इसका प्रभावशाली योगदान रहता है।

आत्मा की उत्कृष्टतम स्थिति को ही परमात्मा कहते हैं। पुरुष से पुरुषोत्तम—नर से नारायण बनने का अभ्यास ही उपासना है। इसमें ईश्वर को व्यक्ति बनाने का नहीं, व्यक्ति को ईश्वर, अति मानव बनाने और अति मानस को प्रखर करने का प्रयोग है। सच्ची उपासना लघु को विभु, क्षुद्र को महान् बनाती एवं कामना को भावना में विकसित करती है। मनोकामना पूर्ति के लिए ईश्वर का मनुहार करना—बाल-कक्षा के विद्यार्थियों जैसा ही सीमित रहना है। आत्मिक प्रौढ़ता की स्थिति आते ही ईश्वर का स्वरूप उत्कृष्ट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आस्थाओं और आदर्शवादी भाव–संवेदनाओं का समुच्चय बन जाता है।

ईश्वर भक्ति और आदर्शों के लिए समर्पित व्यक्तित्व परस्पर पर्यायवाचक बन जाते हैं। इसी स्थिति को प्राप्त करने के लिए भावनात्मक अभ्यासों की चिरपरिचित प्रणाली को उपासना कहते हैं। इसी अवलंबन का आश्रय लेकर प्राचीन काल में साधकों को ऋषिकल्प, देव मानव एवं सिद्ध पुरुष बनने का अवसर मिला है। ऐसे व्यक्तित्वों में भगवान का स्वरूप प्रत्यक्ष झाँकता है। अतएव भक्त और भगवान की एकता का प्रतिपादन शास्त्रकार सदा से करते रहे हैं।

युग परिवर्तन का श्रीगणेश आस्था क्षेत्र में उत्कृष्टता की प्रतिष्ठापना के साथ होता है। आस्तिकता का ध्येय है—व्यक्तित्व के स्तर को ऊँचा उठाना—आस्था परिवर्तन। उसी स्तर के अनुरूप आकांक्षाएँ उभरती हैं। आकांक्षाएँ विचारणा को दिशा देती हैं, विचारणा के दबाव से शरीर की गतिविधियाँ चलती हैं। गतिविधियों के अनुरूप परिस्थितियाँ बनती हैं। परिस्थिति ही पारिस्थितिकी या पर्यावरण का निर्माण करती है। यह भली–बुरी परिस्थितियाँ ही स्वर्ग–नरक, उत्थान–पतन, विकास–विनाश आदि नामों से निरूपित होती रहती हैं।

पतन को उत्थान में बदलना हो, नरक को स्वर्ग बनाना हो, तो तदनुरूप परिस्थितियाँ बननी चाहिए। परिस्थितियाँ गतिविधियों की परिणति हैं। गतिविधियाँ शरीर की कार्य पद्धति को कहते हैं। शरीर पर मन का परिपूर्ण नियंत्रण है। मनःक्षेत्र का सूत्र संचालन इच्छाएँ करती हैं। इच्छाएँ अंतराल के आस्थापरक स्तर के अनुरूप ही उठती हैं। यही तत्त्व–दर्शन का खुला रहस्य है। जो इसे जानते हैं, वे पत्ते धोने की अपेक्षा जड़ को सींचते हैं। फुंसियों पर दवा लगाने की अपेक्षा रक्त शोधन पर अधिक ध्यान देते हैं, मच्छर मारते फिरने का श्रम करने की अपेक्षा गंदी नाली साफ कर डालने की आवश्यकता अनुभव करते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सामयिक परिस्थितियों और पर्यावरण संतुलन का विवेचन और निराकरण आवश्यक है। उत्थान के साधन भी जुटाए जाने चाहिए, किंतु स्थायी तथा दूरगामी समाधान के लिए लोकमानस को परिष्कृत करना होगा। इस प्रयोजन के लिए आस्तिकता का दर्शन और उपासना का अभ्यास परस्पर मिलकर ऐसी प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं, जिससे अंतराल में जमे कुसंस्कारों का निष्कासन और उत्कृष्टता का अभिवर्धन तो हो ही, साथ में साधना से क्षेत्र के वातावरण में तीर्थों जैसी दिव्यता आ सके। अस्तु, नवयुग का बीजारोपण उपासना की प्रक्रिया को जीवनक्रम में नित्य कर्म की तरह सम्मिलित करने की आवश्यकता पड़ेगी। प्राचीनकाल के देवयुग में भी इस अवलंबन को प्रमुखता प्राप्त थी और अब उस परंपरा को पुनर्जीवित करने के लिए—उपासना के लिए गंभीर लोक-रुचि उत्पन्न करनी पड़ेगी।

सामयिक परिस्थितियों पर दृष्टिपात करने से उनमें भरी हुई विकृतियों और विभीषिकाओं के अनेकानेक रूप दिखाई पड़ते हैं, वे एक-दूसरे से भिन्न भी दिखाई पड़ते हैं, उनके समाधान भी स्थिति के स्वरूप को देखते हुए भिन्न-भिन्न प्रकार के सोचे जाते हैं। प्रत्यक्षवाद के आधार पर समाधान इसी प्रकार संभव दिखाई पड़ता है। शारीरिक दुर्बलता का निवारण, पौष्टिक आहार और रुग्णता का निराकरण चिकित्सा-उपचार से ही संभव प्रतीत होता है, किंतु परोक्ष तक पहुँचने वालों को इस निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि यह सारा बखेड़ा असंयम की दुष्प्रवृत्ति ने उत्पन्न किया है। असंयम के रहते भी पुष्टाई और दवाई की खिलवाड़ तो चलती रह सकती है, पर उनमें दुर्बलता एवं रुग्णता का स्थायी निवारण कदापि संभव न हो सकेगा। तात्कालिक उपचार से जादुई लाभ तो मिल भी सकता है, किंतु स्थिर स्वास्थ्य की अपेक्षा रखने वालों को संयम साधना की जीवन नीति बनाकर चलना होगा। अनैतिकवाद और अध्यात्मवाद के दृष्टिकोण का यह अंतर हर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्षेत्र में समझा जा सकता है। प्रत्यक्ष कितना ही प्रभावी क्यों न हो, आत्यंतिक समाधान परोक्ष के आधार पर ही निकलता है।

मानसिक विक्षोभों से जन-जन को तनावग्रस्त, खिन्न-उद्विग्न, निराश एवं नीरस भारभूत जीवन जीते पाया जाता है। मनोविकारों की प्रबलता से अनुकूलताएँ, प्रतिकूलताएँ बनती हैं। सामान्य परिस्थितियाँ भी विकृत चिंतन के कारण तिल जैसी होते हुए भी ताड़ जितनी भयानक प्रतीत होती हैं। लोग परिस्थितियाँ बदलना चाहते हैं, पर जिस अनुपयुक्त दृष्टिकोण के कारण वे उत्पन्न होती हैं, उसके बदलने की बात तक नहीं सोचते। झरना झरता रहे और बहाव को मेंड़ बाँधकर रोकने में श्रम किया जाता रहे, तो थकान और निराशा के अतिरिक्त और कुछ पल्ले पड़ने वाला नहीं है। स्वस्थता की तरह प्रसन्नता भी आवश्यक है, पर उसे परिष्कृत दृष्टिकोण के मूल्य पर ही खरीदा जा सकता है। शरीर सुख, संयम पर निर्भर है और मानसिक संतोष चिंतन के संतुलन पर। कुल मिलाकर पर्यावरण विक्षोभ के कारण मानव जीवन में निरंतर बढ़ती विकृति का समाधान आस्तिकतापूर्ण आध्यात्मिक जीवन ही है। यह तथ्य भले ही आज न सही हजार वर्ष बाद समझा जाए, किंतु समाधान सही निष्कर्ष पर पहुँचने और सही उपाय अपनाने पर ही संभव हो सकेगा।

आज व्यक्ति और समाज के सामने अगणित समस्याएँ और विभीषिकाएँ मुँह बाँधे खड़ी हैं। उनका निराकरण बुद्धिमानों द्वारा प्रत्यक्ष उपचारों—सामयिक उपायों के आधार पर सोचा जाता है, मस्तिष्क की दौड़ इतनी ही है। विग्रहों को साम, दाम, दंड, भेद जैसे कूटनीतिक उपायों से हल करने का बरताव ही उसने देखा-समझा है। सो उन्हें क्रियान्वित करने में भी कोई कसर नहीं रखी जाती। आर्थिक सुधार के लिए गरीबी हटाओ अभियान के अंतर्गत गृह उद्योगों से लेकर विशालकाय कारखाने लगाने तक का प्रावधान पंचवर्षीय योजना में है। निजी क्षेत्र भी इस संदर्भ में कुछ उठा नहीं रख रहा है, पर कठोर श्रम और मितव्ययिता की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तपश्चर्या का सिद्धांत जन-जीवन में उतर न पाने के कारण बढ़ा हुआ उपार्जन, दुर्व्यसनों की बढ़ोत्तरी तक को पूरा नहीं कर पाता और दरिद्रता तो जहाँ की तहाँ ही बनी रहती है। पर्यावरण को मनुष्य और कुपित कर बैठता है। इस कुचक्र में से निकल सकना अर्थोपार्जन और व्यय व्यवस्था में आदर्शवादी सिद्धांतों का समावेश किए बिना अत्यंतिक समाधान संभव ही नहीं हो सकता। प्राचीन काल में उपार्जन बहुत सीमित था और आज की तुलना में सुविधा-साधन कहीं कम थे, फिर भी यह देश स्वर्ग-संपदाओं का स्वामी और विदेशियों की दृष्टि में सोने की चिड़िया बना हुआ था। गरीबी चाहे आज मिटे, चाहे सौ साल बाद अर्थशास्त्र में आदर्शवादिता का समावेश किए बिना और कोई स्थायी हल नहीं। अमेरिका सबसे ज्यादा समृद्ध होते हुए भी आर्थिक उद्विग्नता का जितना शिकार है, उतना आदिवासी क्षेत्र भी असंतुष्ट दिखाई न पड़ेगा।

परिवारों की स्थिति का यदि सही मूल्यांकन किया जाए, तो घरों का वातावरण सराय से अधिक उपयुक्त न मिलेगा। भेड़ें, बाड़ों में भी रहती हैं और कैदी जेलों में भी। सद्भाव और सहकार के अभाव में होटलों में की जाने वाली चटक-मटक भी कितनी कृत्रिम, कितनी नीरस और कितनी कुरूप, कर्कश लगती है, उसे सभी जानते हैं। आर्थिक अभाव रहते हुए भी परिवारों में स्नेह, सौजन्य के सहारे स्वर्गीय आनंद का रसास्वादन किया जा सकता है, इसके लिए साधनों की जितनी आवश्यकता है, उससे कहीं अधिक सुसंस्कारिता की। यह उपलब्धि बाह्य व्यवस्थाओं के सहारे नहीं, आंतरिक सदाशयता के सहारे ही संभव हो सकती है।

समाज में अनेकानेक मूढ़ मान्यताओं, कुरीतियों, अवांछनीयताओं, अनैतिकताओं की भरमार है। अपराध और भौगोलिक पर्यावरण प्रदूषण दिन-दूने रात-चौगुने बढ़ रहे हैं। सूक्ष्म या वैचारिक पर्यावरण भी कम विकृत नहीं है। व्यक्ति की प्रामाणिकता दिन-दिन घट रही है। सज्जनता का प्रतिपादन तो है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर प्रचलन नहीं। सहकारिता का समर्थन जोरों से होता है और आर्थिक क्षेत्र में उसका लंगड़ा-लूला कलेवर भी बना है, किंतु पारस्परिक व्यवहार में सहकारिता एवं उदारता को खोज निकालना अति कठिन है। आपाधापी की शतरंज का नशा बुरी तरह चढ़ा है। हर कोई एक-दूसरे को मात देने और अपनी गोटी लाल करने में सारी अक्लमंदी निचोड़े दे रहा है। ऐसी दशा में समाज सच्चे अर्थों में समाज कैसे बने और किसी जनसंकुल क्षेत्र को सच्चा राष्ट्र कैसे कहा जाए ?

पूरे पर्यावरण में कलह और विग्रहों के असंख्य क्षेत्र हैं, सबके अपने-अपने कारण हैं। भाषा, प्रांत, धर्म, वर्ग, वर्ण आदि के निहित स्वार्थों को लेकर परस्पर टकराव की इतनी अधिक घटनाएँ होती हैं कि, उनका निराकरण कानून और पुलिस के द्वारा अत्यंत स्वल्प मात्रा में ही निकल पाता है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चलने वाले दांव-पेचों और कुटिल कुचक्रों से शीतयुद्धों की भरमार बढ़ती जा रही है और गरम युद्ध की—अणु-अणुओं से लड़े जाने वाले तृतीय एवं अंतिम युद्ध की संभावनाएँ तेजी से समीप आ रही हैं। घटनाचक्र पर दृष्टिपात करने से महाप्रलय का दिन दूर दिखाई नहीं पड़ता। इस विग्रह से निपटने में तो कानून और पुलिस जैसे अनुबंध भी कुछ काम करते नहीं दीखते।

धर्म और अध्यात्म का उपयोगी कलेवर तो प्राचीन काल से भी अधिक विस्तृत और आकर्षक बन गया है, पर उसमें प्राण का दर्शन भर दुर्लभ हो रहा है। कर्मकांडों के घटाटोप छाए हुए हैं, पर आस्थाओं में उत्कृष्टता भरने वाली प्रक्रिया तो एक प्रकार से विकृत ही होती चली जाती है। धर्म ने मूढ़ता और कट्टरता के कवच कुंडल पहन लिए हैं और अध्यात्म के कल्पना लोक में बिना पंखों की उड़ाने उड़ने जैसे उपक्रम चल रहे हैं। इन क्षेत्रों में धूर्तों और मूर्खों के बीच ऐसी पटरी बैठी है कि, विज्ञजनों को इस कुछ का कुछ हो जाने को देखकर किंकर्तव्यविमूढ़ बना देने वाले असमंजस का अनुभव हो रहा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समस्याओं की यह मोटी झाँकी है, इस स्तर के अगणित कारण हैं, जो व्यक्ति और समाज को सुखी-समुन्नत बनाने वाले सभी प्रयत्नों को व्यर्थ करते-चले जा रहे हैं। इन विग्रहों के रहते आर्थिक, वैज्ञानिक, बौद्धिक उपलब्धियाँ कोई समाधानकारक हल खोजने में अपनी असमर्थता प्रकट कर रही है, इन परिस्थितियों को पीछे मुड़कर देखना होगा और वस्तुस्थिति समझने की गहराई में उतरना होगा। परिस्थितियों का उत्तरदायित्व मनःस्थिति पर लदा हुआ है। मनःस्थिति का भी अपना स्वतंत्र अस्तित्व नहीं। वे आस्थाओं एवं आकांक्षाओं पर निर्धारित हैं। अंतःकरण ही वह क्षेत्र है, जो व्यक्तित्व के स्तर को उठाता-गिरता है। मनुष्य ने स्वयं ही अपना इतिहास सृजा है, वर्तमान की परिस्थितियों के लिए भी वही पूरी तरह उत्तरदायी है। भविष्य को उज्ज्वल या अंधकारमय बना लेना पूरी तरह उसी के हाथ में है। इस तथ्य को स्वीकार करने में असमंजस उन्हीं को हो सकता है, जो व्यक्तित्व के उद्गम स्रोत अंतःकरण की सामर्थ्य से अपरिचित है। मनुष्य को सर्वसमर्थ माना गया है। यह तथ्य पूर्णतः उसके आस्था क्षेत्र के आधार पर, सर्वथा सत्य पाया जा सकता है।

नवयुग में मनुष्य आस्था प्रधान होंगे। वे उत्कृष्टता, आदर्शवादिता और उदात्त भाव संवेदनाओं से भरे पूरे होंगे। प्रश्न एक ही है कि, वर्तमान अनास्था को उदात्त भाव श्रद्धा में परिणत कैसे किया जाए ? इस संदर्भ में उत्तर तो कई दिये जा सकते हैं, पर सबसे प्रामाणिक प्रतिपादन आस्तिकता की भाव श्रद्धा का उन्नयन ही है। यह कार्य उपासना के आधार पर संभव हो सकता है। व्यक्ति-निर्माण का आधारभूत क्षेत्र यही है। यह प्रक्रिया ऐसी है, जिसे उपेक्षित नहीं किया जा सकता। उसे प्रमुखता ही देना होगा। जन-जन को आस्तिक और उपासना प्रिय बनाने के प्रयत्नों में नवयुग की उज्ज्वल संभावनाएँ पूर्णतः समाविष्ट हैं। अस्तु, युग-शिल्पियों को अपने समस्त क्रियाकलापों में इस केंद्र बिंदु को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रधान मानकर चलना होगा। महाकाल वैसी ही प्रेरणा देने और व्यवस्था बनाने में संलग्न भी है।

○ पर्यावरण के सूक्ष्म जगत को साधक बदलेंगे

संसार के सभी महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए एक विशेष योग्यता और शक्ति की आवश्यकता होती है। अनेक व्यक्ति कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य करने की आकांक्षा तो करते हैं, पर उनको करने के लिए जिस क्षमता एवं शक्ति की आवश्यकता है, उसे संपादित नहीं करते, फलस्वरूप उन्हें सफलता से वंचित ही रहना पड़ता है। जिनने भी कोई बड़ा पुरुषार्थ किया है, बड़ी विजय प्राप्त की है, उनने तात्कालिक परिस्थितियों से ही सब कुछ नहीं कर लिया होता, वरन उनकी पूर्व तैयारी ही उस सफलता का मूल कारण रही होती है।

जनमानस को प्रभावित करने वाले पर्यावरण के सूक्ष्म तत्त्वों में परिवर्तन करना, वातावरण में व्याप्त दुष्प्रवृत्तियों को हटाकर उनके स्थान पर सद्प्रवृत्तियों की स्थापना करना अत्यंत ही उच्चकोटि का, अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण कार्य है। उसकी तुलना में और सभी सत्कार्य तुच्छ बैठते हैं। विवेकशील उच्च आत्माएँ समय-समय पर इस आवश्यकता को अनुभव करती हैं और वे लोकमानस में सत्प्रवृत्तियाँ बढ़ाने के लिए प्राणपण से प्रयत्न करती रहती हैं। यह कार्य जितना ही महान है, उतनी महान ही क्षमता और शक्ति भी इसके लिए अपेक्षित होती है। यदि उसका अभाव रहा तो इस प्रकार की कामना और भावना रहते हुए भी कुछ विशेष सफलता नहीं मिलती।

आज का वातावरण बहुत हद तक दूषित हो चला है। उसमें आसुरी तत्व एक बड़ी मात्रा में उत्पन्न हो रहे हैं। अनीति, अन्याय, अधर्म और अकर्म का चारों ओर बोल-बाला है। स्वार्थ, पाप, वासना, तृष्णा, ममता और अहंकार की तूती बोल रही है। एक-दूसरे का शोषण करके, सताकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कटिबद्ध हो रहे हैं। प्रेम की, उदारता, सहृदयता, सेवा और सज्जनता की मात्रा दिन-दिन घटती जा रही है, फलस्वरूप ऐसी घटनाओं की बाढ़ आ रही है, जिनमें चीत्कार एवं हाहाकार की भरमार रहती है। लगता है कि—यह प्रवृत्तियाँ बढ़ती रहीं, तो मानव सभ्यता ही खतरे में पड़ जाएगी। विज्ञान ने मनुष्य के हाथ में विनाश की एक बड़ी शक्ति दे दी है। एटम शक्ति के आधार पर किसी सिरफिरे का एक छोटा-सा पागलपन कुछ ही क्षणों में सारे संसार के लिए तबाही उत्पन्न कर सकता है। ऐसे जमाने में इस बात की अत्यधिक आवश्यकता है कि, लोग सज्जनता और मानवता के आवश्यक गुणों से संपन्न हों अन्यथा विज्ञान से प्राप्त हुई शक्ति के सहारे दुर्गुणों से ग्रसित मानव शोक-संताप के गहन गर्त्त में आसानी से बात की बात में डूब मरने की परिस्थिति पैदा कर लेगा।

इस ओर विवेकशील लोगों का ध्यान गया है। वे लोग सुधार के लिए अपने-अपने ढंग से काम भी कर रहे हैं। प्रवचन और लेखन द्वारा यह कार्य सरल हो सकता है। उस विचार से अनेकों उपदेशक, प्रवचनकर्ता, लेखक, पत्रकार बहुत प्रयत्न कर रहे हैं। अनेक सभा-सोसाइटियाँ इसी उद्देश्य के लिए विविध मनोरंजक आयोजनों की व्यवस्था करती रहती हैं। सरकारें भी इसके लिए सचेष्ट हैं। राजनीतिक कर्णधार जनता को सज्जनता अपनाने की अपीलें करते रहते हैं। उनके प्रचार साधन, रेडियो, चलचित्र, बुलेटिन, विज्ञानी पत्रिकाएँ आदि कार्य भी इसी उद्देश्य के लिए विविध-विध मनोरंजक आयोजनों की व्यवस्था करते रहते हैं, किंतु जब विचारपूर्वक इन सब कार्यों के परिणामों को देखा जाता है, तो भारी निराशा होती है। लगता है कि प्रयत्नों की तुलना में परिणाम की मात्रा नगण्य है। बुराइयाँ जितनी तेजी से बढ़ रही हैं और सुधार के प्रयत्न जिस प्रकार निष्फल से सिद्ध हो रहे हैं, उसे देखते हुए हर विचारशील व्यक्ति के मन में व्यथा होना स्वाभाविक है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह प्रश्न बहुत ही महत्त्वपूर्ण है कि, वातावरण में से दुष्प्रवृत्तियों को हटाकर उनके स्थान पर सत्प्रवृत्तियों को स्थापित करने का वास्तविक उपाय क्या है ? जिससे मनुष्य अन्य प्राणियों तथा प्रकृति के साथ परस्पर पूरकता में रहकर सहयोग, सद्भाव तथा शांति का जीवन जी सके ? इसका उत्तर ढूँढ़ने के लिए हमें इतिहास के पृष्ठ उलटने पड़ेंगे और यह देखना पड़ेगा कि—जिन महापुरुषों ने इस प्रकार के विषम वातावरण में अपने समय में जनमानस को सुधारा था, उनमें क्या विशेषता थी, जिसके कारण वे स्वल्प साधनों से ही चमत्कार उत्पन्न कर सके, जबकि हमारे आज के सुधारक विविध-विधि साधनों से संपन्न होने पर भी कुछ कर नहीं पा रहे हैं।

पूर्व काल में लाखों-करोड़ों वर्षों तक सतयुग की सुख-शांति भरी परिस्थितियाँ इस संसार में बनी रही हैं। इसका कारण एक ही रहा है कि—उस समय के लोकनायक और मार्गदर्शक आत्म शक्ति से संपन्न रहे, केवल वाणी से नहीं, अपनी आंतरिक महानता की किरणें फेंककर समस्त वातावरण को प्रभावित करते रहे। मस्तिष्क की वाणी मस्तिष्क तक पहुँचती है, पर आत्मा की वाणी सर्वत्र फैलती है, क्योंकि आत्मा व्यापक है। कोई सुशिक्षित व्यक्ति अपनी ज्ञान-शक्ति का लाभ सुनने वालों को जानकारी बढ़ाने के लिए दे सकता है, पर अंतःकरण में जमी हुई आस्था में हेरफेर करने का कार्य ज्ञान से नहीं, आत्म शक्ति से ही संपन्न होना संभव हो सकता है। प्राचीन काल के लोकनायक, ऋषि-मुनि इस तथ्य को भलीभाँति जानते थे, इसलिए वे दूसरों को उपदेश देने में, उनकी बाह्य सेवा करने में जितना समय खर्च करते थे, उससे कहीं अधिक प्रयत्न वे अपना आत्मबल बढ़ाने के लिए तप करने में लगाते थे। तप से ही वह आत्म शक्ति प्राप्त होती है, जिसकी सहायता से वातावरण को प्रभावित कर लोगों के मन पर जमे हुए बुराइयों के आकर्षक कुसंस्कारों को हटाकर अच्छाइयों के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी जा सके।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राचीन काल के इतिहास-पुराणों में यह तथ्य बिल्कुल स्पष्ट है। पिछले दो हजार वर्षों में भी इसी आधार पर जन मानस का सुधार एवं परिवर्तन करना संभव होता रहा है। भगवान् बुद्ध के मन में अपने तथा संसार के दुःखों का निवारण करने की आकांक्षा जगी। इसके लिए वे २५ वर्ष की आयु में घर से निकल पड़े और २० साल तक निरंतर विभिन्न स्थानों पर आत्म निर्माण एवं तप साधना में संलग्न रहे। ४१ वर्ष की आयु में उन्होंने अपने अंदर परिपक्वता अनुभव की, तब वातावरण में परिवर्तन और दूसरों को शिक्षा देने के कार्य में हाथ लगाया। भगवान् महावीर ने अपनी आयु का तीन चौथाई भाग तप में और एक चौथाई भाग धर्मोपदेश में लगाया। इन दोनों महापुरुषों ने उपदेश उतने दिए—जितने आज के मामूली उपदेशक दे देते हैं। तब भी उनका प्रभाव पड़ा और आज भी संसार की एक चौथाई जनता उनकी शिक्षाओं पर आस्था रखती है।

जगद्गुरु शंकराचार्य ने उत्तराखंड में जोशीमठ स्थान पर उग्र तप किया था। बत्तीस वर्ष की आयु लेकर आए थे। विद्या पढ़ने के बाद लगभग १२ वर्ष उनके जीवन में काम करने के लिए शेष थे। इनमें से भी आधा समय उनने तप में लगाया और शेष ६-७ वर्षों में ही अपनी आत्म शक्ति के बल पर वैदिक-धर्म के स्थापन दिव्य वातावरण के निर्माण के लिए अत्यंत प्रभावशाली कार्य कर डाला। गुरू नानक की तपश्चर्या प्रसिद्ध है। गुरू गोविंद सिंह ने हिमालय में लोकपत स्थान पर जहाँ घोर तप किया था, वह स्थान आज भी सिख धर्मानुयायियों का तीर्थ बना हुआ है। यदि इन गुरूओं के पास तप की पूँजी न रही होती, तो वे दुर्धर्ष यवन काल में पूरे वातावरण के आसुरी संस्कृति से विषाक्त होने पर भी हिंदू धर्म रक्षा के लिए इतना अद्भुत कार्य कर सकने में कदापि समर्थ न हो सके होते।

समर्थ गुरू रामदास ने छत्रपति शिवाजी सरीखे कितने ही महापुरुष तैयार किये थे। इतिहास के पृष्ठों पर उनमें से अकेले

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिवाजी ही भले चमके हों, पर उन्होंने वातावरण में ऐसा प्रयोग किया था, जिसके फलस्वरूप शिवाजी की तरह के सैकड़ों धर्म सैनिक बनकर तैयार हो गए थे। इस निर्माण में उनकी आत्मा का प्रभाव भी प्रधान रूप से काम करता था। स्वामी दयानंद १६ वर्ष की आयु में घर से निकले और ४२ वर्ष की आयु में अपने आप को धर्म प्रसार के योग्य बना सके। संवत् १६२४ के कुंभ में हरिद्वार में उनने पाखंड खंडिनी पताका फहराई और धर्मोपदेश दिए, पर उनका कुछ विशेष प्रभाव न पड़ा। इसका कारण उनने अपने आत्म बल की न्यूनता समझी और तीन वर्ष के लिए पुनः तप करने उत्तराखंड के अज्ञात स्थानों को चले गए। गंगोत्री के पास कराली की गुफाओं में रहकर उनने तपस्या की और जब अंदर आत्म प्रकाश देखा, तो कार्य क्षेत्र में उतरे। उस समय उनकी वाणी में दैवी तेज था। उसी बल पर वे अकेले ही इतना कार्य कर गए, जितना अनेकों संगठित सभाएँ मिलकर भी आज नहीं कर पा रही हैं।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस ४६ वर्ष की आयु में स्वर्गवासी हुए। ४० वर्ष की आयु तक वे विशुद्ध रूप से साधनारत रहे। एक दिन उन्हें लगा कि—उनके शिष्य आने वाले हैं। एक वर्ष तक वे शिष्यों की प्रतीक्षा करते रहे, फिर ब्रह्मानंद, शिवानंद, विवेकानंद जैसे थोड़े से प्रतिभासंपन्न शिष्य घर बैठे प्राप्त हुए और उन्हीं के सहारे उनकी आत्मा ने संसार को हिंदू संस्कृति का महान् संदेश दिया। स्वामी विवेकानंद का धर्मप्रचार कार्य प्रसिद्ध है, पर उससे पहले उनने भी रामकृष्ण परमहंस के बताए अनुसार कई वर्ष तपश्चर्या करके आत्मा को तपाया था।

योगी अरविंद घोष, महर्षि रमण, स्वामी रामतीर्थ की तपश्चर्या प्रसिद्ध है। वैष्णव आचार्यों में से रामानुजाचार्य, निंबार्काचार्य, माधवाचार्य प्रभृति आचार्यों ने जितना ज्ञान संचय किया था उतनी ही तपसाधना भी की थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संसार के अन्य वे महापुरुष जिनने लोगों को उच्च भूमिका की ओर बढ़ाया निश्चित रूप से तपस्वी थे। महात्मा ईसा के जीवन में २७ वर्ष तपश्चर्या में लगे। मुहम्मद साहब ने २५ वर्ष की आयु में साधना की ओर कदम बढ़ाया। ४० साल तक वे उसी में संलग्न रहे। ६५ वर्ष की आयु में उनने धर्मोपदेश और इस्लाम की स्थापना का कार्य आरंभ किया। यहूदी धर्म के संस्थापक यहोवा और पारसी धर्म के देवदूत जरतुश्त की दीर्घकालीन कठोर तपश्चर्याएँ प्रसिद्ध हैं।

इसी प्रकार संसार में आदि काल से लेकर अब तक एक ही तथ्य समय-समय पर स्पष्ट होता रहा है कि, तपश्चर्या द्वारा आत्म बल संपादित करने वाली आत्माएँ ही संसार का सच्चा मार्गदर्शन करने और जनमानस को शुद्ध करने में समर्थ हो सकती हैं।

आज लोकमानस निम्न में से निम्नस्तर की ओर तेजी से गिरता जा रहा है। उसे सँभालने और सुधारने की नितांत आवश्यकता है, पर यह कार्य आत्म बल से रहित—तपश्चर्या से विहीन व्यक्तियों द्वारा संपन्न नहीं हो सकता, भले ही वे सभा सोसाइटियों के द्वारा भाषणों, लेखों, योजनाओं, प्रदर्शनों के द्वारा इसके लिए सिर तोड़ प्रयत्न करते रहें। यह महान् कार्य महान् आत्माओं के अनेक गुणों में प्रमुख एक तपश्चर्या भी है, जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

अतीत इतिहास के पृष्ठ हमें इसी ओर निर्देश करते हैं। लोकमानस की शुद्धि का महान् भार वाचालों के नहीं—तपस्वियों के कंधे पर रहेगा। युग की आवश्यकता आज ऐसे ही तपस्वियों की प्रतीक्षा कर रही है।

लोकनायकों को चाहिए कि, वे जनता को अपने उच्चस्तरीय कार्यों, आदर्शों व करनी द्वारा प्रेरणा दें। श्रेष्ठ वातावरण बनाने के लिए सृजेता स्तर के तपस्वी ही सच्चा योगदान दे पाएँगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

☆ कठिन समस्याओं के सरल समाधान

भूमि में उर्वरता की समुचित मात्रा हो, तो उस पर खेत—उद्यान आदि की अनेकानेक सुषमा-हरीतिमा उगाई जा सकती है। यदि वह ऊसर हो, नमक उबलता हो, तो फिर घास का एक तिनका तक जमने वाला नहीं है। बालू, ईंट और खारी जमीन पर मकान, कारखाने तक खड़े नहीं किए जा सकते हैं। भूमि से संबंधित कोई भी संपदा उपार्जित करने के लिए भूमि का सही-समतल होना आवश्यक है। रेगिस्तान में, पहाड़ी चट्टानों में, समुद्र के तटवर्ती नमक वाले क्षेत्र में सुविधाएँ मिलना तो दूर, उसके खाई-खंदक सामान्य क्रियाकलाप में भी बाधा उत्पन्न करते हैं।

सुविधा संवर्धन की योजनाएँ बनाने के पूर्व सर्वप्रथम उपयुक्त भूमि का चयन करना पड़ता है। संसार में अगणित प्रकार की सुविधा-संपदाओं का अभिवर्धन आवश्यक होता है, पर उसके लिए उस मानवीय चेतना का स्वस्थ, संतुलित, समुन्नत होना आवश्यक है, जो वैभव उत्पादन के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक है। यदि भूमि पर, साधनों पर आधिपत्य जमाकर बैठे हुए अथवा योजनाएँ बनाने वाले लोग विकृत मस्तिष्क के होंगे, तो वे कुछ बन सकना तो दूर पर्यावरण में विग्रह और ध्वंस के बीज ही बोएँगे, उलझी हुई समस्याओं का समाधान तो उनसे बन ही कैसे पड़ेगा ?

इन दिनों पतन-पराभव का, संकट-विग्रहों का वातावरण बनाकर खड़े हुए अराजकता स्तर के असमंजसों की चर्चा बहुधा की जाती है। इनका निवारण-निराकरण इन्हीं दिनों किया जाना आवश्यक है। देर करने का समय है नहीं, अन्यथा अवसर चूकने पर पछताने के अतिरिक्त और कुछ हाथ लगेगा नहीं। बात इतने पर ही समाप्त नहीं होती। क्षयजन्य रुग्णता को दूर करने को प्राथमिकता तो दी जाती है, पर अगला कदम यही होता है कि,

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रुग्णता से क्षीण-जर्जर काया को सही स्थिति में लाया जाए और जीवनी-शक्ति को इतना बढ़ाया जाए, जिससे दुर्बलता दूर हो सके और स्वस्थ-समर्थ मनुष्य की तरह जीवनयापन कर सकना संभव हो सके।

मस्तिष्क विकृत, हृदय निष्ठुर, रक्त दूषित, पाचन अस्त-व्यस्त हो, शरीर के अंग-प्रत्यंगों में विषाणुओं की भरमार हो और वस्त्राभूषणों की भरमार भी हो, तो भी अगर, चंदन का लेपन और इत्र-फुलेल का मर्दन बेकार है। शस्त्र-सज्जा जुटा देने और तकिए के नीचे स्वर्ण मुद्राओं की पोटली रख देने से कुछ काम न चलेगा। पंच, ग्राम प्रधान, विधायक या प्रतिनिधि चुनाव में विजयी घोषित कर देने से भी प्रसन्नता, प्रफुल्लता का मानस कहाँ बन पाता है ? जबकि स्वस्थ, सुडौल होने के कारण सुंदर दीखने वाला शरीर गरीबी में भी हँसती-हँसाती जिंदगी जी लेता है, आए दिन सामने आती रहने वाली समस्याओं से भी निपट लेता है, प्रतिकूलताओं को अनुकूलताओं में बदल लेता है और किसी न किसी प्रकार, कहीं न कहीं प्रगति के साधन जुटा लेता है। वस्तुतः महत्त्व साधनों या परिस्थितियों का नहीं, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, प्रतिभा और दूरदर्शिता का है। वह सब उपलब्ध रहे, तो फिर न अभावों की शिकायत करनी पड़ेगी और न जिस-तिस प्रकार के व्यवधान सामने आते रहने पर भी अभ्युदय में कोई बाधा पड़ेगी। यही बात इन सब विपन्नताओं के संबंध में है, जो आज हर दिशा में सुरसा जैसा मुँह फाड़े महाविनाश का तुमुलनाद करती है। वे समस्याएँ जो अतिविकट दीखती हैं, यदि दृष्टिकोण सुधरे, तो किसी के भी समाधान में कहीं कोई अड़चन न रहे।

औसत नागरिक स्तर का जीवन स्वीकार कर लेने पर सुविस्तृत खेतों, देहातों में रहा जा सकता है और वायुमंडल, वातावरण को प्रफुल्लता प्रदान करते रहने, संतुष्ट रखने में सहायक हो सकता है। प्राचीनकाल की सुसंस्कृत पीढ़ी इसी प्रकार रहती थी और मात्र हाथों के सहारे बन पड़ने वाले श्रम से जीवन-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यापन के सभी आवश्यक साधन अति सरलतापूर्वक जुटा लेते थे। न प्रदूषण फैलने का कोई प्रश्न था और न शहरों की ओर देहाती प्रतिभा पलायन का कोई संकट। न देहात दरिद्र, सुनसान, पिछड़े रहते थे और न शहर गंदगी, घिचपिच, असामाजिकता के केंद्र बनते थे। आज भी उस पुरातन रीति-नीति को अपनाया जा सके, तो जिन समस्याओं के कारण सर्वत्र त्राहि-त्राहि मची हुई है, उनके उभरने का कोई कारण शेष न रहे। स्थानीय साधनों से बने मकान न केवल सस्ते होते हैं, वरन् हर दृष्टि से सुविधाजनक भी सिद्ध होते हैं। अमीरी बटोरने की हविश ही औद्योगीकरण के लिए उत्तेजित करती है। बड़े कारखाने लगते ही विष उगलते, पानी में जहर मिलाते, अत्यधिक ईंधन खपाते और देहाती उद्योगों का सफाया करके बेकारी, बेरोजगारी का माहौल बनाते हैं। पुरातन देहात प्रधान कुटीर उद्योगों पर निर्भर रीति-नीति को आमूलचूल बदल डालने में मनुष्य का विकृत चिंतन ही एकमात्र कारण है। यदि वह भविष्य में भी इसी प्रकार बना रहा, तो उपरोक्त समस्याओं में से किसी का भी महाविनाश से पूर्व समाधान होने की संभावना नहीं है।

'सादा जीवन-उच्च विचार' का सिद्धांत अपनाते ही प्रस्तुत असंख्य समस्याओं में से एक के भी पैर न टिक सकेंगे। अपराधों की भरमार भी तब क्यों हो, जब हर व्यक्ति ईमानदारी, समझदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी की नीति अपनाकर श्रमशीलता, सभ्यता और सुसंस्कारिता को व्यावहारिक जीवन में स्थान देने लगेगा। गुजारे के लायक इतने साधन इस संसार में मौजूद हैं कि, हर पेट को रोटी, हर तन को कपड़ा, हर सिर को छाया और हर हाथ को काम मिल सके, तब गरीबी-अमीरी की विषमता भी क्यों रहेगी ? जाति-लिंग के नाम पर पनपने वाली विषमता का अनीतिमूलक और दुःखदायी प्रचलन भी क्यों रहेगा ?

मनुष्य स्नेह और सहयोगपूर्वक रहने के लिए पैदा हुआ है। लड़ने, मरने और त्रास देने के लिए नहीं। यदि आपा-धापी न मचे,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तो फिर एकता और समता में बाधा उत्पन्न करने वाली असंख्य कठिनाइयों में से एक का भी कहीं अस्तित्व दृष्टिगोचर न हो। शुद्ध व्यवसाय की बलिवेदी पर जो प्रचुर साधन, प्रबंध, श्रम-कौशल का हनन करना पड़ता है, उसकी फिर क्या आवश्यकता है ?

वातावरण में असंख्यों विकृतियों और व्यक्ति के सामने असंख्य समस्याओं के अंबार खड़े हैं। उनमें से प्रत्येक को अलग-अलग समस्या मानकर, उनके पृथक्-पृथक् समाधान खोजने में, यद्यपि विश्व की मूर्द्धन्य प्रतिभाएँ अपने-अपने ढंग से समाधान खोजने और उपचार खड़े करने के लिए भारी माथा-पच्ची कर रही हैं, पर उनसे कुछ बन नहीं पा रहा है। न अस्पतालों, चिकित्सकों द्वारा भारी धनराशि खर्च कर रोग काबू में आ रहे हैं और न पुलिस, कानून, कचहरी आदि-अपराधों को काबू में कर सकने में समर्थ हो रही हैं। आत्मघाती दुर्व्यसनों के रहते बैंकों से भारी कर्ज व अनुदान बँटने पर भी गरीबी मिट सकेगी नहीं। इसके लिए समस्याओं के मूल में जाना होगा एवं यह सोचना होगा कि—यदि जीवन क्रम अब भी न बदला गया तो सामूहिक आत्मघात सुनिश्चित है। अध्यात्म ही समस्त समस्याओं का एक मात्र समाधान सुझा सकता है। उसके पास ही सारे तालों की वह कुंजी है, जो द्वार खोलकर प्रगति का पथ प्रशस्त कर सके।

❐ ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर्यावरण संतुलन एवं शांतिकुंज की भूमिका

इंद्र के रथ पर चढ़कर भगवान् श्रीराम युद्ध क्षेत्र में ठीक रावण के सम्मुख जा खड़े हुए। उन्होंने सर्वप्रथम विप्र अर्थात् ज्ञानमूर्ति रावण को प्रणाम किया। आशीर्वाद तो दूर—उलटे उसने अपशब्द भी कहे और अपनी वीरता का आप ही बखान भी किया। भगवान् श्रीराम ने कहा—

जनि जल्पना करि सुजसु नासहि
नीति सुनहि करहि क्षमा।
संसार महँ पुरुष त्रिविध
पाटल रसाल पनस समा।
एक सुमन प्रद एक सुमन फल
इक फलइ केवल लागहीं।
एक कहहिं कहहिं करहिं अपर
एक करहिं कहत न बागहीं।।

ऐ रावण ! अपनी प्रशंसा आप नहीं करनी चाहिए, इससे यश क्षीण होता है। नीति कहती है—आत्मप्रशंसक क्षमा के पात्र होते हैं। हे रावण ! इस संसार में तीन प्रकार के लोग होते हैं—एक पलाश वृक्ष की तरह—जो केवल फूल देते हैं, फल नहीं। दूसरे आम की तरह, फूलते भी हैं फलते भी हैं। तीसरे कटहल की तरह अर्थात् फूलते नहीं, केवल फल देते हैं अर्थात् कुछ लोग कहते तो बहुत हैं, पर करते कुछ नहीं। दूसरे कहते भी हैं करते भी हैं। तीसरे कहने से पुण्य क्षय हुआ मानकर कहते नहीं केवल करते हैं।

यह बात तो निकृष्ट और श्रेष्ठ मनुष्यों की पहचान के बारे में कही गई है। पर्यावरण की रक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्यों की पहचान की दृष्टि से भगवान् श्रीराम के कथनानुसार युगनिर्माण योजना, गायत्री परिवार शांतिकुंज की स्थिति तीसरे अर्थात् श्रेष्ठ व्यक्ति की है। शांतिकुंज ने कभी बखान नहीं किया, पर उसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रयत्नों और उपलब्धियों पर पूरी तरह प्रकाश डाला जाए, तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि—जितना कार्य अकेले इस मिशन ने किया है—शायद शेष संसार ने भी इतना कार्य मिलकर नहीं किया होगा।

पिछले २५ वर्षों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करें, तो उसके लिए अखण्ड ज्योति का एक संपूर्ण विशेषांक ही बनाना पड़ेगा। इसलिए यहाँ मात्र १९९१ से अब तक के कर्तृत्व एवं उपलब्धियों का उल्लेख किया जा रहा है। गत २५ वर्षों के न तो संकल्पों का उल्लेख है न व्यक्तिगत प्रयत्नों का।

भारतवर्ष में श्रावणी पर्व मात्र रक्षा बंधन के लिए मनाया जाता है, सामान्य जन इतना भर जानते हैं, पर सत्य यह है कि यह पर्व अनादि काल से जब संसार का इस ओर ध्यान तक नहीं था, तभी से वृक्षारोपण दिवस के रूप में मनाया जाता रहा है। शांतिकुंज ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया। यह पर्व प्रायः अगस्त में पड़ता है। अगस्त से लेकर अक्टूबर तक का समय वृक्षारोपण के लिए अत्यंत उपयुक्त काल होता है। अतएव पाक्षिक तथा मिशन से निकलने वाली मासिक पत्रिकाओं के जुलाई अंक में प्रतिवर्ष नियमित रूप से सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाने के संपादकीय प्रकाशित किए जाते हैं और इस अवधि में संपूर्ण अखिल विश्व गायत्री परिवार इस कार्य में लग पड़ता है। अब तक करोड़ों की संख्या में पौधे लगाए गए हैं। उसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

गायत्री परिवार ट्रस्ट खरगोन ने १९९१ अक्टूबर में ग्राम इच्छापुर में अपना अष्टम् वृक्षारोपण सप्ताह संपन्न किया। इन समारोहों में समूचे जिले के गायत्री परिवार परिजन किसी एक गाँव या क्षेत्र में सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम संपन्न करते हैं। पहले या बाद में विधिवत् समारोह मनाया जाता है, जिसमें जिले के अधिकांश सभी प्रमुख प्रशासनिक अधिकारी भाग लेते हैं, फिर रंग-बिरंगे परिधानों और गाजे-बाजे के साथ यह कार्यक्रम प्रारंभ होता है। इस वर्ष इस जिले की बीस गायत्री परिवार शाखाओं ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गंगा वृक्ष रैलियों का आयोजन कर ३७४ गाँवों में १८००० वृक्ष वितरित किए गए तथा आदिवासी प्रधान २७ गाँवों में हरे वृक्ष न काटने देने के लिए हरित सेनाएँ गठित की गईं। १८९ गाँवों में २७००० घरों में तुलसी के पौधे भी लगाए गए। स्मरणीय है कि वायुमंडल को शुद्ध रखने में तुलसी का सर्वाधिक महत्त्व माना गया है।

समारोह में स्थानीय जिलाध्यक्ष, प्रवर पुलिस अधीक्षक, वरिष्ठ पत्रकारों ने भाग लिया और देखा कि पिछले वर्षों में लगाए गए ३०२५० वृक्षों में से ९५ प्रतिशत वृक्ष जीवित हैं, बढ़ रहे हैं। वनीकरण कार्यों के लिए जिला प्रशासन ने वर्ष १९९० का जिलास्तरीय प्रथम पुरस्कार गायत्री परिवार ट्रस्ट खरगोन को दिया। अक्टूबर १९९२ में सात एकड़ शासकीय भूमि पर ५५०० पौधे लगाए गए। आदिवासियों ने खेतों की मेड़ों पर एक हजार वृक्ष लगाए। उन्हें 'वृक्ष मित्र' प्रशस्ति पत्र दिए गए।

१९९३ में १०८ गाँवों में वन चेतना रैली निकाली गई। १३८ आदिवासियों ने मेड़ों पर १०–१० वृक्ष लगाए। इसके अतिरिक्त ५००० अन्य वृक्ष लगाए गए। "पेड़ लगे हर घर–उद्यान, वृक्षारोपण यज्ञ महान"—यह वाक्य इस क्षेत्र के हर घर की दीवार पर लिखा मिलेगा।

जुलाई १९९४ में यहाँ का वानिकी कार्यक्रम देखने के लिए विश्व बैंक ने वाशिंगटन अमेरिका के इयान हिल्स, ब्रिटेन के डिमोर्ट शिल्ड, रोम की सुश्री डि लिग्नो तथा दिल्ली के प्रवीर गुहाया कुल को भेजा। कलेक्टर खरगोन श्री राजकिशोर स्वेन ने गायत्री परिवार खरगोन को 'इंदिरा प्रियदर्शिनी वृक्ष मित्र पुरस्कार' देने के लिए राष्ट्रीय वनीकरण और पारिस्थितिकी विकास बोर्ड दिल्ली को संस्तुति पत्र भेजा। यहाँ ५८.३ हैक्टेयर भूमि पर ५०७०० से अधिक वृक्ष लगाए गए हैं। इसके अतिरिक्त गायत्री परिवार मेहरजा द्वारा ३३ एकड़ भूमि में पाँच हजार पौधे लगाए गए। जैन तीर्थस्थल की ६ एकड़ भूमि में २००० नीम के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वृक्ष लगाए गए। इससे उस क्षेत्र की जलवायु आमूलचूल बदल गई है।

सितंबर १९९४ में गायत्री परिवार तलेगाँव मोहना (अमरावती) ने जिले भर में पाँच हजार वृक्ष लगाए। इसमें सर्वाधिक परिश्रम के लिए गायत्री परिवार परिजन, भास्कर मोहोड़ को महाराष्ट्र सरकार का 'वनराई पुरस्कार' प्रदान किया गया। इसी अवधि में सीधी (म० प्र०) के एक बालक ने अकेले ही ६० वृक्ष यूकेलिप्टस, ३० वृक्ष नीम, ३० आम के लगाए। दुलना प्रज्ञामंडल द्वारा १०८ वृक्षों का आरोपण किया गया। कासगंज (उ. प्र.) में १००८ घरों में तुलसी के पौधे घर-घर जाकर लगवाए गए। जिन घरों में पौधे लगाए गए, उन्हें प्रति परिवार पाँच नए घरों को पौध वितरण के संकल्प भी साथ ही कराए गए। गायत्री शक्तिपीठ सक्ती (बिलासपुर) म० प्र० के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं ने समूचे सक्ती ब्लॉक में ११०० वृक्ष लगाए।

गायत्री परिवार राउरकेला प्रखंड में परमपूज्य गुरुदेव, वंदनीया माताजी की स्मृति में २४ स्मृति वाटिकाएँ लगाने का संकल्प किया। १९९५ तक १२ स्मृति वाटिकाएँ स्थापित कर दी गईं। प्रत्येक स्मृतिवाटिका में न्यूनतम १३२ छायादार वृक्ष लगाए गए। इन आयोजनों में यहाँ के सरकारी पदाधिकारी भी बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए। फतेहपुर (उ. प्र.) के जेल अधीक्षक श्री आर० के० त्रिपाठी गायत्री परिवार के कार्यक्रमों में भावनापूर्वक भाग लेते हैं। वर्ष १९९४ में उन्होंने एक हजार वृक्षारोपण का लक्ष्य रखा था, जिसमें से २९९ वृक्ष जेल परिसर व समीपवर्ती क्षेत्र में लगाए गए।

सितंबर १९९५ में बुलंदशहर (उ प्र.) अश्वमेध के अनुयाज कार्यक्रमों के अंतर्गत जी० टी० रोड के किनारे-किनारे ५९ किलोमीटर तक वृक्षारोपण किया गया, जिसमें गायत्री परिवार परिजनों का वहाँ के प्रशासनिक अधिकारियों, आयकर आयुक्त, न्यायाधीशों तथा डी० ए० ओ० आदि ने उत्साह संवर्द्धन और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सम्मानित किया। ३०० कॉलेज के बालकों ने भी इस कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

राजस्थान के हल्दीघाटी अश्वमेध यज्ञ से प्रभावित वहाँ के तत्कालीन जिलाधीश तथा जिला प्रमुख, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, उपवन संरक्षक ने समूचे यज्ञ स्थल को स्मृति उपवन के रूप में परिवर्तित करने की घोषणा की। सभी सरकारी विभागों को पौधों के संरक्षण का भी दायित्व वितरित किया गया। गाजीपुर उत्तर प्रदेश के राजकीय होमियोपैथी चिकित्सालय परिसर में एक हजार वृक्ष लगाए गए। राहतपुर (इटावा) के गायत्री परिवार ने दस हजार तुलसी के पौधे लगाने का महायज्ञ पूर्ण किया।

फरवरी १९९६ में गायत्री शक्तिपीठ आँवलखेड़ा में आँवला, जामुन तथा बेल के २०० वृक्ष लगाए गए। चडरा (सीतापुर) में २४०० वृक्ष लगाने का कीर्तिमान १९९६ में ही पूरा किया गया। कानपुर तथा जोधपुर में इस वर्ष सघन वृक्षारोपण किए। जयंत, सीधी में विशेष रूप से पेंडुला अशोक लगाए गए। महोली सीतापुर में २४०० वृक्ष तथा हरदोई गायत्री परिवार ने ५०१ वृक्ष लगाए। विलासपुर (म० प्र०) में आम तथा नीबू के दो-दो सौ वृक्ष लगाए। शाही बाग अहमदाबाद गायत्री शक्तिपीठ कार्यकर्ताओं ने एक सघन अभियान के अंतर्गत पर्यावरण पखवारा मनाया, १५०० फलदार वृक्ष तथा २४०० पौधे तुलसी के लगाए गए। इस समूचे कार्यक्रम को अहमदाबाद दूरदर्शन द्वारा प्रसारित किया गया।

यह तो कुछ स्फुट समाचार भर हैं, जिनसे अखिल भारतीय गायत्री परिवार द्वारा पर्यावरण क्षेत्र की जागरूक सेवाओं का अनुमान किया जा सकता है। परमपूज्य गुरुदेव इससे भी आगे बढ़कर यज्ञों को पर्यावरण संतुलन का सर्वोपरि आधार मानते थे। इसी कारण उन्होंने गायत्री उपासना के साथ सघन यज्ञायोजनों का आंदोलन भी चलाया। गाँव-गाँव, गली-गली यज्ञ हुए, इससे पर्यावरण में कितना सुधार हुआ होगा, इसकी कल्पना दो वर्ष पूर्व सूरत में अचानक फैली प्लेग की तरह की महामारी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से लगाया जा सकता है। उस समय सूरत में अकेला गायत्री परिवार था, जिसने घूम-घूमकर मुहल्ले-मुहल्ले एक-एक दिन में बीस-बीस यज्ञ तक संपन्न कराए। इन यज्ञों में औषधियुक्त हवन सामग्री प्रयुक्त की गई। समाचार पत्रों में यह खबरें विस्तार से छपीं, तो दिल्ली में भी घर-घर लोगों ने अपने-अपने बचाव के लिए हवन किए।

गुना अश्वमेध यज्ञ में वहाँ के कृषि उपसंचालक ने विभिन्न आँकड़े एकत्रित कर यज्ञों को कृषि के लिए उपयोगी प्रतिपादित किया। गोरखपुर यज्ञ में वहाँ के वैज्ञानिकों ने उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से बड़े-बड़े उपकरण लेकर पर्यावरण का अध्ययन किया और चौंकाने वाले निष्कर्ष इस प्रकार निकाले—

१ वैज्ञानिक जिन्होंने प्रयोग किए—डॉ० मनोज गर्ग डाइरेक्टर एनविरानमेंटल एंड टेक्निकल कन्सल्टेंट्स।

२. स्थान-यज्ञशाला से, २० मीटर दूरी पर पूर्व की ओर।

३. प्रयोग की विधि-हाई वैल्यूम सैंपलर एनविरोटैक ए० पी० एम० ४५।

४. हवा के निष्कर्ष प्रति १०० मिलीग्राम तथा पानी के प्रति १०० मिलीमीटर।

गैस **अवधि**	**सल्फर** **डाइऑक्साइड**	**नाइट्रस** **ऑक्साइड**
यज्ञ से पूर्व	३.३६	१.१६
यज्ञ की अवधि में	२.८२	१.१४
यज्ञ के पश्चात्	०.८०	१.०२
पानी में बैक्टीरिया		
यज्ञ से पूर्व	४५००	
यज्ञ की अवधि में	२४७०	
यज्ञ के पश्चात्	१२५०	

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन आँकड़ों के आधार पर वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाले और अखबारों में प्रकाशित किए कि, यज्ञ कैंसर जैसी जानलेवा और प्रदूषणजन्य, कष्टप्रद बीमारियों को भी रोकने में समर्थ हो सकते हैं। इसी प्रमाणपत्र में जो हमें उपलब्ध कराया गया बताया है कि, विभिन्न यज्ञकुंडों से प्राप्त यज्ञभस्म (ASH) का लैब-विश्लेषण करने पर निम्न खनिज पाए गए—

१. फास्फोरस	४०७६ मि० ग्रा०/कि० ग्रा०
२. पौटेशियम	३४०७ मि० ग्रा०/कि० ग्रा०
३. कैल्शियम	७८२२ मि० ग्रा०/कि० ग्रा०
४. मैगनीसियम	६४२४ मि० ग्रा०/कि० ग्रा०
५. नाइट्रोजन	३२ मि० ग्रा० /कि० ग्रा०

६. क्वाइस्पार २ % WW

इससे स्पष्ट है कि, यज्ञों से पृथ्वी की उर्वरा शक्ति को भी बढ़ाया जा सकता है। उपसंचालक कृषि गुना (म० प्र०) ने गुना यज्ञ के पश्चात् इस आशय की एक रिपोर्ट पिछले और यज्ञ के समय की कृषि उपज आँकड़ों के साथ दी।

परमपूज्य गुरुदेव कहते थे, पर्यावरण में भरते जा रहे प्रदूषण की दिन-रात सफाई की जाए। इसके स्थान पर उसे इतना शक्तिशाली बनाया जाना चाहिए कि, प्रकृति में सफाई की स्वसंचालित प्रक्रिया अपने आप चलती रहे। इसके लिए परम पूज्य गुरुदेव कहते थे, वनौषधियों—जिसमें तुलसी, ज्योतिष्मती, निर्गुंडी, पोदीना, पुनर्नवा, अश्वगंधा, चिरायता तथा देववृक्ष पीपल, गूलर, बरगद, आँवला, आम आदि वृक्षों का व्यापक वृक्षारोपण अभियान चलाना चाहिए। सीता अशोक ध्वनि प्रदूषण रोकने में बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक वर्ष पूज्य गुरुदेव ने इसी का आंदोलन चलाया। तुलसी जैसे पौधों से निकलने वाली गंध वातावरण को बहुत शक्ति देती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शतपथ ब्राह्मण में अश्वमेध यज्ञों की इष्टियों पर प्रकाश डालते हुए लिखा है—

एष वै दीर्घो नाम यज्ञः। यत्रैतेन यज्ञेन यजंतऽआ दीर्घारण्यं जायते।। —शतपथ १३/३/७/१०

अर्थात्—इस यज्ञ का एक नाम 'दीर्घ' है। जहाँ इस यज्ञ का अनुष्ठान होता है, वहाँ पुण्य वन संपदा (उपरोक्त ओषधियों और देववृक्षों की बहुतायत सहित) की वृद्धि होती है।

शांतिकुंज ऐसे २७ अश्वमेध संपन्न कर चुका है। पर्यावरण संतुलन में इसके योगदान का इतने से सहज अनुमान किया जा सकता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उठाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्वल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्वल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org